श्री विष्णु सहस्त्रनाम, श्री विष्णुसूक्त एवं श्री मित्रावरुणसूक्त स्तुति हिंदी काव्य

(भावार्थ सहित)

कवि

डॉ यतेंद्र शर्मा

आधार

मूल संस्कृत ग्रन्थ महर्षि भगवान् वेद व्यास रचित

श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् एवं महर्षि दीर्घतमस रचित सूक्त

श्री राम कथा संस्थान पर्थ, ऑस्ट्रेलिया – ६०२५

श्री विष्णु सहस्त्रनाम, श्री विष्णुसूक्त एवं श्री मित्रावरुणसूक्त स्तुति हिंदी काव्य

(भावार्थ सहित)

कवि

डॉ यतेंद्र शर्मा

आधार

मूल संस्कृत ग्रन्थ महर्षि भगवान् वेद व्यास रचित श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् एवं महर्षि दीर्घतमस रचित सूक्त

प्रकाशक

श्री राम कथा संस्थान

३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज़, पर्थ

ऑस्ट्रेलिया – ६०२५

Website: https://shriramkatha.org

Email: srkperth@outlook.com

अस्वीकरण

इस काव्य पुस्तक की सामग्री जनहित एवं सामान्य ज्ञान के लिए प्रदान की गई है। हमारा तद्भाव पाठक को कोई परामर्श देने का नहीं है। इस काव्य पुस्तक की सामग्री किसी भी तरह से विशिष्ट परामर्श का विकल्प नहीं है। आपको इस ज्ञान के आधार पर कोई भी निर्णय लेने से पहले प्रासंगिक निपुण या विशेषज्ञ का परामर्श प्राप्त कर लेना चाहिए।

इस काव्य पुस्तक के रचयिता, प्रकाशक और उनका कोई प्रतिनिधि किसी भी विषय में इस काव्य पुस्तक से सम्बंधित कोई प्रत्याभूति नहीं लेते। इस काव्य पुस्तक का पठन-पाठन-गायन-श्रवण पाठक स्वयं के संज्ञान से दायित्व ले कर ही करें।

यद्यपि हमने इस काव्य पुस्तक में सटीक ज्ञान देने का पूर्ण प्रयास किया है लेकिन किसी भी प्रकार कोई त्रुटि अथवा अकृता रह गई हो तो उसके लिए रचयिता एवं प्रकाशक क्षमा प्रार्थी हैं और इसके परिणाम स्वरूप किसी विधि, सामाजिक, धार्मिक, इत्यादि का दायित्व नहीं लेते।

क्रमांक

अस्वीकरण 3
प्रार्थना 5
श्री विष्णु स्तुति - सहस्त्रनाम हिंदी काव्य 10
स्तुति 10
धर्मराज युधिष्ठिर एवं पितामह भीष्म संवाद 11
अथ श्री विष्णु स्तुति - सहस्त्रनाम हिंदी काव्य 14
अथ श्री विष्णुसूक्तम् 100
अथ श्री मित्रावरुणसूक्तम् 105

प्रार्थना

भगवान् के अनन्य भक्त पितामह श्री भीष्म पितामह ने धर्मराज युधिष्ठिर को कलियुग में अल्प प्रयास से सुख शांति एवं समृद्धि प्राप्त करने का साधन भगवान् विष्णु के सहस्त्र नामों का जपन करना बताया है, जिसको महर्षि वेद व्यास ने संस्कृत के श्लोकों में 'श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्' नाम से लिपिबद्ध किया है। इसके महात्मय एवं जपने से चमत्कारिक शक्तियों द्वारा जन कल्याण कोई नया विषय नहीं है। अनगनित ग्रन्थ एवं ऋषियों ने भी इसके महात्मय के बारे में वर्णन किया है। संस्कृत लिपिवद्ध होने से उच्चारण में जन साधारण को कठिनाईओं का सामना करना पड़ता है। इस हिंदी काव्य के द्वारा मूल ग्रन्थ के भगवान् विष्णु के सहस्त्र नामों को यथाचित रखते हुए हिंदी काव्य में भगवान् विष्णु के सहस्त्र नामों का भावार्थ समझाने का प्रयास किया है। कविता रूप में पाठ करने से स्वर उच्चारण पर अति आनंद आता है तथा गायन तरंगों द्वारा भगवान् के प्रति आकर्षण बढ़ता है।

आप सभी जानते हैं कि जब कलियुग का आगमन हुआ तो भारतवर्ष में सत्य धर्म पालनहार, धर्म के अनुयायी एवं न्याय प्रिय सम्राट शिरोमणी परीक्षित का शासन था। अब काल का चक्र देखिये। एक घटना ने सब कुछ बदल दिया। महाराज परीक्षित एक दिन आखेट करने निकले। उन्होंने उस दिन स्वर्ण मुकुट धारण किया हुआ था। उन्होंने स्वयं ही कलियुग को स्वर्ण में निवास करने की अनुमति दे रखी थी। कलियुग उसमें घुस गया और उसने सम्राट शिरोमणी परीक्षित की बुद्धि पलट दी।

आखेट करते हुए सम्राट शिरोमणी परीक्षित ने एक हिरन के पीछे अपना घोड़ा लगा दिया। बहुत दूर तक पीछा करने पर भी वह हिरन न मिला। थकावट के कारण उन्हें भूख और प्यास लग रही थी। एक मुनि आश्रम दिखाई दिया। यह एक वृद्ध मुनि महर्षि शमीक जी का आश्रम था। महर्षि ध्यान में मग्न थे। सम्राट ने ध्यानमग्न सम्राट से जल माँगा। ध्यानमग्न मुनि को सम्राट शिरोमणी परीक्षित का स्वर सुनाई ही नहीं दिया। कलि के प्रभाव से सम्राट की बुद्धि भ्रमित हो चुकी थी। थके और प्यासे सम्राट परीक्षित को मुनि के इस व्यवहार पर बड़ा क्रोध आया। कलि के प्रभाव से सम्राट परीक्षित ने सोचा कि मुनि ने घमंड के कारण हमारा तिरस्कार किया है। इस अपराध का उन्हें कुछ दंड देना अवश्य चाहिए। पास ही एक मरा हुआ साँप पड़ा था। सम्राट परीक्षित ने कमान की नोक से उसे उठाकर मुनि के गले में डाल दिया और अपनी राह ली। मुनि

के श्रृंगी नाम के एक महातेजस्वी पुत्र थे। वह स्नान ध्यानादि करने पास की नदी में गए हुए थे। जब आश्रम लौटे तो पिता के गले में मृतक सर्प देख क्रोध में आ गए। कोपशील महर्षि श्रृंगी पिता के इस अपमान को सहन नहीं कर पाए और उन्होंने कमंडल से जल लेकर (संकल्प कर) श्राप दिया कि जिस पापात्मा ने मेरे पिता के गले में मृत सर्प की माला पहनाई है, आज से सात दिन के अंदर तक्षक नाम का सर्प उसे डस लेगा। पिता के ध्यानावस्था से वापस आने पर पुत्र महर्षि श्रंगी ने उपर्युक्त उग्र श्राप सम्राट शिरोमणी परीक्षित को देने की बात कही। महर्षि को पुत्र के अविवेक पर दुःख हुआ। उन्होंने एक शिष्य द्वारा सम्राट परीक्षित को श्राप का समाचार कहला भेजा। सम्राट परीक्षित ने ऋषि के श्राप को अटल समझकर अपने पुत्र युवराज जनमेजय को राजगद्दी पर बिठा दिया और सब प्रकार से मरने के लिये तैयार होकर अनशन व्रत करते हुए महर्षि श्री शुकदेव से श्रीमद्भागवत की कथा सुनी। सातवें दिन सर्पराज तक्षक ने आकर उन्हें डस लिया। विष की भयंकर ज्वाला से उनका शरीर भस्म हो गया।

सम्राट परीक्षित की मृत्यु के बाद कलियुग को रोक टोक करने वाला कोई न रहा और वह उसी दिन से अकंटक भाव से शासन करने लगा।

सम्राट जनमेजय इस प्रकरण से बहुत आहत हुए। उन्होंने सारे सर्पवंश का समूल नाश करने का निश्चय किया। इसी उद्देश्य से उन्होंने सर्प सत्र (सर्प यज्ञ) के आयोजन का निश्चय किया। यह यज्ञ इतना भयंकर था कि विश्व के सारे सर्पों का महाविनाश होने लगा। उस समय एक बाल ऋषि अस्तिक उस यज्ञ परिसर में आए। उनकी माता मानसा एक नाग थीं तथा उनके पिता एक ब्राह्मण थे। बाल ऋषि अस्तिक के आग्रह पर सम्राट जनमेजय ने सर्प सत्र (सर्प यज्ञ) तो समाप्त कर दिया परन्तु उनसे एक निवेदन किया। सम्राट जनमेजय बोले, 'हे बाल ऋषिवर, कलि के कारण मेरे पिता की बुद्धि भ्रम हुई क्योंकि उन्होंने स्वर्ण मुकुट धारण किया हुआ था। महर्षि कश्यप, जो मेरे पिता को बचा सकते थे, लोभ वश कलि द्वारा धन देने पर धन की प्राप्ति होने पर पिता को बचाने नहीं आए। अब सांसारिक व्यक्तियों के पास स्वर्ण भी होगा ही। लोभ से भी बचना असंभव। अतः कलि से कैसे रक्षा की जा सकती है?’

तब बाल ऋषि अस्तिक ने अपने गुरु एवं महर्षि वेद व्यास के परम शिष्य महर्षि वैशम्पायन जी का आवाहन किया। महर्षि वैशम्पायन तब वहां पधारे।

महर्षि वैशम्पायन ने तब अपने गुरु महर्षि भगवान् वेद व्यास रचित श्री'विष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्' का उल्लेख करते हुए वरदान दिया कि जो भी नर नारी 'श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्' का जाप करेंगे उनके गृह में कलि का वास नहीं होगा। 'श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्' का पाठ करने वाले व्यक्ति को यश, सुख, ऐश्वर्य, संपन्नता, सफलता, आरोग्य एवं सौभाग्य प्राप्त होगा, तथा उनकी सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी।

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्र मूर्तये, सहस्त्रपादाक्षि शिरोरु बाहवे ।
सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्त्रकोटि युग धारिणे नमः ।।

यह ग्रन्थ सबके लिए अत्यंत उपयोगी है। भगवान् से आप सब के लिए सुख शांति और समृद्धि की याचना के साथ यह काव्य प्रस्तुत है। इस काव्य में ३६५ चौपाइयां हैं। अगर एक चौपाई का भी हृदय से प्रतिदिन गायन किया जाए तो एक वर्ष में सम्पूर्ण काव्य पढ़ा जा सकता है एवं भगवान का आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है।

श्री विष्णु सूक्त एवं श्री मित्रावरुण सूक्त के मूल संस्कृत श्लोकों में रचियता महर्षि दीर्घतमस है। महर्षि दीर्घतमस का सीधा सम्बन्ध ब्रह्मदेव की वंशावली से है। वह ब्रह्मपुत्र महर्षि अंगीरस के पौत्र एवं महर्षि उतथ्य के पुत्र हैं। महर्षि दीर्घतमस के दादाश्री महर्षि अंगीरस ब्रह्मदेव के तृतीय मानस पुत्र माने जाते हैं। वह सप्त-ऋषिओं में से एक महान महर्षि हैं जिनको प्रथम मन्त्रद्रष्टा के रूप में भी जाना जाता है। महर्षि उतथ्य 'उतथ्य गीत' के रचयिता हैं तथा दर्शन शास्त्र के विशेषज्ञ के रूप में जाने जाते हैं।

महर्षि दीर्घतमस, जिन्हें महर्षि रहुगन के नाम से भी जाना जाता है, जन्म से अंधे होते हुए भी महाज्ञानी महर्षि हैं। वह खगोल शास्त्र के विशेष ज्ञाता हैं। इन्होने ऋग्वेद के छठे अध्याय की रचना की है। महर्षि दीर्घतमस ने सहस्रों वर्ष पूर्व राशि चक्र के ३६० अंश में होने का प्रमाण दिया। महर्षि दीर्घतमस ने 'ईष्यावामनष्य' सूत्र की रचना की। 'एकम सदविप्रा बहुदा वदमाती' का प्रथम ज्ञान महर्षि दीर्घतमस ने ही दिया जिसने एक-ईश्वरवाद एवं बहु-ईश्वरवाद को भली भांति समझाया तथा बतलाया कि यह दोनों एक ही हैं। महर्षि दीर्घतमस ने अपनी पारिवारिक परम्परा को रखते हुए ऋग्वेद के कई श्लोकों की रचना भी की। महर्षि दीर्घतमस भारत वर्ष के जन्मदाता महाराज

भरत (सम्राट दुष्यंत एवं साम्राज्ञी शकुंतला के पुत्र) के मार्ग दर्शक गुरु एवं राज-पुरोहित थे। उन्हीं के निर्देश पर आर्यावृत देश का नाम भारत पड़ा। महर्षि दीर्घतमस की धर्मपत्नी का नाम प्रदवेश था। इनके पुत्र महर्षि गौतम हुए।

महर्षि दीर्घतमस ने सम्राट भरत के राज-पुरोहित होते हुए सामाजिक कानूनों की व्यवस्था की। उनमें से एक महत्वपूर्ण कानून था, महर्षि मनु द्वारा रचित विवाह संस्कार एवं स्त्रियों के अधिकार का नियम लागू करना।

महर्षि दीर्घतमस ने अनेक ग्रंथों एवं सूक्तों की रचना की। श्री विष्णुसूक्त एवं मित्रावरुण सूक्त इन्हीं की देन है।

भगवान् महर्षि वेद व्यास जी ने स्पष्ट कहा है कि जो भी प्राणी वर्ष में एक बार भी 'श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्' एवं नियमित रूप से' श्री विष्णुसूक्त' एवं 'श्री मित्रावरुणसूक्त' का जाप करेंगे उनके गृह में कलि का वास कभी नहीं होगा। 'श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्', 'श्री विष्णुसूक्त' एवं श्री' मित्रावरुणसूक्त' का पाठ करने वाले व्यक्ति को यश, सुख, ऐश्वर्य, संपन्नता, सफलता, आरोग्य एवं सौभाग्य प्राप्त होगा तथा उनकी सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी।

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्र मूर्तये, सहस्त्रपादाक्षि शिरोरु बाहवे ।
सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्त्रकोटि युग धारिणे नमः ।।

'श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्', 'श्री विष्णुसूक्त' एवं 'श्री मित्रावरुणसूक्त' कठिन संस्कृत भाषा में रचित महान ग्रन्थ हैं। सामान्य व्यक्तियों को इनके उच्चारण में अत्यंत कठिनाई होती है। गुरुदेव की आज्ञा से मैंने इनका हिंदी काव्यानुवाद किया था। यह हिंदी काव्यानुवाद अत्यंत प्रचिलित ग्रन्थ बन गया है। भगवान् से आप सब के लिए सुख शांति और समृद्धि की याचना के साथ यह काव्य प्रस्तुत है।

मैं कोई संस्कृत का ज्ञानी पंडित नहीं हूँ, अतः शब्दार्थ अथवा शब्द-विन्यास में कोई त्रुटि हो गई हो तो मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। मेरा उद्देश्य साहित्यिक न होकर भक्ति पूर्ण भावना से प्रेरित है।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

हरि विष्णु से आप सब के स्वास्थ्य, ऐश्वर्य, धन-धान्य, यश, ईश-प्रेम एवं प्रभु कृपा की कामना करते हुए, प्रभु के चरणों में आपका अपना,

डॉ यतेंद्र शर्मा

श्री राम कथा संस्थान
ऑस्ट्रेलिया - ६०२५

श्री विष्णु स्तुति - सहस्त्रनाम हिंदी काव्य

मूल संस्कृत ग्रन्थ श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् पर आधारित
(भावार्थ सहित)

स्तुति

वन्दे श्री कृष्णचन्द्रम् श्री सच्चिदानंद स्वरूपं ।
बुद्धि प्रदायणं सद्गुरुम, सर्वकार्य सम्पूर्णम् ।।(१)

भावार्थ: *सच्चिदानंद स्वरूप, सुबुद्धि दायक, सद्गुरु एवं सर्व शुभ कार्य सम्पूर्ण करने वाले भगवान् श्री कृष्ण की मैं वन्दना करता हूँ।*

वन्दे कृष्णद्वैपायनम, जनकल्याण हेतु तत्परं ।
वेद रुपीकमलसूर्यम् शमादिक आश्रयदातम् ।।(२)

भावार्थ: *जनकल्याण हेतु सदैव तत्पर कमल एवं सूर्य रूपी वेद के दाता, शांति प्रदायक भगवान् महर्षि श्री वेद व्यास जी को मैं नमन करता हूँ।*

वन्दे सहस्त्र मुख च नेत्रं सहस्त्रनाम पुरुषोत्तम ।
आदि अनंत न ज्ञानम् हृदय शांति प्रदायनं ।।(३)

भावार्थ: *सहस्त्र मुख, सहस्त्र नेत्र एवं सहस्त्र नाम वाले पुरुषोत्तम भगवान् श्री राम की मैं वन्दना करता हूँ, जिनका ज्ञानी भी 'आदि और अंत' पाने में असमर्थ हैं, तथा जिनके स्मरण मात्र से हृदय को शान्ति प्रदान होती है।*

धर्मराज युधिष्ठिर एवं पितामह भीष्म संवांद

धर्मराज सोचें यह एक बार । केहि विधि तरें जन संसार ।।
सुना न कोई ऐसा विचार । है जो जग अघ तारणहार ।।(४)

भावार्थ: *धर्मराज युधिष्ठिर ने एक बार ऐसा सोचा कि प्राणी (भव) सागर से कैसे तर जाएं? ऐसा कोई विचार (उपदेश) नहीं सुना जो संसार के पापों का तारणहार हो। (पौराणिक कथाओं के अनुसार यह उस समय की घटना है जब पितामह भीष्म महाभारत युद्ध में बाणों की शैया पर अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे।)*

गयउ समीप भीष्म अति पावन । किये बहु भांति उनका पूजन ।।
तात कहो तुम धर्म नित्यन । हों साधक सुफल सुखी सम्पन्न ।।(५)

भावार्थ: *तब वह पवित्र (पितामह) भीष्म के समीप गए और उनका बहु प्रकार से सम्मान किया। (उनसे विनय भाव से प्रश्न पूछा) "हे पितामह ,आप मुझे ऐसे नित्य धर्म की शिक्षा दीजिये जिसकी साधना से साधकों का जन्म सफल, सुखी और संपन्न हो जाए।"*

कौन देव करे सर्व हित भूजन । करे जो उनका उज्जवल जीवन ।।
नाचत जग जिसके निर्देशन ।सुमर नाम तरें तुरित भुवन ।।(६)

भावार्थ: *कौन देव प्राणियों का सर्वहित करते हैं। उनके जीवन को उज्जवल बनाते हैं। जिनके निर्देश पर संसार नाचता है। जिनके स्मरण से तुरंत संसार से तर जाते हैं।*

हर भय करे जो अंत दुष्कर्म ।भजत जाहि ना हो पुनर्जन्म ।।
है कौन धर्म सर्व धर्म महन ।देता मुक्ति जो भय जन्म-मरन ।।(७)

भावार्थ: *हे पितामह, वह कौन देव हैं जो भय-हरता एवं दुष्कर्मों का अंत करने वाले हैं तथा जिनके जपने से पुनर्जन्म नहीं होता। वह कौन सा श्रेष्ठ धर्म हैं जो सब धर्मों से श्रेष्ठ है। जो जन्म और मरण के भय से मुक्ति देता है।*

सुने जब यह हेतु लोक प्रश्न । हुए पितामह अति प्रसन्न ।।
सुविज्ञ भीष्म बोले तब वचन । सुनो पुत्र हिय धर मम कथन ।।(८)

भावार्थ: *इस प्रकार के जन कल्याण हेतु धर्मराज के मुख से प्रश्न सुनकर पितामह (भीष्म) अत्यंत प्रसन्न हुए। तब महाविज्ञानी पितामह बोले "हे पुत्र मेरे कथन को हृदय में धारण कर सुनो।"*

हैं एक ही सुर स्वामी भुवन । तर जाएं भव सागर भूजन ।।
करते निरंतर उनका भजन ।करें सहस्त्रनाम उच्चारन ।।(९)

भावार्थ: *(भीष्म पितामह बोले) एक ही देव इस संसार के स्वामी हैं उनका ही निरंतर भजन करें। जिनके सहस्त्र नाम का उच्चारण कर प्राणी इस भवसागर से तर जाते हैं।*

जपें अनादि अनंत नारायन । करें उनका भजन और अर्चन ।।
पाएं सुख सब दुःखी भूजन । नैन अश्रु युक्त करें सुमिरन ।।(१०)

भावार्थ: *अनादि अनंत नारायण का जप करें। उनका भजन और अर्चन करें। नेत्रों में अश्रु भर उनका स्मरण करने से दुःखी प्राणियों को सुख प्राप्त होता है।*

हैं वही हितकारी भगवन । बढ़ाएं सब नर नारि महिमन् ।।
नचाएं भृकुटि से त्रिभुवन । मिटें अघ जब करें नर भजन ।।(११)

भावार्थ: *वही हितकारी भगवान् हैं। समस्त नर नारियों का यश बढ़ाते हैं। अपनी भृकुटी (के संकेत) से तीनों लोकों को नचाते हैं। उनके भजन से घोर पापों से मुक्ति मिलती है।*

यही धर्म है श्रेष्ठ इस भुवन ।भजो सदा पुण्डरीक भगवन ।।
करो गुण वासुदेव के वर्णन । उनका अर्चन वंदन पूजन ।।(१२)

भावार्थ: *भगवान् पुण्डरीक को भजना, उनके गुणों का वर्णन करना, उनकी अर्चन, वंदन एवं पूजा करना, यही संसार में सर्व श्रेष्ठ धर्म है।*

करते उज्जवलित वह त्रिभुवन । हों सुखी भक्त करें जब भजन ।।
पा कर तेज उन परम भगवन । करते सृजन जग चतुरानन ।। (१३)

भावार्थ: *वह तीनों लोकों को प्रकाशित करते हैं। उनके भजन करने से भक्त सुखी होते हैं। उन परम ब्रह्म का तेज पा कर ब्रह्मा जगत का निर्माण करते हैं।*

है एक ही नाम परम पावन । हों नष्ट अघ करें जब सुमिरन ।।
कर ध्यान सब सुर असुर भूजन । पाएं वह सब लक्ष्य स्व-जीवन ।।(१४)

भावार्थ: *बस एक ही नाम पवित्र है जिसके स्मरण से पा नष्ट होते हैं। जिनका ध्यान करने से सभ सुर, असुर, प्राणी अपने जीवन का लक्ष्य पा जाते हैं।*

जन्म पिता वह सब ही भूजन । हों विलीन प्रलय उनके तन ।।
उनके तेज से ज्योति जीवन । अंत समय जो दें निर्मोचन ।।(१५)

भावार्थ: *वह सब प्राणियों के जन्मदाता हैं। प्रलय के समय उनके शरीर में लीन हो जाते हैं। इन्हीं का तेज जीविका प्रदान करता है और मृत्यु होने पर मोक्ष देता है ।*

सुनउँ नरेश तुम गुण अनंत । हरें मोह नर जग जग नियन्त ।।
हरहिं ऐहिक पाप रूप राम । सुमिरें जब हरि सहस्त्रनाम ।।(१६)

भावार्थ: *हे नरेश, इन के गुण अनंत हैं। ये मोह को हर लेते हैं। हे राम स्वरूपी सर्वश्रेष्ठ धर्मराज, इनके सहस्त्रनामों के स्मरण मात्र से सांसारिक पापों का विनास होता है।*

भजें मुनि यही नाम अनंत । करें हरि चरित्र अनुसरन ।।
होएं सिद्ध उनके सब मन्मन् । पाएं पद दुष्कर श्री भगवन ।।(१७)

भावार्थ: *मुनि इसी अनंत नाम को भजते हैं। प्रभु के चरित्र का अनुसरण करते हैं। उनके मनोरथ पूर्ण होते हैं और वह श्री भगवान के दुष्कर पद (मोक्ष) को प्राप्त करते हैं।*

अथ श्री विष्णु सहस्त्रनाम स्तुति हिंदी काव्य

विश्वम देते भूजन जीवन। करते विष्णु जग का पालन।।
हैं हरि वषट्कार यज्ञ यामन्। करते जो यजमान यज्ञ अर्पन।।(१८)

भावार्थः विश्वम *(१) प्राणियों को जीवन देने वाले हैं (जग प्रजनन देव)।* ***विष्णु*** *(२)जग के पालनकर्ता हैं। प्रभु* ***वषट्कार*** *(३) यजमान द्वारा (अग्नि देव को) समर्पित करने वाली यज्ञ आहुति हैं।*

भूतभव्यभवत्प्रभुः नाम। जानहुँ तीन काल परिणाम।।
भूतकृत करें सृजन संसार। हैं भूतभृत जग पालनहार।।(१९)

भावार्थः *भूत, वर्तमान एवं भविष्य, तीनों कालों के ज्ञानी* ***भूतभव्यभवत्प्रभुः*** *(४) हैं।* ***भूतकृत*** *(५) इस संसार के रचयिता है, एवं* ***भूतभृत*** *(६) इसका पालन करते हैं।*

अन्तर्यामी प्रभु भूतात्मा। दे जन्म जीव सो भूतभावना।।
नाम प्रभु पावन पूतात्मा। परम सार सुर है परमात्मा।।(२०)

भावार्थः *जीवों के गूढ़ रहस्य जानने वाले अन्तर्यामी प्रभु* ***भूतात्मा*** *(७) हैं।* ***भूतभावना*** *(८) प्रकृति को जन्म देते हैं। पवित्र आत्मा प्रभु का नाम* ***पूतात्मा*** *(९) है। इस ब्रह्माण्ड की परम श्रेष्ठ आत्मा* ***परमात्मा*** *(१०) हैं।*

दें मुक्तानामा निर्मोचन। हैं अव्यय अजर अमर भगवन।।
हरि पुरुष करें पुर शयन। साक्षी प्रभु देखें दुःख जन।।(२१)

भावार्थः *परम गति (मोक्ष) देने वाले प्रभु* ***मुक्तानामा*** *(११) हैं। अजर अमर भगवान् को* ***अव्यय*** *(१२) नाम से सम्बोधित किया गया है। पुर (शरीर) में शयन करने वाले अथवा नौ द्वार वाले पवित्र शरीर को व्याप्त करके शयन करने वाले हरि* ***पुरुष*** *(१३) हैं। भगवान्* ***साक्षी*** *(१४) प्राणियों की पीड़ा का अनुभव करते हैं।*

क्षेत्रज्ञ जानें शुद्ध अशुद्ध । हैं अजर अमर अक्षर सिद्ध ।।
इन्द्रियजित प्रभु हैं योगा । योगविदनेत हरैं सब रोगा ।।(२२)

भावार्थ: *शुद्ध अशुद्ध के ज्ञाता* ***क्षेत्रज्ञ*** *(१५) हैं। अजर अमर सिद्ध* ***अक्षर*** *(१६) हैं। इन्द्रिय नियंत्रित प्रभु* ***योगा*** *(१७) हैं।* ***योगविदनेत*** *(१८) रूप से हर प्रकार के रोगों का नाश करते हैं।*

प्रधानपुरषेश्वर हैं ईश्वर । नारसिंहवपु नरसिंहेश्वर ।।
श्रीमान हिय लक्ष्मी वासित । केशव केश सुभग अति भावित ।।(२३)

भावार्थ: *संसार के ईश्वर* ***प्रधानपुरषेश्वर*** *(१९) हैं। नरसिंह अवतार स्वरुप* ***नारसिंहवपु*** *(२०) हैं। श्री (लक्ष्मी जी) के हृदय में वास करने वाले* ***श्रीमान*** *(२१) हैं। अति सुन्दर केश वाले* ***केशव*** *(२२) हैं।*

मारो केशी अभद्र पापिन् । हुए जग यशस्वी केशव भगवन ।।
पुरुषोत्तम क्षर अक्षर ज्ञाता । पुरुष श्रेष्ठ जग विख्याता ।।(२४)

भावार्थ: *अभद्र राक्षश केश का वध करने के कारण भगवान् को* ***केशव*** *(२३) नाम से संसार में प्रसिद्धि मिली। प्रभु को क्षर (विनास) एवं अक्षर दोनों का ज्ञान होने के कारण संसार में श्रेष्ठ पुरुष रूप में ख्याति हुई और उन्हें* ***पुरुषोत्तम*** *(२४) नाम से पुकारा गया।*

हरि सर्व तुम हो सर्वज्ञाता । हैं प्रभु शर्व मृत्यु दाता ।।
शिव त्रि-अवगुण से रहित । रहें स्थाणु सदा समाधि स्थित ।।(२५)

भावार्थ: *सर्वज्ञानी होने से भगवान् को* ***सर्व*** *(२५) कहा जाता है। प्रभु मृत्यु के स्वामी तथा दाता हैं अतः* ***शर्व*** *(२६) हैं। तीनों अवगुणों (सत, रजस एवं तमस) के प्रभाव से रहित होने के कारण उन्हें* ***शिव*** *(२७) कहा गया। भगवान् सदैव समाधी में स्थिर रहते हैं इस कारण* ***स्थाणु*** *(२८) हैं।*

भूतादि हेतु जन्म अघनाशी । निधि श्री अव्यय अविनासी ।।
संभव प्रगट हों स्वैच्छा । भावन करें पूर्ण सब इच्छा ।।(२६)

भावार्थः *पापों का नाश करने वाले (जीवों के) जन्म का कारण प्रभु **भूतादि** (२९) हैं जो पापों का नाश करते हैं। **निधि** (३०) श्री हैं (सम्पदा के स्वामी) एवं **अव्यय** (३१) अविनासी हैं। अपनी स्वैच्छा से अवतरित होने से **संभव** (३२) हैं। सब की इच्छाओं को पूर्ण करने वाले **भावन** (३३) हैं।*

भर्ता हरि हैं पालक भूजन । हैं प्रभु प्रभव सृजक भुवन ।।
प्रभूरीश्वर स्वामी देवगन । सर्वेश्वर हैं ईश त्रिभुवन ।।(२७)

भावार्थः *समस्त प्राणियों का **भर्ता** (३४) भरण पोषण करते हैं। सभी जीवों की उत्पति उन्हीं से होती है, अतः **प्रभव** (३५) हैं। देवताओं के स्वामी **प्रभूरीश्वर** (३६) सब से श्रेष्ठ एवं जगत के ईश हैं। **सर्वेश्वर** (३७) तीनों लोकों के ईश्वर है।*

स्वयंभू हैं स्वतंत्र भगवन । शम्भू हरि दें सुख सब भूजन ।।
अदिति प्रभु स्वामी क्षामन् । पुष्कराक्ष के पद्म सम नयन ।।(२८)

भावार्थः *ईश्वर स्वतंत्र हैं (अर्थात उनका स्वामी कोई नहीं है) इसलिए **स्वयंभू** (३८) हैं। **शम्भू** (३९) भक्तों को सुख देते हैं। पृथ्वी के स्वामी **अदिति** (४०) हैं। भगवान् के नैन कमल के समान हैं, अतः **पुष्कराक्ष** (४१) हैं।*

करें उच्च स्वर उत्पन्न महास्वन । रहित मरण जन्म अनादिनिधन ।।
धारें अनन्त रूप भू धाता । पंच करम फल दें विधाता ।।(२९)

भावार्थः *प्रभु में महान स्वर उत्पन्न करने की क्षमता है, इसलिए **महास्वन** (४२) हैं (श्रुति में ऐसा वर्णित हैं कि प्रभु अपने दिव्य स्वर से वेदों का गायन करते हैं)। प्रभु का जन्म और अंत कोई नहीं जान सका इसलिए **अनादिनिधन** (४३) हैं। अनंत (शेष नाग) रूप से पृथ्वी को धारण करने वाले **धाता** (४४) हैं। पांचो प्रकार के कर्म, उत्क्षेपण, अवक्षेपण, आकुंचन, प्रसारण और गमन, का फल देने वाले **विधाता** (४५) हैं।*

धातुरुत्तम से उत्पन्न चेतन । हरें इस रूप प्रपंच भगवन ।।
समझो अप्रमेय हरि अमित । हैं ऋषिकेश इन्द्रियजित ।।(३०)

भावार्थ: *जिनसे चेतना (धातु) उत्पन्न होती है, वह **धातुरुत्तम** (४६) हैं। (श्रुति में कथित है कि) इस रूप में भगवान् प्रपंच हरण करते हैं। जिन्हें नापा न जा सके वह **अप्रमेय** (४७) हैं। हृषीक (इन्द्रियां) जिनके अधीन हैं, वह **ऋषिकेश** (४८) हैं।*

नाभि स्थित पद्म सम आभा । हैं रूप चैतन्य पद्मनाभा ।।
नायक सर्व देव जो भगवन । अमरप्रभु रहित जन्म मरन ।।(३१)

भावार्थ: *जिनकी नाभि में कमल रूपी आभा विद्यमान है और चैतन्य स्वरुप हैं, वह **पद्मनाभा** (४९) हैं। सभी देवताओं के जो नायक हैं और जन्म मरण से रहित हैं वह **अमरप्रभु** (५०) हैं।*

यह सृष्टि कर्मभूमि भगवन । सेवित विश्वकर्म सब भूजन ।।
करें भक्तों का पथ दर्शन । रहते सदैव हरि मनु मनन ।।
काल प्रलय करें अशक्त जन । हैं वह त्वष्टा श्री भगवन ।।(३२)

भावार्थ: *विश्व (सृष्टि) ही जिनकी कर्मभूमि है और जो सब जीवों से सेवित हैं, वह प्रभु **विश्वकर्म** (५१) हैं। भगवान् सदैव मनन (समाधि) में रहते हैं एवं भक्तों के मार्ग दर्शिता हैं, इसलिए उन्हें **मनु** (५२) कहकर पुकारते हैं। प्रलय के समय प्रभु जीवों को क्षीण कर देते हैं (जिस से विलय में सरलता हो), इसलिए श्री भगवान् **त्वष्टा** (५३) हैं।*

स्थिर सदैव स्थविष्ठ भगवन । स्थविर ध्रुव सम अनिवर्तन ।।
रहित प्रभाव कर्मइन्द्रिय । हैं अग्राह्य हरि जग प्रिय ।।(३३)

भावार्थ: *सदैव स्थिर (प्रकृति) रहने से भगवान् **स्थविष्ठ** (५४) हैं। **स्थविर** (५५) ध्रुव के समान स्थिर हैं। प्रभु कर्मेन्दियों के प्रभाव से रहित हैं, इसलिए संसार के प्रिय भगवान **अग्राह्य** (५६) हैं।*

हैं हरि सर्वकाल समागत । करे जग उच्चारित शाश्वत ।।
जिनकी सत्ता मंगल दाता । सच्चिदानंद कृष्ण कहलाता ।।(३४)

भावार्थः *भगवान् हर युग में उपस्थित रहते हैं इसलिए* ***शाश्वत*** *(५७) नाम से संसार में जाने जाते हैं। प्रभु का आश्रय मंगलदायक है, अतः वह सच्चिदानंद* ***कृष्ण*** *(५८) हैं।*

शुभ लाल श्री हरि के नयन । हैं वह लोहिताक्ष भगवन ।।
प्रलयकाल मोक्ष के दाता । प्रतर्दन नाम जग उच्चारता ।।(३५)

भावार्थः *भगवान् के नेत्र शुभ लाल रंग के होने से वह* ***लोहिताक्ष*** *(५९) हैं। प्रलय काल में प्रभु (जीवों को) मोक्ष दान देते हैं, इसलिए उन्हें संसार* ***प्रतर्दन*** *(६०) नाम से पुकारता है।*

सर्वगुण सम्पन्न हैं भगवन । प्रभूत नाम विख्यात भुवन ।।
ऊंची नीची मध्य दिशाएं । हैं आश्रयदाता त्रिदिशाएं ।।
दें भक्तों को वास हरि धाम । कहे जग उन्हें त्रिककुबधाम ।।(३६)

भावार्थः *सर्वगुण (ज्ञान, ऐश्वर्य आदि) संपन्न होने से वह* ***प्रभूत*** *(६१) नाम से विश्व में विख्यात हैं। जो ऊपर, निचली एवं मध्य भेद वाली तीनों दिशाओं के आश्रयदाता हैं तथा भक्तों को साकेत धाम का (मरण उपरान्त) वास देते हैं उन्हें संसार* ***त्रिककुबधाम*** *(६२) कहता है।*

भजत नाम होए पवित्र तन । पवित्रम नाम इस हेतु भगवन ।।
श्रेष्ठ शाश्वत परम नारायन । हो शुभ करें मंगल सुमिरन ।।
ईशान हरि हैं तम नाशक । करें वह जन जीवन चंद्रिक ।।(३७)

भावार्थः *जिनके भजन से तन को पवित्रता मिलती है वह ईश्वर* ***पवित्रम*** *(६३) हैं। श्रेष्ठ शाश्वत* ***परम*** *(६४) भगवान् हैं।* ***मंगल*** *(६५) प्रभु के स्मरण करने से शुभता आती है। अंधकार को दूर कर प्राणियों के जीवन को जो प्रकाशित करते हैं वह* ***ईशान*** *(६६) हैं।*

करें पोषित प्राणद भगवन । प्राण ईश दें जग जीवन ।।
ज्येष्ठ न कोई वय जानता । श्रेष्ठ हरि युक्त विशिष्टता ।।(३८)

भावार्थ: *सभी जीवों को आहार प्रदान करते हैं, वह* ***प्राणद*** *(६७) हैं। जो प्रभु जीवन दान देते हैं, वह* ***प्राण*** *(६८) हैं (यहां अप्रत्यक्ष रूप से वायु प्रदान करने का उल्लेख किया गया है जो स्वास द्वारा हमें जीवन दान देती है)। प्रभु अत्यंत पुरातन हैं, कोई उनकी आयु नहीं जानता, अतः* ***ज्येष्ठ*** *(६९) हैं।* ***श्रेष्ठ*** *(७०)प्रभु विशिष्टता युक्त हैं (अर्थात अति उत्तम हैं।*

प्रजापति भूपति त्रिभुवन । रहते जो अंदर अण्ड स्वर्न ।।
कहें उन्हें हिरण्यगर्भ भूजन । समझो उन्हें रूप नारायन ।।
है धरा स्थित हरि के गर्भ । कहे जग उन्हें श्री भूगर्भ ।।(३९)

भावार्थ: *प्रभु तीनों लोकों के स्वामी हैं, अतः* ***प्रजापति*** *(७१) हैं। जो स्वर्ण के अंडे के भीतर रहते हैं और नारायण का स्वरुप हैं, जग उन्हें* ***हिरण्यगर्भ*** *(७२) कहता है। पृथ्वी उनके गर्भ में वासित हैं, इस कारण विश्व उन्हें श्री* ***भूगर्भ*** *(७३) नाम से पुकारता है।*

मधु समान हैं माधव भगवन । मारो दैत्य मधु मधुसूदन ।।
हैं ईश्वर सर्वशक्तिमान । न कोई सूर विक्रमी समान ।।(४०)

भावार्थ: *शहद के समान (अति मधुर) प्रभु* ***माधव*** *(७४) हैं। मधु नाम दैत्य का संहार करने के कारण* ***मधुसूदन*** *(७५) नाम से विख्यात हुए। सर्वशक्तिमान* ***ईश्वर*** *(७६) हैं। प्रभु के समान कोई शूरवीर नहीं, अतः* ***विक्रमी*** *(७७) हैं।*

हैं धरेश धरापति भगवन । धन्वी धनुर्धारी रघुनन्दन ।।
मेधावी ज्ञाता ग्रन्थ सनातन । किए जब महाबाली यज्ञ पावन ।।
बद्ध बचन नापे त्रिभुवन । कहे विश्व उन्हें विक्रम भगवन ।।(४१)

भावार्थ: धरेश *(७८) भूपति भगवान् हैं। धनुषधारी श्री राम* ***धन्वी*** *(७९) हैं। भगवान् ग्रंथों के ज्ञाता हैं अतः* ***मेधावी*** *(८०) हैं। जब महाबाली ने यज्ञ किया (बामन अवतार में बाली को), वचनबद्ध कर तीनों लोकों को अपने पग से नापने पर विश्व में वह* ***विक्रम*** *(८१) कहलाये।*

नापे जग जब कर स्व-विस्तार । बामन देह हुआ क्रम अवतार ।।
अनुत्तम समान न कोई महन् । दुराधर्ष से डरते दुर्जन ।।(४२)

भावार्थ: *जब त्रिलोक नापने के लिए भगवान् ने अपना विस्तार किया तो बामन शरीर में वह* ***क्रम*** *(८२) कहलाये। प्रभु से श्रेष्ठ कोई नहीं है, अतः* ***अनुत्तम*** *(८३) हैं।* ***दुराधर्ष*** *(८४) से सभी दुष्ट डरते हैं।*

हो प्रसन्न जन अल्प समर्पन । देते सुगति कृत्यज्ञ भगवन ।।
कृति आधार क्रिया भूजन । आत्मवान रहें लीन साधन ।।(४३)

भावार्थ: *अल्प समर्पण से ही प्रसन्न होकर* ***कृत्यज्ञ*** *(८५) प्रभु (भक्तों को) सद्गति प्रदान कर देते हैं। जीवों की (कर्म) क्रिया का आधार* ***कृति*** *(८६) हैं। साधना में लीन प्रभु* ***आत्मवान*** *(८७) नाम से जाने जाते हैं।*

सुर स्वामी सुरेश नारायण । दुःख हर्ता हैं श्री शरण ।।
दें हर्ष सुख हरि शर्म भूजन । हैं विश्वरेता हेतु जनन ।।(४४)

भावार्थ: *सभी देवताओं के स्वामी प्रभु* ***सुरेश*** *(८८) हैं। सभी जीवों का दुःख दर्द हरण करने वाले श्री* ***शरण*** *(८९) हैं। प्राणियों को हर्ष एवं परमानंद देने वाले प्रभु* ***शर्म*** *(९०) हैं। (विश्व की) उत्पत्ति का हेतु भगवान्* ***विश्वरेता*** *(९१) हैं।*

प्रजाभाव हेतु जन्म भूजन । करते प्रकाशित अहः भुवन ।।
हैं अनंत संवत्सर भगवन । व्याल हैं जटिल सम विषानन ।।(४५)

भावार्थ: *भगवान् समस्त प्रजा की उत्पति के हेतु है, अतः* ***प्रजाभाव*** *(९२) हैं।* ***अहः*** *(९३) विश्व को प्रकाशित करते हैं। प्रभु अनंत हैं (उनके आदि और अंत का किसी को ज्ञान नहीं है) अतः* ***संवत्सर*** *(९४) हैं। सर्प के समान जटिल होने से (ग्रहण करने में न आ सकने के कारण)* ***व्याल*** *(९५) हैं।*

हैं अति प्राज्ञ प्रत्यय भगवन । सर्वदर्शी हरि सर्वदर्शन ।।
हैं रहित जो हरि जन्म मरन ।कहे जग उन्हें श्री अज भगवन ।।(४६)

वार्थः *भगवान् अत्यंत बुद्धिमान हैं, अतः* ***प्रत्यय*** *(९६) हैं। सर्वदर्शी होने से* ***सर्वदर्शन*** *(९७) हैं। जो जन्म मरण से रहित हैं उन्हें विश्व श्री* ***अज*** *(९८) कहता है।*

स्वामी सर्व देव सर्वेश्वर ।हैं नित्य सिद्धि परमेश्वर ।।
हैं कारण हेतु जन जीवन ।हैं सर्वादि स्वामी त्रिभुवन ।।(४७)

भावार्थः *समस्त देवों के स्वामी होने से प्रभु* ***सर्वेश्वर*** *(९९) हैं। समस्त सिद्धि भगवान् को प्राप्त हैं, अतः* ***सिद्धि*** *(१००) हैं। तीनों लोकों के स्वामी, सभी जीवों के जीवन के हेतु* ***सर्वादि*** *(१०१) हैं।*

अच्युत प्रभु हैं अति पावन ।हैं स्थिर स्व-शक्ति यह भगवन ।।
वर्ष करें पूर्ण जग सत मन्मन् ।अवतरे कपि हेतु धर्म पालन ।।(४८)

भावार्थः *अतिपावन प्रभु जो अपनी शक्ति में सदैव स्थिर रहते हैं,* ***अच्युत*** *(१०२) हैं। संसार की इच्छा पूर्ण करने वाले प्रभु* ***वर्ष*** *(१०३) हैं। भगवान् ने धर्म पालन के लिए कपि रूप धारण किया, इसलिए* ***कपि*** *(१०४) नाम से जाने जाते हैं।*

न नाप सकें अस्त्वित भगवन ।कहे अमेयात्मा उन्हें भुवन ।।
हैं रहित बंधन ममता कृत ।नाम हरि सर्वयोगविनसृत ।।(४९)

भावार्थः *प्रभु के आत्मा स्वरुप का माप परिच्छेद करना असंभव है, अतः संसार उन्हें* ***अमेयात्मा*** *(१०५) कहता है। प्रभु ममता और इच्छा के बंधन सेरहित हैं, इसलिए उन्हें* ***सर्वयोगविनसृत*** *(१०६) कहा जाता है।*

बसें प्रभु हिय जग आत्मा ।हैं वसु नर सुर जीवात्मा ।।
प्रशस्त पुष्प सम जिनका मन ।हैं वह उत्कृष्ट हरि वसुमन ।।(५०)

भावार्थ: *भगवान् में सब जीव बसते हैं, वही सब नर, सुर आदि की जीवात्मा हैं, अतः वह **वसु** (१०७) हैं। प्रभु सदैव पुष्प समान प्रसन्नचित्त एवं उत्कृष्ट हैं, इसीलिये उन्हें **वसुमन** (१०८) के नाम से जाना जाता है।*

है स प्राण त अन्न य सूर्य । सत्य मूर्ति करें शुभ कार्य ।।
हैं रहित राग द्वेष सम भगवन । समात्मा रखें सम भाव जन ।।(५१)

भावार्थ: *(श्रुति के अनुसार) 'स' प्राण है, 'त' अन्न है और 'य' सूर्य है, (अतः प्राण, अन्न और सूर्य रूप होने के कारण) प्रभु **सत्य** (१०९) हैं एवं शुभ कार्य करते हैं। जो राग, द्वेष से रहित है, वह **सम** हैं। भगवान् में सम भाव (अर्थात एक) है, इसलिए **समात्मा** (११०) हैं।*

हैं सम रूप स्थित जन सम्मित । अमोघ करें अभय जब सुमिरन ।।
बसें कमल समान हृदय मध्य । पुण्डरीकाक्ष प्रभु हैं पूज्य ।।(५२)

भावार्थ: *भगवान् (सब) जीव में समान रूप से स्थित हैं, अतः **सम्मित** (१११) हैं। स्मरण मात्र से ही **अमोघ** (११२) (प्रभु) निर्भय कर देते हैं। हृदय कमल के मध्य में स्थित होने के कारण पूजनीय प्रभु **पुण्डरीकाक्ष** (११३) हैं।*

धर्मरूप हैं प्रभु वृषकर्मा । करें हरि वृषाकृति सतकर्मा ।।
प्रलयेश हैं रुद्र महावीरा । अगनित शीश अतः बहुशिरा ।।(५३)

भावार्थ: *जिनके कर्म धर्मरूप हैं, वह **वृषकर्मा** (११४) हैं। जो धर्म और सत्य कर्म के लिए ही अवतरित होते हैं, वह **वृषाकृति** (११५) हैं। प्रलय काल में महावीर रूप धारण कर जो संहार करते हैं, वह **रूद्र** (११६) हैं। अनगनित शीश होने के कारण प्रभु **बहुशिरा** (११७) हैं।*

बभ्रु ही हैं जग अन्नपूर्णा । हैं विश्वयोनि विश्वपूर्णा ।।
सुमर शुचिश्रवा हों पवित्र । हैं अजर अमिट अतः अमृत ।।(५४)

भावार्थः *समस्त प्राणियों का भरण करते है, अन्नपूर्णा हैं, अतः* ***बभ्रु*** *(११८) हैं। विश्व के पूरक हैं (भगवान् रहित विश्व का कोई अस्तित्व नहीं), अतः* ***विश्वयोनि*** *(११९) हैं। भगवान् के नाम का श्रवण अत्यंत पावन है, अतः वह* ***शुचिश्रवा*** *(१२०) हैं। भगवान् अजर, अमर हैं इसलिए उन्हें* ***अमृत*** *(१२१) नाम से पुकारा जाता है।*

शाश्वत हैं सत नित्यानंद । स्थाणु दृढ़ सम हैं हिमनंद ।।
हैं प्रभु ही मोक्ष के दाता । हैं वरारोह जग विख्याता ।।(५५)

भावार्थः *प्रभु सत्य एवं अनश्वर है, अतः* ***शाश्वत*** *(१२२) हैं। हिमालय की तरह भगवान् दृढ़ बुद्धि हैं, इसलिए* ***स्थाणु*** *(१२३) हैं। प्रभु में आरूढ़ हुए जीवों को इस संसार में वापस नहीं आना पड़ता,अर्थात मोक्ष प्राप्ति होती है, इसलिए भगवान्* ***वरारोह*** *(१२४) के नाम से विख्यात हैं।*

है सृष्टि-विषयक ज्ञान महन । महातपा हैं स्वामी सब जन ।।
जग व्यापक सर्वग अनिरुद्ध । सर्व ज्ञानी हैं हरि सर्वविद्भ ।।(५६)

भावार्थः *भगवान् का सृष्टि-विषयक तप ज्ञान अत्यंत महान है, वह प्राणीओं के ईश्वर हैं, इसलिए वह* ***महातपा*** *(१२५) हैं। सर्व व्यापी होने के कारण भगवान् को* ***सर्वग*** *(१२६) पुकारा गया। सर्वज्ञानी हैं अतः भगवान्* ***सर्वविद्भ*** *(१२७) हैं।*

देख रण में विष्वक्सेन भगवन । भाग जाएं हो भयभीत द्विषन ।।
मित्र संत परन्तु रिपु दुष्ट । करें जनार्दन अर्चन शिष्ट ।।(५७)

भावार्थः *भगवान्* ***विष्वक्सेन*** *(१२८) को रण में देखते ही शत्रु भयभीत होकर भाग जाते हैं। संतों के मित्र तथा दुष्टो के शत्रु* ***जनार्दन*** *(१२९) प्रभु की सभी सुशिक्षित वंदना करते हैं।*

हैं वेद रूप अतः प्रभु वेद । हैं ज्ञाता वेदविद चतुर्वेद ।।
पूर्ण ज्ञानेश प्रभु अव्यंग । वेद वेदांग हैं हरि के अंग ।।(५८)

भावार्थ: *भगवान् स्वयं ही* ***वेद*** *(१३०) हैं। चारों वेद जिनमें समाहित हैं (वेद तथा वेदों के अर्थ भलीभांति समझते एवं अनुभव करते हैं), इसलिए* ***वेदविद*** *(१३१) हैं। ज्ञानादि से परिपूर्ण प्रभु* ***अव्यंग*** *(१३२) हैं। वेद ही जिन के अंग रूप हैं, ऐसे भगवान् को श्रुति ने* ***वेदांग*** *(१३३) कहकर पुकारा है।*

करें हरि वेदवित चिंतन वेद । कवि प्रभु जानें सभी के भेद ।।
हैं लोकाध्यक्ष ईश संसार । सुराध्यक्ष प्रभु सुर आधार ।।(५९)

भावार्थ: *वेदों का चिंतन करते हैं, अतः भगवान्* ***वेदवित*** *(१३४) हैं। प्रभु* ***कवि*** *(१३५) रूप में सभी के भेद अर्थात गूढ़ रहस्य जानते हैं। समस्त लोक उनके अधीन हैं, अतः* ***लोकाध्यक्ष*** *(१३६) हैं। समस्त देवताओं के वह आधार (स्वामी) हैं, इसलिए* ***सुराध्यक्ष*** *(१३७) हैं।*

हैं धर्माध्यक्ष धर्म के देव । कृताकृत रत कर्म सदैव ।।
सृष्टि काल रूप देव ब्रह्मा । हों प्रगट श्री चतुरात्मा ।।(६०)

भावार्थ: *धर्म नियम के नियंता हैं, अतः* ***धर्माध्यक्ष*** *(१३८) हैं। कार्यरूप से सदैव कार्यरत रहते हैं, इसलिए* ***कृताकृत*** *(१३९) हैं। सृष्टि की उत्पति के लिए ब्रह्मा रूप में प्रगट होते हैं, अतः* ***चतुरात्मा*** *(१४०) हैं।*

करें चारों व्यूह की रचना । चतुर्व्यूह हैं विश्व यशोधना ।।
हैं चतुर्दंत नरसिंह भगवन । चतुर्दंष्ट्र हैं प्रसिद्ध भुवन ।।(६१)

भावार्थ: *चार व्यूह (वासुदेव आदि मूर्तियों) की रचना करते हैं, अतः* ***चतुर्व्यूह*** *(१४१) के नाम से विश्व में प्रसिद्ध हैं। नरसिंह अवतार में प्रभु चार दाढ़ों के साथ प्रगट हुए, अतः* ***चतुर्दंष्ट्र*** *(१४२) नाम से संसार में विख्यात हैं।*

चार भुजाओं से हरि युक्त । चतुर्भुज प्रभु हैं नियंत ।।
धर्म सत्य के रूप भगवान् । हैं भ्राजिष्णु भा निधान ।।(६२)

भावार्थ: *प्रभु की चार भुजाएं हैं अतः वह भगवान्* ***चतुर्भुज*** *(१४३) हैं। भगवान् धर्म और सत्य के स्वरुप हैं तथा प्रकाश का भण्डार है, इस कारण वह* ***भ्राजिष्णु*** *(१४४) हैं।*

करें भोग माया हरि <u>भोजन</u> । हेतु <u>भोक्ता</u> माया सम अन्न ।।
करें जो दोष भक्त निवारन । हैं वह <u>सहिष्णु</u> श्री भगवन ।।(६३)

भावार्थ: *माया के भोग को भोगते हैं, इसलिए हरि* ***भोजन*** *(१४५) हैं। माया जिन्हें अनाज के समान है (अतः जो माया को अन्न के समान भोगते हैं), वह* ***भोक्ता*** *(१४६) हैं। जो भक्तों के दोष दूरते हैं, वह प्रभु* ***सहिष्णु*** *(१४७) हैं।*

स्थित हैं श्रष्टि पूर्व भगवन । <u>जगदादिज</u> श्री नारायन ।।
हैं विष्णु निष्पाप पावन । कहें वेद उन्हें <u>अनघ</u> भगवन ।।(६४)

भावार्थ: *सृष्टि उत्पति से पहले ही स्थित (अर्थात अवतरित) श्री प्रभु को* ***जगदादिज*** *(१४८) नाम से पुकारा गया। भगवान् पापहीन एवं पवित्र हैं, अतः वेद उन्हें* ***अनघ*** *(१४९) नाम से पुकारते हैं।*

जीते सब लोक हरि स्व-सगुण । कहें <u>विजय</u> त्रिलोक विचक्षण ।।
मन हो मोहित पाए उत्कर्ष । हो <u>जेता</u> सुमर जन हिय हर्ष ।।(६५)

भावार्थ: *अपने सद्गुणों के कारण प्रभु ने सब लोकों को जीत लिया (अर्थात दुष्टों से विहीन कर दिया), इस हेतु उन्हें त्रिलोक में बुद्धिमान* ***विजय*** *(१५०) नाम से सम्बोद्धित करते हैं। प्रभु के* ***जेता*** *(१५१) नाम स्मरण से जीवों का ह्रदय प्रसन्नता से भर जाता है तथा वह उन्नति को प्राप्त करता है।*

हैं विश्व और योनी भगवन । करें <u>विश्वयोनि</u> अघ उन्मूलन ।।
लिए अवतार कई बार भुवन । कहें <u>पुनर्वसु</u> सब सुर भूजन ।।(६६)

भावार्थः *प्रभु विश्व (जीव) एवं योनि (आत्मा) हैं और जीवों के पापों का उन्मूलन करते हैं, अतः* ***विश्वयोनि*** *(१५२) हैं। हरि ने कई बार पृथ्वी पर (धर्म रक्षा हेतु) अवतार लिया, इसलिए सब देव और प्राणी उन्हें* ***पुनर्वसु*** *(१५३) कहते हैं।*

उपेंद्र स्वामी पति-व्योमन। आए बाली यज्ञ रूप बामन।।
तीन पग से नापे त्रिभुवन। कहें प्रांशु सुर और भूजन।।(६७)

भावार्थः *इंद्र के स्वामी होने से* ***उपेंद्र*** *(१५४) हैं। बाली के यज्ञ में प्रभु* ***बामन*** *(१५५) रूप में अवतरित हुए। अपने तीन पग से तीनों लोकों को नाप लिया इस कारण उन्हेंदेव और प्राणी* ***प्रांशु*** *(१५६) नाम से पुकारते हैं।*

नहीं व्यर्थ यत्न कभी भगवन। करें अमोघ पूर्ण सब मन्मन्।।
जो सुमिरें अविरत हरि नाम। मरण काल पाएं शुचि धाम।।(६८)

भावार्थः *प्रभु की चेष्टा कभी व्यर्थ नहीं जाती, उनके स्मरण से समस्त कामनाएं पूर्ण होती हैं, इसलिए उन्हें* ***अमोघ*** *(१५७) नाम से जाना जाता है। जो हरि के नाम का निरंतर स्मरण करते हैं, उन्हें मरण पश्चात (प्रभु)* ***शुचि*** *(१५८) अपने धाम में भेज देते हैं।*

न कोई प्रबल प्रभु समान। ऊर्जित हरें दुष्टों के प्रान।।
है सुर न कोई सम भगवन। हैं अतीन्द्र प्रसिद्ध भुवन।।(६९)

भावार्थः *दुष्टों का वध करने वाले प्रभु के समान कोई बलशाली नहीं है, अतः वह* ***उर्जित*** *(१५९) हैं। समस्त देवताओं से श्रेष्ठ होने के कारण वह* ***अतीन्द्र*** *(१६०) नाम से विश्व में विख्यात हैं।*

संग्रह करें एकत्रित जीवजन। प्रलय काल में हों जब भूजन।।
हरि सर्ग करें सृजन जन तन। हैं अजन्मा धृतात्मा भगवन।।(७०)

भावार्थ: *प्रलय काल में प्राणियों की जीवात्माओं को एकत्रित करते हैं, अतः* ***संग्रह*** *(१६१) हैं। जीवों के शरीर की रचना करते हैं, इस कारण* ***सर्ग*** *(१६२) कहलाये जाते हैं। भगवान् जन्मादि से रहित हैं, अतः* ***धृतात्मा*** *(१६३) हैं।*

हैं नियम निर्णायक देव । शाश्वत प्रभु यम आयुषदेव ।।
हों प्रगट जन हिय सहजहिं । नाम वेद्य वेद ग्रंथ कहहिं ।।(७१)

भावार्थ: *भगवान् धर्म नियंत्रणकर्ता हैं, अतः* ***नियम*** *(१६४) हैं। अविनासी प्रभु* ***यम*** *(१६५) रूप में आयु प्रदानकर्ता हैं। भक्तों के हृदय में सहज ही प्रगट हो जाते हैं, इसलिए शास्त्र* ***वेद्य*** *(१६६) के नाम से उन्हें सम्बोद्धित करते हैं।*

ग्रन्थ सभी रचे श्री भगवन । हैं वैद्य नियंत्रक जीवन ।।
हैं सदायोगी सर्वव्यापी । वधें वीरहा असुर पापी ।।(७२)

भावार्थ: *सर्व शास्त्रों के रचियता जीवनदाता भगवान्* ***वैद्य*** *(१६७) नाम से जाने जाते हैं। सर्व-व्यापी प्रभु* ***सदायोगी*** *(१६८) हैं। दुष्कर्म समर्थक राक्षसों का संहार करते हैं, अतः* ***वीरहा*** *(१६९) हैं।*

करें माधव विद्या का वाचन । सम मकरंद मधु हिय भावन ।।
हैं अतीन्द्र रहित-विषयक । महामाय हैं माया नायक ।।(७३)

भावार्थ: *विद्या (मा) के स्वामी (शिक्षक) होने से उन्हें* ***माधव*** *(१७०) नाम से बुलाया जाता है। शहद की भांति मधुर हृदय को भाने वाले भगवान्* ***मधु*** *(१७१) हैं। विषयरहित हरि* ***अतीन्द्र*** *(१७२) हैं। मायावियों के भी आप नायक हैं, इसलिए* ***महामाय*** *(१७३) हैं।*

तत्पर हरि हेतु जग पालन । महोत्साह तारें भव-भुवन ।।
भीम अति बलशाली भगवन । महाबलः सम न है युद्धिवन ।।(७४)

भावार्थ: *संसार सागर को तारने वाले प्रभु जगत पोषण के लिए सदैव तत्पर रहते हैं, अतः* ***महोत्साह*** *(१७४) हैं। जगत में आपके समान कोई बलशाली नहीं, अतः* ***भीम*** *(१७५) हैं। (प्रभु)* ***महाबलः*** *(१७६) के समान कोई योद्धा नहीं है।*

मेधावी अतुलित सतनाम । महाबुद्धि नामक भगवान ।।
हरि के शुक्र से जन्मे माया । महावीर्य तब ग्रंथन गाया ।।(७५)

भावार्थ: *अत्यंत बुद्धिमान प्रभु* ***महाबुद्धि*** *(१७७) हैं। हरि के वीर्य से ही माया की उत्पत्ति हुई है, अतः आप* ***महावीर्य*** *(१७८) हैं।*

परम बली प्रभु हो परमेश्वर । महाशक्ति तुम हो संतेश्वर ।।
ज्योति जले अंतर्भाग भगवन । महाद्विती करें दुःख हरन ।।(७६)

भावार्थ: *हे संतेश्वर आपका बल अपरिमित है, अतः आप* ***महाशक्ति*** *(१७९) हैं। जिनके अन्तः मन में सदैव ज्योति (ज्ञान ज्योति) जलती रहती है, तथा जिनके स्मरण मात्र से जीव दुःख रहित हो जाते हैं, ऐसे प्रभु* ***महाद्विती*** *(१८०) हैं।*

स्वाधीन विधि पालन कर्ता । अनिर्देश्यवपु जन हित कर्ता ।।
श्रीमान प्रभु श्री आत्मा । जानें न थाह जग अमेयात्मा ।।(७७)

भावार्थ: *जो स्वाधीन हैं (जिनका कोई स्वामी नहीं है) तथा प्रकृति के नियमों का पालन करते हैं, ऐसे जनहित कर्ता प्रभु को* ***अनिर्देश्यवपु*** *(१८१) कहा गया है। प्रभु श्री (लक्ष्मी) के पति है, अतः* ***श्रीमान*** *(१८२) हैं। भगवान् अनंत है, उनकी थाह कोई नहीं जान सकता, इसलिए* ***अमेयात्मा*** *(१८३) हैं।*

उठाए कनिष्ठिका गिरि भगवन । महाद्रिधृक अर्चित भुवन ।।
पुरुषोत्तम धनुर्धर महन । हैं महेष्वास राम निरूपन ।।(७८)

भावार्थ: *सर्व पूजित एवं पर्वत को उंगली पर धरने वाले प्रभु* ***महाद्रिधृक*** *(१८४) हैं। परम श्रेष्ठ धनुर्धारी* ***पुरुषोत्तम*** *(१८५) हैं।* ***महेष्वास*** *(१८६) राम के रुप हैं।*

प्रलय काल जल डूबे भुवन । करें महीभर्ता शीश धारन ।।
है हृदय निवास धन माता । श्रीनिवास हैं सुख दाता ।।(७९)

भावार्थ: *जब प्रलय काल में प्रभु ने जलमग्न पृथ्वी को धारण कर उसका उद्धार किया तो उन्हें* ***महीभर्ता*** *(१८७) नाम से बुलाया गया। सुख देने वाले भगवान् के हृदय में माँ लक्ष्मी (श्री) का निवास है, अतः वह* ***श्रीनिवास*** *(१८८) हैं।*

दें साधु संत सुगति सुमती । आनंददायक सतामगती ।।
निष्पक्ष नियंत तुम सर्वदा । अनिरुद्ध हरि दें प्रेम सदा ।।(८०)

भावार्थ: *आनंददायक* ***सतामगती*** *(१८९) प्रभु साधु संतों को सुमति एवं सुगति प्रदान करते हैं। सदैव निष्पक्ष प्रेमदायी प्रभु* ***अनिरुद्ध*** *(१९०) हैं।*

हों प्रसन्न सुमर सुरानंद । गौरक्षक गोविद्पति गोविंद ।।
अति तेजस्वी मारीचि भगवन । करें वध दुष्ट हरि श्री दमन ।।(८१)

भावार्थ: *जिनके स्मरण से आनंदित होते है, वह प्रभु* ***सुरानन्द*** *(१९१) हैं। गौ माँ के रक्षक प्रभु* ***गोविदपति*** *(१९२) एवं* ***गोविन्द*** *(१९३) हैं। तेजस्वियों में भी तेजस्वी प्रभु* ***मारीचि*** *(१९४) हैं। दुष्टों का नाश करते हैं, अतः* ***दमन*** *(१९५) हैं।*

हों भय दूर सुमर हरि हंसा । हैं गरुड़ वाहन सुपर्ण ईशा ।।
हैं हस्त बली हरि भुजगोत्तम । हिरण्डयनाभ नाभी मृग सम ।।(८२)

भावार्थ: *जिनके स्मरण से भय का नाश होता है, वह प्रभु* ***हंसा*** *(१९६) हैं। जिनके वाहन गरुड़ हैं, वह* ***सुपर्ण*** *(१९७) हैं। जिनकी भुजाओं में अतुलित बल है, वह प्रभु* ***भुजगोत्तम*** *(१९८) हैं। जिनकी नाभि (अति सुन्दर) मृग समान है, वह* ***हिरण्डयनाभ*** *(१९९) हैं।*

करें बद्रिकाश्रम तप पावन । हैं वह नर नारायण निरूपन ।।
रहते अग्रिम समाधि भगवन । समझो उन्हें सुतपा सनातन ।।
है नाभि सम नीरज नियंत । शाश्वत पद्मनाभ हरि अनंत ।।(८३)

भावार्थ: *बद्रिकाश्रम में नर नारायण रूप में पावन तप करने वाले, समाधी में अग्रिम रहने वाले भगवान् को अजन्मा* ***सुतपा*** *(२००) समझो। जिन भगवान् की नाभि कमल के समान है, वह अविनाशी अनंत हरि* ***पद्मनाभ*** *(२०१) हैं।*

स्वामी प्रजापति सब भूजन । अमृत्यु अविनाशी भगवन ।।
सर्वदृक सर्व स्थल विद्यमान । सिंह शौर्य न कोई समान ।।(८४)

भावार्थ: *प्रभु सभी जीवों के स्वामी हैं, अतः* ***प्रजापति*** *(२०२) हैं। भगवान् अविनाशी (अमर) हैं, इसलिए* ***अमृत्यु*** *(२०३) हैं। सर्वव्यापक प्रभु* ***सर्वदृक*** *(२०४) है। भगवान् के समान कोई शौर्यवान नहीं, इसलिए* ***सिंह*** *(२०५) हैं।*

शुभ अशुभ कर्म फल के दाता । देते सहज सुख सब सन्धाता ।।
हैं मित्र भक्त महन सन्धिमान । रहें स्थिर हर स्थिति समान ।। (८५)

भावार्थ: *कर्मों के अनुसार शुभ अथवा अशुभ फल देने वाले एवं सभी को सहज सुख प्रदान करने वाले* ***संधाता*** *(२०६) है। भक्तों के महान मित्र* ***सन्धिमान*** *(२०७) हैं। सदा एक रूप में स्थित होने के कारण* ***स्थिर*** *(२०८) हैं।*

बसें हृदय अज धर्मात्मन् । करें दुर्मर्षण अघ निवारन ।।
शास्ता हैं नियंत्रक नियम । किए श्रवण ग्रन्थ विश्रुतात्म ।।(८६)

भावार्थ: *भक्तों के हृदय में बसने वाले प्रभु* ***अज*** *(२०९) हैं।(वास्तव में अज का अर्थ समाना अथवा फेंकना होता है। प्रभु संतों के हृदय में समाते हैं एवं दुष्टों को फेंकते हैं, इसलिए अज हैं।) पापों का निवारण करते हैं, अतः* ***दुर्मर्षण*** *(२१०) हैं। (प्रकृति के) नियम नियंत्रक हैं, इसलिए* ***शास्ता*** *(२११) हैं। ग्रंथों का श्रवण करते हैं, अतः* ***विश्रुतात्म*** *(२१२) हैं।*

हैं रक्षक सुर मर्दक सब दुष्ट । हरि सुरारिहा देवों के इष्ट ।।
ज्ञान मूल हैं गुरु भगवन । गुरुतम दें ज्ञान चतुरानन ।।(८७)

भावार्थः *देवों के इष्ट, उनकी रक्षा करने वाले तथा सभी दुष्टों का मर्दन करने वाले भगवान्* ***सुरारिहा*** *(२१३) हैं। भगवान् ही ज्ञान का मूल (ज्ञान शिक्षक) हैं, अतः* ***गुरु*** *(२१४) हैं। ब्रह्मा को भी ज्ञान देने वाले प्रभु को* ***गुरुतम*** *(२१५) कहकर पुकारा गया है।*

हैं परम ज्योति <u>धाम</u> पावन । हैं हरि <u>सत्य</u> धर्म निरूपन ।।
हैं सरंक्षक धर्म श्री भगवन । <u>सत्यपराक्रम</u> युक्त शुष्मन् ।।(८८)

भावार्थः *भगवान् परम ज्योति हैं, इसलिए पावन* ***धाम*** *(२१६) नाम से उच्चारित किया जाता हैं। धर्म रूप होने से उन्हें* ***सत्य*** *(२१७) कहा गया हैं। धर्म की रक्षा करने वाले अत्यंत शूरवीर प्रभु* ***सत्यपराक्रम*** *(२१८) हैं।*

रहें योग साधन में भगवन । देख सकें जग निमिष बंद नयन ।।
अनिमिष स्थिर दृष्टि ईश्वर । हरि स्त्रग्वी बैजंतीश्वर ।।(८९)

भावार्थः *प्रभु योगासन में मुंदे नेत्र से विश्व को देखते हैं, अतः* ***निमिष*** *(२१९) हैं। स्थिर दृष्टि होने के कारण* ***अनिमिष*** *(२२०) हैं। सदैव कंठ में माला (वैजयंती) धारण करते हैं, अतः हरि* ***स्त्रग्वी*** *(२२१) हैं।*

वाक् चतुर प्रभु <u>वाचस्पती</u> । हैं सर्वभूत सत <u>रुदारती</u> ।।
सुमिरें तब प्रशस्त पद पावें । जप <u>अग्रणी</u> जीव तर जावें ।।(९०)

भावार्थः *भगवान् वाक् चतुर हैं, अतः* ***वाचस्पती*** *(२२२) हैं। सर्वव्यापी सत्य प्रभु* ***रुदारती*** *(२२३) हैं। जिनके स्मरण से उच्च पद की प्राप्ति होती हैं तथा जीव भवसागर से तर जाते हैं, वह प्रभु* ***अग्रणी*** *(२२४) हैं।*

श्रीमान श्री के भर्तृक । ग्रामणी विश्व संचालक ।।
करें नेता जग मार्ग दर्शन । न्याय हरि दें न्याय भूजन ।।(९१)

भावार्थः श्रीमान *(२२५) लक्ष्मी के स्वामी हैं। विश्व के संचालक* ***ग्रामणी*** *(२२६) हैं। संसार का नेतृत्व करने वाले* ***नेता*** *(२२७) हैं। प्राणियों के न्यायदाता* ***न्याय*** *(२२८) हैं।*

दें समीरणा जीवन भूजन । सहस्त्रमूर्ध सहस्त्रानन ।।
सार विश्व के हैं विश्वात्मा । करें दूर भ्रम निवृत्तात्मा ।।(९२)

भावार्थ: *प्राणियों के जीवनदाता हैं, अतः* ***समीरणा*** *(२२९) हैं। (हरि के) एक सहस्त्र मुख हैं, इसलिए* ***सहस्त्रमूर्ध*** *(२३०) हैं। विश्व की आत्मा होने के कारण* ***विश्वात्मा*** *(२३१) हैं। भ्रम दूर करने वाले प्रभु* ***निवृत्तात्मा*** *(२३२) हैं।*

सहस्त्र पग के प्रभु स्वामी । सहस्त्रपात हैं सर्वगामी ।।
भव-सागर पारें आवर्तना । सहस्त्राक्ष के सहस्त्र लोचना ।।(९३)

भावार्थ: *सर्वव्यापी प्रभु सहस्त्र चरणों (पाद) के स्वामी हैं, अतः* ***सहस्त्रपात*** *(२३३) हैं। संसार चक्र (भव-सागर) से* ***आवर्तना*** *(२३४) प्रभु पार करते हैं। सहस्त्र चक्षु धारण करते हैं, अतः* ***सहस्त्राक्ष*** *(२३५) हैं।*

संवृत करें दूर अशुभता । करें सम्प्रमर्दन दूर दुष्टता ।।
अहःसंवर्तक हरि सम रवि । करें वह्नि स्वीकार यज्ञ हवि ।।(९४)

भावार्थ: *अशुभता को नष्ट करने वाले प्रभु* ***संवृत*** *(२३६) हैं। दुष्टता को नष्ट करने वाले हरि* ***सम्प्रमर्दन*** *(२३७) हैं। सूर्य की तरह प्रकाश देने वाले भगवान्* ***अहःसंवर्तक*** *(२३८) हैं। यज्ञ हवि को स्वीकार करने वाले प्रभु* ***वह्नि*** *(२३९) हैं।*

अनिल हैं अनादि सर्वभूता । धारी शीश भू धरनीधरा ।।
करें उपकार अपि अपकारा । सुप्रसाद प्रभु अति कृपाला ।।(९५)

भावार्थ: *अनादि एवं सर्वव्यापी होने से प्रभु* ***अनिल*** *(२४०) हैं। सिर पर पृथ्वी को धारण करते हैं, अतः* ***धरनीधरा*** *(२४१) हैं। कृपाल हरि अपकार करने वालों का भी उपकार करते हैं, इसलिए* ***सुप्रसाद*** *(२४२) हैं।*

रहें सदा प्रसन्नात्म प्रसन्न । शीश विश्वधृक भार भुवन ।।
हैं विश्वभुग विश्व पालक । विभु प्रभु हैं आनंददायक ।।(९६)

भावार्थः *प्रभु सदैव आनंदित रहते हैं, अतः वह* ***प्रसन्नात्म*** *(२४३) हैं। (जिनके) शीश पर पृथ्वी का भार है, वह* ***विश्वधृक*** *(२४४) हैं। समस्त विश्व के पालनकर्ता* ***विश्वधृक*** *(२४५) हैं। दिव्य आनंद देने वाले प्रभु* ***विभु*** *(२४६) हैं।*

सत्कर्ता करें कृत्य पावन । साधु हरि करें धर्म अनुसरन ।।
पूजें संत हरि सत्कृत पुन्य । करते कर्म जो न्याय परायन ।।(९७)

भावार्थः *सत कर्म करने वाले* ***सत्कर्ता*** *(२४७) हैं। धर्म का अनुसरण करने वाले प्रभु* ***साधु*** *(२४८) हैं। संत दिव्य भगवान्* ***सत्कृत*** *(२४९) की पूजा करते हैं जो न्याय परायण कार्य करते हैं।*

काल प्रलय हों विलीन भूजन । जह्नु नाम से प्रसिद्ध भगवन ।।
प्रभु ही नर हैं वही आत्मा । हैं नरनारायण जगात्मा ।।(९८)

भावार्थः *प्रलय काल में जीव भगवान में विलीन हो जाते हैं, अतः वह* ***जह्नु*** *(२५०) नाम से प्रसिद्ध हैं। हरि नर एवं आत्मा दोनों हैं, इस प्रकार विश्व की आत्मा होने के कारण उन्हें* ***नरनारायण*** *(२५१) नाम से पुकारा जाता है।*

अनेक नाम हैं अतः असंख्येय । अप्रेयात्मा के रुप अप्रमेय ।।
सुर भी आकार हरि न जाना । विशिष्ट प्रभु महाबलवाना ।।(९९)

भावार्थः *प्रभु के असंख्य नाम होने से वह* ***असंख्येय*** *(२५२) हैं। (श्री विष्णुसहस्त्रनाम में भगवान् के सहस्त्र नामों का उल्लेख करते हुए भगवान् वेद व्यास जी कहते हैं कि यह तो प्रभु के कुछ ही नाम हैं)। प्रभु के रूप को मापा नहीं जा सकता, वह अनंत हैं अर्थात* ***अप्रेयात्मा*** *(२५३) हैं। देवता भी प्रभु के आकार को जानने में अनभिज्ञ हैं, ऐसे महाबलशाली प्रभु को* ***विशिष्ट*** *(२५४) कहकर सम्बोद्धित किया गया है।*

हैं हरि अत्यंत कुशल शासक । शिष्टकृत प्रभु हैं अभिभावक ।।
पावन शरीर पावन आत्मा । शुचि हरि श्रेष्ठ परमात्मा ।।(१००)

भावार्थ: *इस सृष्टि को प्रभु* ***शिष्टकृत*** *(२५५) अभिभावक बन कुशलता से शासित करतें हैं। जिनका तन एवं मन, दोनों ही पवित्र हैं, ऐसे परमात्मा को* ***शुचि*** *(२५६) कह कर बुलाते हैं।*

सिद्धार्थ हैं संपन्न सत्कर्म । दें सिद्धिद प्रभु फल कर्म ।।
सिद्धसंकल्प सिद्धि पूरक । सिद्धिसाधन सिद्धि साधक ।।(१०१)

भावार्थ: *सत्य कर्मों से संपन्न प्रभु* ***सिद्धार्थ*** *(२५७) हैं।* ***सिद्धिद*** *(२५८) भगवान् कर्मों का फल देते हैं।* ***सिद्धसंकल्प*** *(२५९) सिद्धियों (मनोरथ) को पूर्ण करते हैं। सिद्धिओं के साधक हरि* ***सिद्धिसाधन*** *(२६०) हैं।*

धर्म पालक हैं परमात्मा । वृषाही परम पवित्र आत्मा ।।
वृषभ करें सब पूर्ण मन्मन् । विष्णु करें सब जग का पालन ।।(१०२)

भावार्थ: *परम पवित्र आत्मा एवं धर्म पालक प्रभु* ***वृषाही*** *(२६१) हैं।* ***वृषभ*** *(२६२) रूप में (भक्तों) की समस्त कामनाएं पूर्ण करते हैं।* ***विष्णु*** *(२६३) समस्त सृष्टि का पालन करते हैं।*

साधन स्वर्ग है नाम जपन । वृषपर्वा अति सुन्दर भगवन ।।
हरि वृषोदर हैं दाता अन्न । बढ़े मान वर्धना सुमिरन ।।(१०३)

भावार्थ: *अति सुन्दर रूप वाले* ***वृषपर्वा*** *(२६४) स्वर्ग प्राप्ति के साधन हैं। (वृषपर्वा भगवान् का स्मरण जीवों को मरणोपरांत स्वर्ग का पथ निश्चित करता है)। इस जग का पोषण करने वाले (अन्नपूर्णा) भगवान्* ***वृषोदर*** *(२६५) हैं। प्रभु का* ***वर्धना*** *(२६६) नाम स्मरण करने से सम्मान की प्राप्ति होती है।*

सुमिरन से हों प्रकट सवेग । वर्धमान की गति अति वेग ।।
हैं विविक्त अप्रपंच भगवन । करते श्रुतिसागर दुःख हरन ।।(१०४)

भावार्थ: वर्धमान *(२६७) नाम के स्मरण से (भक्तों की रक्षा हेतु) प्रभु शीघ्र प्रकट हो जाते हैं ताकि वह दुष्टों का संहार कर सकें)। प्रभु का स्वभाव प्रपंचहीन है अतः वह* ***विविक्त*** *(२६८) हैं। (दीन दुखियों के) दुःख हरण करने वाले* ***श्रुतिसागर*** *(२६९) हैं।*

सुभुजा युक्त भुजा महान। हैं दूभर दुर्धर भगवान्।।
करें वाग्मी वेद मधुर गायन। हैं इंद्रपति महेंद्र भगवन।।(१०५)

भावार्थ: *बलशाली भुजा से युक्त हरि* ***सुभुजा*** *(२७०) हैं।* ***दुर्धर*** *(२७१) भगवान् दूभर हैं (अर्थात कठिनता से प्राप्त होते हैं। यहां तप और श्रद्धा को महत्वा दी गयी है)। वेदों को मधुर वाणी से गायन करने वाले* ***वाग्मी*** *(२७२) हैं। इंद्रदेव के स्वामी* ***महेंद्र*** *(२७३) हैं।*

धनपति वसुद श्री के स्वामी। दें धन वसु संत अनुगामी।।
अनेक रूप अवतरित भुवन। नैकरूप तब कहें भूजन।।(१०६)

भावार्थ: *धन सम्पदा से युक्त* ***वसुद*** *(२७४) माँ लक्ष्मी (श्री) के पति हैं।* ***वसु*** *(२७५) रूप में वह संत अनुगामियों को धन वितरित करते हैं (सम्पन्नता देते हैं)। भगवान् अनेक रूपों से इस धरा पर अवतरित होते हैं, अतः* ***नैकरूप*** *(२७६) नाम से प्राणी पुकारते हैं।*

बृहत रूप नापे त्रिभुवन। बृहदरूप से बाली प्रसन्न।।
शिपविष्ट हरि गौ में स्थित। दें प्रकाशन प्रकाश जगत।।(१०७)

भावार्थ: *भगवान् के त्रिलोक नापने वाले बृहत रूप को देखकर बाली अत्यंत हर्षित हुए, इसलिए उन्हें* ***बृहदरूप*** *(२७७) नाम से जाना गया। प्रभु के अंदर गौ माता का वास है, अतः वह* ***शिपविष्ट*** *(२७८) हैं। प्रभु का स्वरुप जग को प्रकाशित करता है, इसलिए* ***प्रकाशन*** *(२७९) हैं।*

जो तेज साधक तपस्विन का। वह ओजस्त स्वरुप हरि का।।
हैं हरि बल बलवानों का। हैं द्युतिधर यश शूरों का।।(१०८)

भावार्थः *साधकों के तेज प्रभु **ओजस्त** (२८०) नाम से पुकारे जाते हैं। शूर वीरों के वैभव, बलवानों के बल, प्रभु **द्युतिधर** (२८१) हैं।*

प्रकाशात्मा दें प्रकाश जन । हैं सम रवि ओज प्रतापन ।।
ऋद्ध धर्मबोध से सम्पन्न । स्पष्टाक्षर रहें सदैव प्रसन्न ।।(१०९)

भावार्थः *प्राणियों को प्रकाशित करने वाले (अर्थात ज्ञान देने वाले) **प्रकाशात्मा** (२८२) हैं। सूर्य के समान जिनका तप है वह **प्रतापन** (२८३) हैं। धर्म ज्ञान से संपन्न प्रभु **ऋद्ध** (२८४) हैं। भगवान् सदैव प्रसन्न रहने वाले है, अतः **स्पष्टाक्षर** (२८५) हैं।*

हैं ज्ञानी चतुर्वेद मंत्रण । चन्द्रांशु सम शीतल किरण ।।
समाहित सूर्य सम ज्योति । भास्करद्युति ज्ञान प्रेरति ।।(११०)

भावार्थः *जिनमें चारों वेदों का ज्ञान समाहित है, वह **मंत्रण** (२८६) हैं। शीतल किरणों के समान **चन्द्रांशु** (२८७) हैं (यहाँ संसार ताप रूप सूर्य के ताप से संतप्त चित्त जीवों को शीतल किरणों के समान शीतलता प्रदान करने का उल्लेख किया गया है)। प्रभु में सूर्य के समान तेज समाहित है, और वह ज्ञान प्रेरणा हैं, अतः **भास्करद्युति** (२८८) हैं।*

हुए प्रकट सोम सागर मन्थन । हेतु अमृतांशूद्भव भगवन ।।
भानु तपन सम अंशुमालिन् । करें शशबिन्दु अरोगिन् ।।(१११)

भावार्थः *समुन्द्र मंथन के समय चद्रमा की उत्पति प्रभु **अमृतांशूद्भव** (२८९) के कारण हुई। सूर्य के समान तप वाले भगवान् **भानु** (२९०) हैं। **शशबिन्दु** (२९१) (प्राणियों को) निरोग करते हैं।*

करें इंद्र सुरेश्वर पूजन । करें निरोग औषध भूजन ।।
जगतसेतु तारें भव-पुरन । करें प्रेरित चलें धर्म जन ।।
हैं वह ईश्वर अति पावन । सत्यधर्मपराक्रम भगवन ।।(११२)

भावार्थः *इंद्र से पूजित प्रभु **सुरेश्वर** (२९२) हैं। प्रभु जग को निरोग करते हैं, अतः **औषध** (२९३) हैं। **जगतसेतु** (२९४) भव-सागर से तारने वाले हैं (मोक्ष देने वाले हैं)। प्राणियों*

*को धर्म की राह पर चलने के लिए प्रेरित करने वाले अति पवित्र भगवान् **सत्यधर्मपराक्रम** (२९५) हैं।*

जानें भूत भविष्य वर्तमान । भूतभव्यभवन्नाथ भगवान ।।
हों पवित्र जप पवन ईश । चले समीर पावन निर्देश ।।(११३)

***भावार्थ:** जो भूत, वर्तमान और भविष्य जानते हैं, वह **भूतभव्यभवन्नाथ** (२९६) प्रभु हैं। जिनके जपने से हृदय पवित्र हो जाता है, ऐसे भगवान् **पवन** (२९७) हैं। जिनके आदेश से वायु प्रवाहित होती है वह ईश्वर **पावन** (२९८) हैं।*

है प्रिय अनल आत्मभावना । कामहा करें अंत कामना ।।
पूर्ण करें पूर्ण अभिलाषा । हैं कामकृत संतों की आशा ।।(११४)

***भावार्थ:** आत्मभावना (हृदय की शुद्धिता) प्रभु को अत्यंत प्रिय है, अतः वह **अनल** (२९९) हैं। **कामहा** (३००) भगवान् कामनाओं का अंत करते हैं (यहाँ ऐहिक कामनाओं का उल्लेख है)। **पूर्ण** (३०१) कामनाएं पूर्ण करते हैं। **कामकृत** (३०२) संतो की आशा हैं (अर्थात उनके आधार हैं।)*

है अति सुन्दर कान्त भगवन । पाएं लक्ष्य करें काम अर्चन ।।
पूर्ण करें भक्तों के मन्मन् । रखें जब हिय कामप्रद भगवन ।।(११५)

***भावार्थ:** अति सुन्दर काया के स्वामी **कान्त** (३०३) हैं। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए **काम** (३०४) भगवान् की पूजा की जाती है। जब **कामप्रद** (३०५) प्रभु को हृदय में धारण किया जाता है तब वह भक्तों की कामनाओं को पूर्ण करते हैं।*

हो युग आरम्भ प्रभु के कृत्य । युगादिकृत संसार पूज्य ।।
युग आवर्तन करें नियंत । कहे जग उन्हें युगावर्त अनंत ।।(११६)

***भावार्थ:** विश्व पूजित **युगादिकृत** (३०६) प्रभु के कृत्य से ही युग का प्रारम्भ होता है। प्रभु ही समस्त युगों (सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग) का आवर्तन करतें हैं, अतः संसार उन्हें अनंत **युगावर्त** (३०७) कहता है।*

करें धारण बहु माया भगवन । अतः <u>नैकमाय</u> प्रसिद्ध भुवन ।।
करें गिलन जीव कल्प के अंत । <u>महाशन</u> हरि हैं मोक्ष नियंत ।।(११७)

भावार्थः *अनेक माया को प्रभु धारण करते हैं, अतः* ***नैकमाय*** *(३०८) (नाम से) जगत में प्रसिद्ध हैं। कल्प के अंत में (प्रलय काल) सभी जीवों का आहार बनाकर उन्हें मोक्ष की प्राप्ति कराते हैं, अतः* ***महाशन*** *(३०९) हैं।*

विषय रहित दिव्य श्री भगवन । हैं <u>अदृश्य</u> सम काल दुर्जन ।।
हैं स्व-प्रकाशित सुन्दर रूप । <u>व्यक्तरूप</u> योगी   अनुरूप ।।(११८)

भावार्थः *विषयों से रहित, दुष्टों के लिए काल समान* ***अदृश्य*** *(३१०) दिव्य भगवान् हैं। स्वयं प्रकाशित सुन्दर रूप वाले योगी सदृश्य प्रभु* ***व्यक्तरूप*** *(३११) हैं।*

किए रण वध असंख्य असुर । <u>सहस्त्रजित</u> संगी संत सुर ।।
<u>अनंतजिता</u> चिन्त्य   भगवन । <u>इष्ट</u> हरि करते हवि ग्रहन ।।(११९)

भावार्थः *असंख्य असुरों का रण में संहार करने वाले संतों के मित्र, प्रभु* ***सहस्त्रजित*** *(३१२) हैं। समझने योग्य प्रभु* ***अनंतजिता*** *(३१३) हैं। यज्ञ में अर्पित हवि को ग्रहण करने वाले भगवान्* ***इष्ट*** *(३१४) हैं।*

अन्तर्यामी अमर <u>अविशिष्टा</u> । शिक्षक पंडित हैं <u>शिष्टेष्टा</u> ।।
<u>शिखंडी</u> हैं मोर पंख धारी । पालें   गौ <u>गोपवेशधारी</u> ।।(१२०)

भावार्थः *अन्तर्यामी और अजन्मा प्रभु* ***अविशिष्टा*** *(३१५) हैं। विद्वानों के भी शिक्षक* ***शिष्टेष्टा*** *(३१६) हैं। मस्तक पर मयूर पंख का धारण करने वाले* ***शिखंडी*** *(३१७) प्रभु गौ माँ पालक एवं* ***गोपवेशधारी*** *(३१८) हैं।*

माया से हों भृमित असुर । <u>नहुष</u> सुमर तरें भवसागर ।।
हैं <u>वर्ष</u> शिक्षक ऋषि-धर्म । करें <u>क्रोधहा</u> नाश कुकर्म ।।(१२१)

भावार्थः *(जिनकी) माया से असुर भ्रमित हो जाते हैं और जिनके नाम स्मरण से भवसागर तर जाते हैं, वह* ***नहुष*** *(३१९) हैं। ऋषि-धर्म पालन करने वालों के शिक्षक* ***वर्ष*** *(३२०) हैं। कुकर्म का* ***क्रोधहा*** *(३२१) नाश करते हैं।*

करें कोप हों नष्ट अधर्मी । क्रोधकृत पूजित सतकर्मी ।।
समझो प्रभु कर्ता ही भर्ता । विश्वबाहु संत आश्रयदाता ।।(१२२)

भावार्थः *सभी संतों द्वारा पूजित* ***क्रोधकृत*** *(३२२)प्रभु के क्रोध करने से दुष्टों का संहार होता है। भगवान्* ***कर्ता*** *(३२३) ही भर्ता हैं। संतों के आश्रयदाता* ***विश्वबाहु*** *(३२४) हैं।*

धार शीश की रक्ष वसुंधरा । हुए विख्यात प्रभु महीधरा ।।
हैं अच्युत षष्ट हीन-विकार । प्रथित किए उत्पत्ति संसार ।।(१२३)

भावार्थः *पृथ्वी की रक्षा के लिए प्रभु ने इन्हें शीश पर धारण किया, अतः वह विश्व में* ***महीधरा*** *(३२५) के नाम से विख्यात हुए। छै भाव विकारों से विहीन होने के कारण वह* ***अच्युत*** *(३२६) हैं। (जन्म, अस्तित्व, परिणाम, वर्धन, क्षय और नाश, ये छै विकार शास्त्र वर्णित हैं)। विश्व की उत्पत्ति करने वाले प्रभु* ***प्रथित*** *(३२७) हैं।*

हैं प्राण प्रभु जीवन आधार । प्राणद सुर नर बल आधार ।।
सुत अदिति लिए जन्म भुवन । थे इन्द्रानुज स्वरुप बामन ।।
वासवानुज नापे त्रिभुवन । दिए नृप महाबली स्वस्त्ययन ।।(१२४)

भावार्थः *इस सृष्टि के आधार प्रभु* ***प्राण*** *(३२८) हैं। देव एवं नर के बल आधार भगवान्* ***प्राणद*** *(३२९) हैं। अदिति पुत्र इन्द्र अनुज के रूप में पृथ्वी पर बामन स्वरुप में अवतार लेकर (कश्यप जी द्वारा अदिति से इन्द्र के अनुज के रूप में अवतरित हुए थे)* ***वासवानुज*** *(३३०) नाम से तीनों लोकों को नाप कर सम्राट महाबली का उद्धार किया।*

स्वामी सागर आधार भुवन । अपांनिधि हैं ईश्वर भूजन ।।
हैं स्थित अन्तर्भाग सब जन । अधिष्ठान हैं सगुण भगवन ।।(१२५)

भावार्थ: *पृथ्वी के आधार, समुद्र के स्वामी **अपांनिधि** (३३१) प्राणियों के ईश्वर हैं। समस्त जीवों के अन्तः करण में स्थित **अधिष्ठान** (३३२) प्रभु साकार रूप में अवतरित हुए।*

अप्रमत्त दें न्याय सब कर्मी । प्रभु प्रतिष्ठित अति पराक्रमी ।।
स्कन्द अमर अजर परमेश्वर । स्कन्दधर हैं धर्म के ईश्वर ।।(१२६)

भावार्थ: *सब कर्मियों को न्याय देने वाले प्रभु **अप्रमत्त** (३३३) हैं। महान पराक्रमी भगवान् **प्रतिष्ठित** (३३४) हैं। अजर अमर प्रभु **स्कन्द** (३३५) हैं। धर्म के स्वामी **स्कन्दधर** (३३६) हैं।*

धुर्य सहें सहज भार भूजन । दें फल वरद कर्म सब प्राणिन ।।
चले पवन पा आदेश भगवन । करें निर्देश वेग वायुवाहन ।।(१२७)

भावार्थ: *समस्त जीवों का भार सहजता से **धुर्य** (३३७) सहते हैं। सभी प्राणियों को **वरद** (३३८) कर्मों का फल देते हैं। प्रभु के आदेश से पवन बहती है और **वायुवाहन** (३३९) रूप से वह उसके वेग को निर्देशित करते हैं।*

वासुदेव बसें सुर हृदय । वृद्धभानु ओजित सम सूर्य ।।
जानें सब प्रथम देव भगवन । आदिदेव का करें सब वंदन ।।(१२८)

भावार्थ: *देवों के हृदय में बसने वाले **वासुदेव** (३४०) हैं। सूर्य के समान तेज वाले **वृद्धभानु** (३४१) हैं। प्रथम देव **आदिदेव** (३४२) को सभी प्रणाम करते हैं।*

करें ध्वस्त हरि नगर दुर्जन । कहें पाणिनी पुरंदर भगवन ।।
है शोक उर्मि दोष जानें जन । हैं अशोक दोषहीन वपुन ।।(१२९)

भावार्थ: *प्रभु दुष्टों के नगरों को ध्वस्त करते हैं इसलिए (महर्षि) पाणिनी ने उन्हें भगवान् **पुरंदर** (३४३) नाम से सम्बोधित किया है। शोक एक प्रकार का उर्मि दोष है, भगवान् **अशोक** (३४४) इस दोष से मुक्त हैं।*

तारें जन भव-सागर भगवन । हैं मोक्ष आधार हरि <u>तारन</u> ।।
हरें जन्म मरण भय भगवन । करें <u>तार</u> दूर दुःख भूजन ।।(१३०)

भावार्थ: *भगवान्* ***तारन*** *(३४५) प्राणियों को भव-सागर पार करा मोक्ष का आधार बनते हैं। जन्म मरण की घबराहट को हर* ***तार*** *(३४६) भगवान् प्राणियों के दुखों को दूर करते हैं।*

न कोई बली <u>शूर</u> समान । <u>शौरि</u> वीर वसुदेव संतान ।।
करें <u>जनेश्वर</u> लोक नियंत । करें <u>अनुकूल</u> मंगल सब संत ।।(१३१)

भावार्थ: *भगवान् के समान कोई वीर नहीं, इसलिए वह* ***शूर*** *(३४७) हैं। वीर वासुदेव के पुत्र* ***शौरि*** *(३४८) हैं। विश्व के नियंत्रक* ***जनेश्वर*** *(३४९) हैं।* ***अनुकूल*** *(३५०) (भगवान्) सब संतों का मंगल करते हैं।*

हेतु रक्षा मही लें अवतार । <u>शतावर्त</u> प्रगटे शत बार ।।
है शोभित हरि हस्त नीरज । हैं <u>पद्मी</u> सुभग समान सूरज ।।(१३२)

भावार्थ: *पृथ्वी की रक्षा के लिए प्रभु ने सैकड़ों (बहुत) अवतार लिए, इसलिए वह* ***शतावर्त*** *(३५१) नाम से विख्यात हुए। सूर्य के समान प्रतिभाशाली प्रभु के हाथों में कमल पुष्प शोभायमान है, इसलिए वह* ***पद्मी*** *(३५२) हैं।*

कमल सम हरि के लाल नयन । <u>पद्मनिभेक्षण</u> कहें त्रिभुवन ।।
स्थित कमल सम नाभिका तन । प्रज्ञात नाम <u>पद्मनाभ</u> भगवन ।।(१३३)

भावार्थ: *भगवान् के लाल नेत्र कमल के समान हैं, अतः उन्हें त्रिभुवन* ***पद्मनिभेक्षण*** *(३५३) नाम से बुलाता है। प्रभु के शरीर में कमल रूपी नाभिका स्थित है, इसलिए उन्हें* ***पद्मनाभ*** *(३५४) नाम से जाना जाता है।*

अति सुन्दर नियंत के नयन । हैं <u>अरविंदाक्ष</u> कमल लोचन ।।
स्थित हिय रूप कमल के मध्य । त्रिभुवन में <u>पद्मगर्भ</u> पूज्य ।।(१३४)

भावार्थ: *भगवान् के अति सुन्दर चक्षु कमल समान हैं, अतः वह **अरविंदाक्ष** (३५५) हैं। हृदय रूपी कमल के मध्य में स्थित **पद्मगर्भ** (३५६) तीनों लोकों में पूज्य हैं।*

सत सतकर्मा दें अन्न भूजन । हैं कर्म शरीरभृत पावन ।।
स्वामी विपुल विभूति विधि । दें महर्द्धि जन रिद्धि सिद्धि ।।(१३५)

भावार्थ: *प्राणियों को अन्न प्रदान करने वाले सत्य (कर्मी) **सतकर्मा** (३५७) हैं। पवित्र कर्म करने वाले **शरीरभृत** (३५८) हैं। रिद्धि सिद्धि को प्रदान करने वाले विपुल विभूति के स्वामी **महर्द्धि** (३५९) हैं।*

प्रपंच रूप हैं रिद्ध भगवन । हैं वृद्धात्मा हरि अजन्मन् ।।
महाक्ष के हैं सहस्त्र लोचन । ध्वज गरुड़ध्वज गरुड़ चिन्ह ।।(१३६)

भावार्थ: *प्रपंच रूप होने से प्रभु को **रिद्ध** (३६०) सम्बोधित किया जाता है। प्रभु का रूप अजन्मा है, अतः वह **वृद्धात्मा** (३६१) हैं। हरि के सहस्त्र (अनगिनित) नेत्र हैं, अतः **महाक्ष** (३६२) हैं। प्रभु की ध्वजा गरुण के चिह्न वाली है, इसलिए वह **गरुड़ध्वज** (३६३) हैं।*

महायशी अतुल्य परमात्मा । हैं अतुल अमर अजर आत्मा ।।
अमर शरीर तुम सर्वभूता । हैं दृढ़ संकल्पी शरभ अजेता ।।(१३७)

भावार्थ: *अतुलनीय अजर अमर आत्मा के स्वामी महायशी प्रभु **अतुल** (३६४) हैं। दृढ़ संकल्पी अमरत्व प्राप्त अजेय सर्व व्यापी भगवान् **शरभ** (३६५) हैं।*

हैं हरि भीम महाबलशाली । समयज्ञ सम द्रष्ट वैभवशाली ।।
यज्ञ हवि होती अति पावन । करें ग्रहण हविर्हरि भगवन ।।(१३८)

भावार्थ: *महाबलशाली प्रभु **भीम** (३६६) हैं। अत्यंत वैभवशाली सभी को समान दृष्टि से देखने वाले भगवान् **समयज्ञ** (३६७) हैं । पवित्र यज्ञ की हवि को स्वीकार करने वाले प्रभु **हविर्हरि** (३६८) हैं।*

हैं परम ज्ञान के ज्ञाता दिव्य । कहे जग उन्हें <u>सर्वलक्षणलक्षन्य</u> ।।
<u>लक्ष्मीवान</u> के बसें श्री हिय । दें <u>समितिज्जय</u> रण में विजय ।।(१३९)

भावार्थ: *प्रभु श्रेष्ठ ज्ञान के ज्ञाता हैं, अतः उन्हें विश्व* ***सर्वलक्षणलक्षन्य*** *(३६९) नाम से पुकारा जाता है। श्री (लक्ष्मी) को अपने ह्रदय में धारण करते हैं, इसलिए* ***लक्ष्मीवान*** *(३७०) हैं। युद्ध में* ***समितिज्जय*** *(३७१) विजय दिलाने वाला हैं।*

हैं अविनासी <u>विक्षर</u> भगवन । धरें <u>रोहित</u> रोहू वर्पन् ।।
दें हरि <u>मार्ग</u> आंनद भूजन । करें वंदन <u>हेतु</u> हेतु मोचन ।।(१४०)

भावार्थ: *जिनका कभी नाश नहीं होता (अविनासी), ऐसे प्रभु* ***विक्षर*** *(३७२) हैं। रोहू मत्सय के रूप में अवतरित हुए, इस कारण उन्हें* ***रोहित*** *(३७३) नाम से जाना जाता है। प्राणियों को आनंद देने वाले प्रभु* ***मार्ग*** *(३७४) हैं।* ***हेतु*** *(३७५) की वन्दना करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है।*

बांधे माधव यशोदा खम्भ । <u>दामोदर</u> हैं सत जन स्ताम्भ ।।
सहें <u>सह</u> भूजन के विकार । हैं हरि <u>महीधर</u> पर्वताकार ।।(१४१)

भावार्थ: *संतों के आधार प्रभु को जब (माँ) यशोदा ने खम्भे से बांधा तो उन्हें* ***दामोदर*** *(३७६) नाम से सम्बोधित किया गया। प्राणियों (अपने भक्तों) के विकारों को सहन करने के कारण उनका नाम* ***सह*** *(३७७) पड़ा। प्रभु का आकार पर्वत रूप होने के कारण (अति विशाल) उन्हें* ***महीधर*** *(३७८) नाम से बुलाया गया।*

जो भाग्यवान और पुण्यवत् । <u>महाभाग</u> नाम महाभगवत ।।
जैसे चले समीर तीव्र गति । चले <u>वेगवान</u> मन द्रुत गति ।।(१४२)

भावार्थ: *जो भाग्यशाली और पुण्यवत हैं, ऐसे महाभगवत को* ***महाभाग*** *(३७९) नाम से पुकारा गया है। जिस प्रकार वायु अत्यंत तीव्र गति से बहती है उसी प्रकार* ***वेगवान*** *(३८०) का मन अत्यंत वेग से प्रवाहित आता है।*

हो मग्न जग उदर काल प्रलय । प्रभु <u>अमितासन</u> अति दिव्य ।।
हैं <u>उद्भव</u> शासक सब भूजन । करें पापी भयभीत <u>क्षोभन</u> ।।(१४३)

भावार्थः *प्रलय के समय दिव्य प्रभु* ***अमितासन*** *(३८१) के उदर में संसार समाहित हो जाता है। पृथ्वी के समस्त जीवों के स्वामी होने के कारण उन्हें* ***उद्भव*** *(३८२) नाम से पुकारा जाता है। पापियों को भयभीत करने वाले भगवान् का नाम* ***क्षोभन*** *(३८३) है।*

जिनके पूजन से हों पवित्र । वह हरि <u>देव</u> स्थित सर्वत्र ।।
करें वास श्री उदर नारायन । <u>श्रीगर्भ</u> नाम प्रसिद्ध भुवन ।।(१४४))

भावार्थः *सर्वत्र स्थित प्रभु* ***देव*** *(३८४) का पूजन करने से पवित्र होते हैं। श्री (माँ लक्ष्मी) प्रभु के उदर में वास करती हैं, अतः उन्हें* ***श्रीगर्भ*** *(३८५) के नाम से बुलाया जाता है।*

<u>परमेश्वर</u> प्रभु परम ईश । करें जग निर्माण हरि <u>करणीश</u> ।।
विश्व सृजन नियंत्रण कर्ता । <u>कारण</u> हरि हैं जग के भर्ता ।।(१४५)

भावार्थः *परम ईश प्रभु* ***परमेश्वर*** *(३८६) हैं।* ***करणीश*** *(३८७) प्रभु इस जग के निर्माण हेतु हैं। आप ही विश्व का निर्माण करते हैं एवं पोषण करते हैं, अतः* ***कारण*** *(३८८) हैं।*

रचें हरि भुवन विचित्र सदा । <u>विकर्त</u> प्रभु हैं वास्तुविदा ।।
<u>गहन</u> समान न कृत्य क्षमता । करें दूर <u>गुह</u> माया ममता ।।(१४६)

भावार्थः *प्रभु वास्तुकार होने से सदैव विचित्र भुवनों की रचना करते हैं, अतः* ***विकर्त*** *(३८९) हैं। कोई भगवान् की कृत्य क्षमता को स्पर्श नहीं कर सकता, इसलिए* ***गहन*** *(३९०) हैं। माया ममता से अपने स्वरुप को आवर्तित कर लेते हैं (ढक लेते हैं), अतः* ***गुह*** *(३९१) हैं।*

देें कर्म ज्ञान <u>व्यवसाय</u> भगवन । <u>व्यवस्थान</u> करें पोषण भुवन ।।
मिले जन अंत काल पद्मपाद । करें जब पूजन <u>संस्थान</u> पाद ।।(१४७)

भावार्थः *प्रभु कर्म ज्ञान देने वाले गुरु हैं, अतः* ***व्यवसाय*** *(३९२) हैं। जग की पूर्ति करते हैं (व्यवस्था करते हैं), अतः उन्हें* ***व्यवस्थान*** *(३९३) कहा जाता है। मरण पश्चात जिनके पूजन करने से कमल रूपी चरणों में निवास मिलता है, वह* ***संस्थान*** *(३९४) हैं।*

देंस्थानद फल कर्म अनुरूप । हैं ध्रुव अक्षय अटल स्वरूप ।।
चहुँ ओर है जिनकी प्रसिद्धि । है क्षमा रीति हरि परर्द्धि ।।(१४८)

भावार्थः *कर्मों के अनुसार जो फल देते हैं, वह* ***स्थानद*** *(३९५) हैं। प्रभु अक्षय अटल हैं, अतः* ***ध्रुव*** *(३९६) हैं। ऐसे भगवान् जिनकी क्षमा ही रीति है, तथा जिनकी प्रसिद्धि चहुं ओर है, वह* ***परर्द्धि*** *(३९७) हैं।*

हैं हरि परम सत्य के वक्ता । परमस्पष्ट धर्म अधिवक्ता ।।
रहें तुष्ट त्रप्त मय-आनंद । हरि पुष्ट दें जग परम आनंद ।।(१४९)

भावार्थः *धर्म एवं सत्य के अधिवक्ता प्रभु* ***परमस्पष्ट*** *(३९८) हैं। सदैव तृप्त रहने वाले त्रप्तानंद प्रभु* ***तुष्ट*** *(३९९) हैं। परमानंद में रहने वाले हर प्रकार से पूर्ण प्रभु* ***पुष्ट*** *(४००) हैं।*

हो ज्ञान सत जिनके सुमिरन । वह शुभेक्षण हैं रिपु दुर्जन ।।
रमणें योगी नित्य स्वरूप । राम नृप दशरथ प्रतिरूप ।।(१५०)

भावार्थः *जिनके स्मरण से सत्य का ज्ञान होता है तथा जो दुष्टों के शत्रु हैं, वह* ***शुभेक्षण*** *(४०१) हैं। जिन नित्यस्वरूप भगवान् में योगी रमण करते हैं, एवं जो (अवध नरेश) दशरथ जी के प्रतिरूप हैं (उनके पुत्र हैं) उनका नाम* ***राम*** *(४०२) है।*

प्रलय काल समाहित आत्मा । विराम प्रभु हैं परमात्मा ।।
विराज करें न सेवन विषय । दें निर्मोचन हरि अति पूज्य ।।(१५१)

भावार्थः *प्रलय काल में जिनमें आत्मा समाहित हो जाती है ऐसे परमात्मा प्रभु* ***विराम*** *(४०३) हैं। विषय सेवन में जिन्हें राग नहीं है तथा जो अति प्रिय भगवान मोक्ष प्रदान करते हैं, वह* ***विराज*** *(४०४) हैं।*

हो पवित्र तन नेय भजन से । दें विश्व नेतृत्व रुप नय से ।।
हैं आत्मनिर्भर अनय नियंत । न नृप कोई अतिरिक्त अनंत ।।(१५२)

भावार्थ: ***नेय*** *(४०५) भगवान् के जप से शरीर पवित्र हो जाता है।* ***नय*** *(४०६) समस्त संसार के नेता हैं।* ***अनय*** *(४०७) भगवान् स्वतंत्र हैं।उनके अतिरिक्त हमारा कोई स्वामी नहीं है।*

वीर करें कार्य सुचेष्ट । समान न कोई शक्तिमश्रेष्ठ ।।
धर्म हरि सत बोधन दाता । धर्मविदुत्तम ग्रंथ ज्ञाता ।।(१५३)

भावार्थ: *महाबलशाली भगवान्* ***वीर*** *(४०८) सदैव शुभ कर्म करते हैं।* ***शक्तिमश्रेष्ठ*** *(४०९) के समान कोई नहीं है। प्रभु सत्य का ज्ञान कराते हैं, अतः* ***धर्म*** *(४१०) हैं। ग्रंथों के ज्ञाता हैं, इसलिए* ***धर्मविदुत्तम*** *(४११) हैं।*

गति अवरोधा वैकुण्ठ अनंत । अमापित सभी तुला नियंत ।।
हरि आदिजन्म दें फल सुकर्म । करें नाश पुरुष दुष्कर्म ।।(१५४)

भावार्थ: *गति को अवरोध करने वाले (जगत के प्रारम्भ में बिखरे हुए जीवों को परस्पर मिलाकर उनकी गति को रोकने वाले) प्रभु जिनका कोई मापदंड नहीं है, वह* ***वैकुण्ठ*** *(४१२) हैं। प्रभु* ***आदिजन्म*** *(४१३) हैं (जिनके जन्म काल का कोई पता नहीं है) जो शुभ कर्मों का फल देते हैं। दुष्कर्मों को नष्ट करने वाले प्रभु* ***पुरुष*** *(४१४) हैं।*

वायु विहीन से हो जग अंत । पवन रूप हैं प्राण नियंत ।।
करें अंत प्राणद काल प्रलय । हैं प्रणव प्रभु अति पूज्य ।।(१५५)

भावार्थ: *वायु विहीन (वातावरण) से जीव का अंत हो जाता है, उनके लिए पवन रूप प्रभु* ***प्राण*** *(४१५) हैं। प्रलयकाल में सभी जीवों को अंत करने वाले (मुक्ति देने वाले) प्रभु* ***प्राणद*** *(४१६) हैं। भगवान् अति पूजनीय हैं, अतः* ***प्रणव*** *(४१७) हैं।*

प्रपंच रूप से विस्तृत भगवन । पृथु नाम प्रसिद्ध ग्रंथन ।।
जन्मे ब्रह्मा हरि के वीर्य । हिरण्डयगर्भ सब जग पूज्य ।।(१५६)

भावार्थ: *प्रपंच रूप से विस्तृत होने के कारण प्रभु को* ***पृथु*** *(४१८) नाम से सभी ग्रंथों ने सम्बोद्धित किया है। पूज्य हरि ने अपने शुक्र से ब्रह्म देव को उत्पन्न किया, अतः वह* ***हिरण्डयगर्भ*** *(४१९) नाम से जगत में पूज्य हैं।*

किए वध रण रिपु सुर संत। हैं शत्रुघ्न हरि धर्म नियन्त।।
जिनके वर से सफल सब काम। व्याप्त सर्वभूत सत नाम।।(१५७)

भावार्थ: *संत एवं देवताओं के शत्रुओं का रण में वध कर प्रभु धर्म को नियमित करते हैं, अतः* ***शत्रुघ्न*** *(४२०) हैं। सर्व-व्यापी सत्य नाम भगवान् के वर से सभी कार्य सफल होते हैं, इसीलिये उन्हें* ***व्याप्त*** *(४२१) नाम से पुकारा गया है।*

हैं हरि वायु पावन गंध। अधोक्षज के मध्य भू नभ अंग।।
हैं नियंत्रक ऋतु षष्ठ काल। सुदर्शन करें नष्ट दुर्काल।।(१५८)

भावार्थ: *प्रभु पुन्य गंध हैं, इसलिए* ***वायु*** *(४२२) हैं। (उद्योगपर्व में ऐसा वर्णित है कि) भगवान् के अंग आकाश और पृथ्वी के मध्य में स्थित हैं, इसलिए* ***अधोक्षज*** *(४२३) हैं। छै मौसम (वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत एवं शिशिर) के नियंत्रण कर्ता हैं, अतः* ***ऋतु*** *(४२४) हैं।* ***सुदर्शन*** *(४२५) भगवान् बुरे समय का नाश होता है।*

ज्ञान रूप प्रभु हैं कलना। काल करें सब जीवन गणना।।
स्थित नभ हिय मध्य श्रेष्ठी। परमेश्वर हरि हैं परमेष्ठी।।(१५९)

भावार्थ: *ज्ञान स्वरुप प्रभु* ***कलना*** *(४२६) हैं। समस्त जीवों की गणना करते हैं, अतः* ***काल*** *(४२७) हैं। हृदय आकाश के मध्य में स्थित रहने वाले अत्यंत श्रेष्ठ परमेश्वर* ***परमेष्ठी*** *(४२८) हैं।*

करें ग्रह भक्तों की अर्चन। परिग्रह हरि हैं अति पावन।।
हों भयभीत असुर देख उग्र। करें पालन वह विधि समग्र।।(१६०)

भावार्थ: *भक्तों की अर्चन स्वीकार करने वाले अत्यंत पवित्र भगवान्* ***परिग्रह*** *(४२९) हैं। जिनसे भयभीत होकर असुर (सृष्टि के) नियमों का पालन करते हैं, उन प्रभु का नाम* ***उग्र*** *(४३०) हैं।*

करें <u>संवत्सर</u> वास दैह्य जन । <u>दक्ष</u> हरि हैं सब कार्य निपुन ।।
तरें भव सागर जिनका लक्ष्य । हैं <u>विश्राम</u> उनके अति प्रिय ।।(१६१)

भावार्थ: *जीवों की आत्मा में जो वास करते हैं, वह* ***संवत्सर*** *(४३१) हैं।* ***दक्ष*** *(४३२) सब कार्यों में निपुण हैं । भवसागर तरना जिनका लक्ष्य है, उनको* ***विश्राम*** *(४३३) अति प्रिय हैं (क्योंकि वह उनके लक्ष्य की पूर्ति करते हैं)।*

हैं समर्थ सब कर्म भगवान । दें <u>विश्वदक्षिण</u> सबको निर्वान ।।
करें समाहित सत भूजन में । हैं <u>विस्तार</u> विख्यात धरा में ।।(१६२)

भावार्थ: ***विश्वदक्षिण*** *(४३४) भगवान् सर्व कार्य में समर्थ हैं और उनके स्मरण से मोक्ष की प्राप्ति होती है। जीवों में सत्य समाहित करने वाले प्रभु* ***विस्तार*** *(४३५) पृथ्वी पर प्रसिद्ध हैं।*

हैं अचल स्थिर गुणमय भगवन । पाएं लक्ष्य कर <u>स्थावर</u> पूजन ।।
हैं स्थित सदा सकल अवस्था । <u>स्थाणु</u> प्रभु संत की आस्था ।।(१६३)

भावार्थ: *अचल स्थिर और गुणमय प्रभु* ***स्थावर*** *(४३६) के पूजन से लक्ष्य की प्राप्ति होती है (प्राणियों का जीवन लक्ष्य मोक्ष लेना है)। सदैव स्थिर सगुण अवस्था में रहने वाले प्रभु* ***स्थाणु*** *(४३७) संतों की आस्था हैं।*

दें धर्म ज्ञान शिक्षा भगवन । हैं <u>प्रमाण</u> प्रवक्ता उल्लसन ।।
बिन कारण हरि कृपा कर्ता । <u>बीजमव्ययम</u> सम लय मधुरता ।।(१६४)

भावार्थ: *धर्म ज्ञान के शिक्षक प्रभु प्रसन्नता के प्रवक्ता हैं (अतः प्रसन्नता फैलाते हैं), अतः* ***प्रमाण*** *(४३८) हैं। बिना कारण ही अत्यंत कृपा करने वाले भगवान् का* ***बीजमव्ययम*** *(४३९) संगीत की तरह लयमय है।*

हैं विश्व सुख स्वरूप भगवन । करें पावन हरि अर्थ पूजन ।।
निःस्वार्थ हरि प्रेम मूर्ति । अनर्थ प्रभु शान्ति मूर्ति ।।(१६५)

भावार्थः *सुख के स्वरुप पवित्र **अर्थ** (४४०) भगवान् का सब पूजन करते हैं। निःस्वार्थ ही प्रेम बरसाने वाले प्रभु **अनर्थ** (४४१) प्रेम और शान्ति के अवतार हैं।*

महाकोश प्रभु अन्नदाता । महाभोग हरि आनंददाता ।।
हैं हरि स्वामी समस्त सम्पदा । पूजें महाधन जन सर्वदा ।।(१६६)

भावार्थः *अन्नदाता प्रभु **महाकोश** (४४२) हैं। आनंद को प्रदान करने वाले भगवान् **महाभोग** (४४३) हैं। सर्व पूजित **महाधन** (४४४) हरि श्री (सम्पदा) के स्वामी हैं।*

द्वेषहीन अनिर्वेद भगवंता । अनिर्विण्ड़ तब नाम नियन्ता ।।
अनल सिर रवि चंद्र हैं नयन । स्थविष्ठ हरि वैराज निरूपन ।।(१६७)

भावार्थः *भगवान् द्वेषहीन एवं सकारात्मक हैं, अतः उन्हें **अनिर्विण्ड़** (४४५) नाम से जाना जाता है। विराट रूप (वैराज रूप) प्रभु **स्थविष्ठ** (४४६) का अग्नि शिर तथा सूर्य और चन्द्रमा नेत्र हैं।*

अभु हैं अजर अमर भगवन । हैं धर्मयूप हरि धर्म चरन ।।
स्वीकारें यज्ञ हवि भगवान् । महामख हरि दें जीव निर्वान ।।(१६८)

भावार्थः *अजर, अमर प्रभु **अभु** (४४७) हैं। हरि का अवतार धर्म स्तम्भ की स्थापना के लिए हुआ है, अतः **धर्मयूप** (४४८) हैं। प्रभु यज्ञ की हवि स्वीकार करते हैं और निर्वाण प्राप्त कराते हैं, अतः **महामख** (४४९) हैं।*

हैं नक्षत्रनेमि तारक द्रष्टा । नक्षत्री चंद्र सम प्रतिष्ठा ।।
जो क्षमाशील सम राम भगवन । हैं क्षम् समर्थ दें लक्ष्य भूजन ।।(१६९)

भावार्थः *प्रभु खगोल शास्त्र ज्ञाता हैं, अतः **नक्षत्रनेमि** (४५०) हैं। चंद्र के सामान प्रतिष्ठा वाले भगवान् **नक्षत्री** (४५१) हैं। श्री राम के समान क्षमाशील प्रभु जो प्राणियों को लक्ष्य तक पहुंचाते हैं (मोक्ष दिलाते हैं), उन प्रभु का नाम **क्षम** (४५२) है।*

हों अघहीन जब करें ध्यान । दें क्षाम आत्म-भाव संज्ञान ।।
हो सृजन सृष्टि हरि चेष्टा । हैं समीहन सत पथ के द्रष्टा ।।(१७०)

भावार्थः *आत्म-भाव संज्ञान देने वाले **क्षाम** (४५३) प्रभु के ध्यान से समस्त पापों का नाश होता है। जिनके प्रयास से सृष्टि की रचना होती है एवं जो सत्य मार्ग दिखाने वाले हैं, उन भगवान् को **समीहन** (४५४) कह कर पुकारा गया है।*

यज्ञ हरि स्वयं यज्ञ स्वरूप । हैं पूज्यनीय इज्य सत रूप ।।
मिले मोक्ष जब करें हरि पूजा । महेज्य सम नहीं कोई दूजा ।।(१७१)

भावार्थः *हरि स्वयं यज्ञ स्वरुप हैं, अतः **यज्ञ** (४५५) हैं। सत्यरूप अति पूज्य प्रभु **इज्य** (४५६) हैं। जिनके समान कोई दूसरा नहीं एवं जिनके पूजन से मोक्ष प्राप्ति होती है, ऐसे प्रभु **महेज्य** (४५७) हैं।*

करें सुमर हों पूर्ण लिप्सा । हैं सत क्रतु संतों की आशा ।।
धर्म रक्षक प्रभु हैं सत रूप । दें ज्ञान सत्र विधि अनुरूप ।।(१७२)

भावार्थः *सभी संतों की आशा सत्य **क्रतु** (४५८) के स्मरण से समस्त मनोरथ पूर्ण होते हैं। सत्य रूप, धर्म रक्षक, न्यायदाता **सत्र** (४५९) भगवान् ज्ञान का वितरण करते हैं (ज्ञान की शिक्षा देते हैं)।*

संत जब जाएं शरण नियंता । हरें संतागति उनकी चिंता ।।
हैं व्यापक सर्वदर्शी भगवन । दें विमुक्तात्मा निर्मोचन ।।(१७३)

भावार्थः *जब संत प्रभु के शरणागत हो जाते हैं तो **संतागति** (४६०) उनकी सभी चिंताओं का नाश करते हैं। सर्व व्यापी प्रभु **सर्वदर्शी** (४६१) हैं। **विमुक्तात्मा** (४६२) मोक्ष देते हैं।*

हैं सर्वज्ञ सर्व ज्ञान स्वरूप । हैं ज्ञानमुत्तम गुरु अनुरूप ।।
दें अभयदान जब जाएं शरन । सुव्रत नियंत प्रसिद्ध भुवन ।।(१७४)

भावार्थः *सर्व ज्ञानी प्रभु* ***सर्वज्ञ*** *(४६३) हैं। गुरु अनुरूप (ज्ञान देने वाले भगवान्)* ***ज्ञानमुत्तम*** *(४६४) हैं। शरण में आने वाले को अभयदान देने वाले* ***सुव्रत*** *(४६५) जग प्रसिद्ध हैं।*

सुन्दर मुख नयन विशाला । सुमुख कंठ में शोभित माला ।।
सर्वव्यापी सूक्ष्म लघु शरीर । सुघोष नाद सम वेग समीर ।।(१७५)

भावार्थः *विशाल नेत्र और सुन्दर मुख वाले प्रभु* ***सुमुख*** *(४६६) के कंठ में माला (वैजयंती) शोभायमान है। सर्वव्यापी (भगवान्)* ***सूक्ष्म*** *(४६७) अत्यंत लघु शरीर के हैं। तीव्र वायु के समान गंभीर घोष करने वाले भगवान्* ***सुघोष*** *(४६८) हैं।*

सुमिरें सुखद हो सुख सदा । सुहृत उदार हरें आपदा ।।
मन मोहक सुन्दर स्वरूप । मनोहर हरि ऐश्वर्य रूप ।।(१७६)

भावार्थः सुखद *(४६९) प्रभु के स्मरण से सदैव सुखता का अनुभव होता है। उदार* ***सुहृत*** *(४७०) आपदाओं का हरण करते हैं। मन को मोहित करने वाले सुन्दर और ऐश्वर्य स्वरुप के स्वामी प्रभु* ***मनोहर*** *(४७१) हैं।*

जितक्रोध क्रोधहीन भगवन । दें सन्देश शान्ति सब संतजन ।।
हैं जो मित्र संत रिपु दुर्जन । किए वध वीरबाहु असुरजन ।।
करें जर्जर असुर जो भगवन । कहें उन्हें विदारण भूजन ।।(१७७)

भावार्थः *सब संतगणों को शान्ति का सन्देश देने वाले, क्रोध को जीतने वाले प्रभु* ***जितक्रोध*** *(४७२) हैं। जो दुर्जनों के शत्रु और संतों के मित्र हैं तथा असुर योद्धाओं को मारने वाले हैं, वह भगवान्* ***वीरबाहु*** *(४७३) हैं। असुरों को निहत करने वाले प्रभु को विश्व* ***विदारण*** *(४७४) कह कर सम्बोधित करता है।*

सुमरत नाम न व्यापे माया । हो भज <u>स्वापन</u> पावन काया ।।
हैं स्वामी दुःखी दीन जन । समझो <u>स्ववश</u> स्वतंत्र भगवन ।।(१७८)

भावार्थ: *जिनके नाम स्मरण से माया नहीं व्याप्ती एवं तन पवित्र हो जाता है, वह भगवान्* ***स्वापन*** *(४७५) हैं। सब दुःखी दीनों के स्वामी एवं स्वभाव से स्वतंत्र, भगवान्* ***स्ववश*** *(४७६) हैं।*

सर्वगत <u>व्यापी</u> परमात्मा । असीमित आकार <u>नैकात्मा</u> ।।
<u>नैककर्मक्रत</u> सब कर्म कर्ता । हैं जनन पालन संहार कर्ता ।।(१७९)

भावार्थ: *प्रभु की आत्मा सर्वगत है, अतः वह* ***व्यापी*** *(४७७) हैं। भगवान् के आकार को मापा नहीं जा सकता, इसलिए* ***नैकात्मा*** *(४७८) हैं। सृष्टि के समस्त कार्य - जनन, पालन एवं संहार,* ***नैककर्मक्रत*** *(४७९) प्रभु द्वारा ही संचालित होते हैं।*

बसे ब्रह्माण्ड हरि के उदर । करें <u>वत्सर</u> वध असुर समर ।।
करें प्रेम संत <u>वत्सल</u> भगवन । करें समर्थ <u>वत्सी</u> जग पालन ।।(१८०)

भावार्थ: *जो रण में दैत्यों का संहार करते हैं तथा जिनके उदर में ब्रह्माण्ड बसता है, वह प्रभु* ***वत्सर*** *(४८०) हैं। संत प्रेमी भगवान्* ***वत्सल*** *(४८१) हैं। जग का पोषण करने वाले समर्थ (भगवान्)* ***वत्सी*** *(४८२) हैं।*

हैं <u>रत्नगर्भ</u> सम सागर रत्न । हैं <u>धनेश्वरा</u> हरि धन सम्पन्न ।।
लिए जन्म हरि धर्म स्थापन । <u>धर्मगुप</u> हेतु जन्म धर्म रक्षन ।।(१८१)

भावार्थ: *प्रभु ही रत्नों से भरे सागर* ***रत्नगर्भ*** *(४८३) हैं। धन धान्य के स्वामी भगवान्* ***धनेश्वरा*** *(४८४) हैं। धर्म के स्थापन एवं रक्षा के लिए जो अवतरित हुए प्रभु* ***धर्मगुप*** *(४८५) हैं।*

हैं धर्म अधर्म रहित भगवन । जन्मे <u>धर्मकृत</u> हेतु संत रक्षन ।।
करें <u>धर्मी</u> हरि धर्म धारन । <u>सत</u> ब्रह्म <u>असत</u> प्रपंच वर्पन् ।।(१८२)

भावार्थः *धर्म एवं अधर्म से रहित भगवान्* ***धर्मकृत*** *(४८६) संतों की रक्षा के लिए अवतरित हुए हैं। धर्म की धुरी धारण करने वाले* ***धर्मी*** *(४८७) हैं।* ***सत*** *(४८८) ब्रह्म हैं। प्रभु के प्रपंच रूप को* ***असत*** *(४८९) नाम से सम्बोधित किया गया है।*

हैं अक्षर कूटस्थ अविनासी । हैं क्षर नर सुर प्रन्यासी ।।
रहते लुप्त सजीव वासना । हैं अविज्ञाता रहित कामना ।।(१८३)

भावार्थः *(प्रभु) अविनासी और कूटस्थ हैं, अतः* ***अक्षर*** *(४९०)हैं।* ***क्षर*** *(४९१) देवताओं और प्राणियों की आस्था हैं। जीव भोग वासना में लिप्त रहते हैं, प्रभु इस से अलिप्त (कामना रहित) हैं, अतः* ***अविज्ञाता*** *(४९२) हैं।*

है तेज हरि सम सूर्य किरण । सहस्त्रांशु हैं अति ऊष्ण ।।
करें जो आत्म ज्ञान चेतन । करें वह विधाता जग सृजन ।।(१८४)

भावार्थः सहस्त्रांशु *(४९३) प्रभु का तेज सूर्य की किरण के समान अत्यंत ऊष्ण है। इस विश्व के जन्म दाता एवं आत्मिक ज्ञान को चेतन करने वाले प्रभु* ***विधाता*** *(४९४) हैं।*

रचे शास्त्र प्राज्ञ नारायण । हैं वह नित्य सिद्ध कृतलक्षण ।।
प्रतिभा समान सूर्य मंडल । गभस्तिनेमि से जगमग अंचल ।।(१८५)

भावार्थः *शास्त्रों के रचयिता प्राज्ञ नित्यसिद्ध प्रभु* ***कृतलक्षण*** *(४९५) हैं। सूर्य मंडल समान प्रतिभा वाले भगवान्* ***गभस्तिनेमि*** *(४९६) इस मंडल को प्रकाशित करते हैं।*

हैं अंग हरि सत्तवस्थ पावन । सिंह बलशाली समर्थ भगवन ।।
हैं ईश्वर सुर असुर भूजन । भूतमहेश्वर हैं प्रिय संतन ।।(१८६)

भावार्थः सत्तवस्थ *(४९७) हरि के अंग पवित्र हैं।* ***सिंह*** *(४९८) समर्थ तथा बलशाली भगवान् हैं। सुर, असुर, नर के ईश्वर* ***भूतमहेश्वर*** *(४९९) संतों के प्रिय हैं।*

हैं जग पूजनीय पुरातन । आदिदेव प्रभु अति पावन ।।
उत्कृष्ट प्रभु हैं महादेव । देवेश नियंत्रक सभी देव ।।(१८७)

भावार्थ: *जगत पूज्य पुरातन प्रभु* ***आदिदेव*** *(५००) अति पवित्र हैं। उच्च कोटि के देव होने के कारण प्रभु* ***महादेव*** *(५०१) हैं। सभी देवताओं को नियंत्रित करने वाले (भगवान्)* ***देवेश*** *(५०२) हैं।*

सुर पालक नियंत शासक । देवभ्रदगुरु हरि हैं रक्षक ।।
हैं भव बंधन रहित भगवन । उत्तर नाम प्रसिद्ध भुवन ।।(१८८)

भावार्थ: *देवताओं के पालक, स्वामी, रक्षक और नियंत्रक प्रभु* ***देवभ्रदगुरु*** *(५०३) हैं। भव बंधनों से मुक्त लोक में प्रसिद्ध प्रभु* ***उत्तर*** *(५०४) हैं।*

गोविन्द करें गौ भू पालन । करें गोपति गोप वेश धारन ।।
रक्षक जगत नाम है गोप्ता । ज्ञानगम्य ग्रंथों के वक्ता ।।(१८९)

भावार्थ: *गौ (माँ) और पृथ्वी के पालन कर्ता प्रभु* ***गोविन्द*** *(५०५) हैं। गोप वेश धारण करने के कारण हरि को* ***गोपति*** *(५०६) कहा गया है। जगत की रक्षा करने वाले* ***गोप्ता*** *(५०७) हैं। ग्रंथों का ज्ञान देने वाले* ***ज्ञानगम्य*** *(५०८) हैं।*

प्रथम पुरुष नाम पुरातन । शरीरभूतभ्रद करें तन पोषन ।।
विश्व पालक हरि हैं भोक्ता । कपीन्द्र कपि वराह देवता ।।(१९०)

भावार्थ: *प्रथम पुरुष होने के कारण (जिनकी आयु कोई नहीं जानता)* ***पुरातन*** *(५०९) नाम से सम्बोद्धित किया गया है। जीवों के शरीर का पोषण करने वाले* ***शरीरभूतभ्रद*** *(५१०) हैं। विश्व का पालन करने वाले हरि* ***भोक्ता*** *(५११) हैं। कपि, वराह (आदि) के स्वामी* ***कपीन्द्र*** *(५१२) हैं।*

सत पावन यज्ञ हवि दक्षिणा । करें स्वीकार भूरिदक्षिणा ।।
देव रूप से करें सोम पान । सोमप हरि दें फल शुभ दान ।। (१९१)

भावार्थ: *सत्य एवं पवित्र यज्ञ हवि को दक्षिणा के रूप में* ***भूरिदक्षिणा*** *(५१३) स्वीकार करते हैं।* ***सोमप*** *(५१४) भगवान् देव रूप से सोम पान करते हैं और दान का शुभ फल देते हैं।*

किए हरण सुधा समुद्र मंथन । किए सुर <u>अमृतप</u> हरि वितरन ।।
हैं महादेव अति पूज्य भूजन । करें हरि <u>सोम</u> संग उमा पूजन ।।(१९२)

भावार्थ: *समुद्र मंथन के समय अमृत हरण कर* ***अमृतप*** *(५१५) भगवान् ने देवताओं को वितरित किया। पार्वती सहित सभी प्राणी अति पूजनीय* ***सोम*** *(५१६) महादेव की पूजा करते हैं (महादेव और सोम एक ही रूप हैं)।*

पाए विजय अनेक रण भगवन । कहें उन्हें <u>पुरुजित</u> भूजन ।।
विश्वरूप हैं <u>पुरु</u> पावन । <u>सत्तम</u> युक्त सत मत प्रेम मन ।।(१९३)

भावार्थ: *अनेक युद्धों में प्रभु ने विजय प्राप्त की अतः प्राणी उन्हें* ***पुरुजित*** *(५१७) कहते हैं। विश्वरूप होने से पवित्र* ***पुरु*** *(५१८) हैं। सत्य बुद्धि एवं जिनके मन में प्रेम है, वह* ***सत्तम*** *(५१९) हैं।*

दें दंड <u>विनय</u> प्रभु दुर्जन । जीतें लघु प्रयास <u>जय</u> द्विषन ।।
<u>सत्यसन्धा</u> करें पूर्ण वचन । <u>दाशार्हा</u> रवि-कुल भगवन ।।(१९४)

भावार्थ: *दुष्टों को दण्डित करने वाले प्रभु* ***विनय*** *(५२०) हैं। शत्रुओं को अल्प प्रयास से ही जो जीत लेते हैं, वह* ***जय*** *(५२१) हैं। वचनों को पूर्ण करने वाले (अर्थात वरदान देने वाले)* ***सत्यसन्धा*** *(५२२) हैं। सूर्य वंश में जन्म लेने वाले भगवान* ***दाशार्हा*** *(५२३) हैं (भगवान् श्री राम सूर्य-वंश में अवतरित हुए थे)।*

की रचना तंत्र शिव सात्वत । पाई कीर्ति <u>सात्वतामपति</u> ।।
करें नियंत्रित तत्व भगवन । कहे जग प्रभु <u>जीव</u> विचक्षन ।।
विनयशील हैं अति नियंत । <u>विनयितासाक्षी</u> हैं अनंत ।।(१९५)

भावार्थ: *शिव सात्वत (शिव तंत्र) के रचयिता* ***सात्वतामपति*** *(५२४) जग प्रसिद्ध हैं । तत्व नियंत्रित करने वाले बुद्धिमान भगवान् को विश्व* ***जीव*** *(५२५) प्रभु कहता है। विनयशील प्रभु* ***विनयितासाक्षी*** *(५२६) हैं।*

मुक्तिदाता मुकुंद भगवान् । अमितविक्रम महा बलवान ।।
सुर असुर नर अन्तर्वासी । अम्भोनिधि सिंधु निवासी ।।(१९६)

भावार्थ: *मुक्ति देने वाले प्रभु* ***मुकुंद*** *(५२७) हैं। महाबलशाली भगवान्* ***अमितविक्रम*** *(५२८) हैं। देवता, दैत्य, मनुष्य के अंतर्मन में वास करने वाले हरि जिनका निवास स्थान समुद्र है, वह* ***अम्भोनिधि*** *(५२९) हैं।*

हैं अनन्तात्मा अनंत भगवन । करें महोदधिशय सागर शयन ।।
जो हरि रूप शिव संहारक । करें प्रलय काल अंत अन्तक ।।(१९७)

भावार्थ: *प्रभु अनंत हैं, अतः* ***अनन्तात्मा*** *(५३०) हैं। सागर में शयन करने वाले भगवान्* ***महोदधिशय*** *(५३१) हैं। जो (सृष्टि का) अंत करने हेतु प्रलय काल में संहारक शिव रूप धारण करते हैं वह* ***अन्तक*** *(५३२) हैं।*

अजर अमर आदि अज भगवन । हैं अमूल्य महार्हः निरूपन ।।
नित्य सिद्धि हैं हरि स्वभावय । जितामित्र जीते सब दैत्य ।।(१९८)

भावार्थ: *अजर अमर एवं आदि प्रभु को* ***अज*** *(५३३) नाम से पुकारा गया है।* ***महार्हः*** *(५३४) का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता (अमूल्य हैं)। नित्य सिद्धि हरि को* ***स्वभावय*** *(५३५) कहा गया है। सभी दैत्यों को जीतने के कारण वह* ***जितामित्र*** *(५३६) हैं।*

प्रमोदन दें आनंद सब सन्त । हैं आनंद आनंदित भगवंत ।।
नंदन सुमर हिय हर्षाता । हैं नन्द रिद्धि सिद्धि के दाता ।।(१९९)

भावार्थ: *सब संतों को आनंदित करने वाले प्रभु* ***प्रमोदन*** *(५३७) हैं। भगवान्* ***आनंद*** *(५३८) आनंद स्वरुप हैं। जिनके नाम को हृदय में स्मरण करने से प्रसन्नता मिलती है, वह प्रभु* ***नंदन*** *(५३९) हैं। रिद्धि सिद्धि देने वाले भगवान्* ***नन्द*** *(५४०) हैं।*

सत गुण धारी हैं सत्यधर्म । स्थित त्रिलोक में त्रिविक्रम ।।
ज्ञानी सम कपिल भगवन । कहें कपिलाचार्य भूजन ।।(२००)

भावार्थ: *सत गुण धारी **सत्यधर्म** (५४१) हैं। तीनों लोकों में जो स्थित हैं (अर्थात सर्वव्यापी हैं), वह **त्रिविक्रम** (५४२) हैं। कपिल (मुनि) के समान ज्ञानी भगवान् को प्राणी **कपिलाचार्य** (५४३) के नाम से सम्बोधित करते हैं।*

रहें रत कृत नित्य परमात्मा । हैं कृतज्ञ कर्मी जीवात्मा ।।
हैं मेदनीपति भूपति दिव्य । नापे त्रिपद तीन पद विश्व ।।(२०१)

भावार्थ: *प्रभु सदैव कर्मों में रत रहते हैं, अतः ऐसे कार्यरती जीवात्मा को **कृतज्ञ** (५४४) नाम से सम्बोद्धित किया गया है। दिव्य प्रभु पृथ्वी के स्वामी हैं, इसलिए **मेदनीपति** (५४५) हैं। पूरे ब्रह्माण्ड को जिन्होंने (वामन रूप) तीन पग से नाप लिया, ऐसे भगवान् **त्रिपद** (५४६) हैं।*

जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति समय । हैं ईश त्रिदशाध्यक्ष देवन्य ।।
लिए मत्स्य अवतार सिंधु में । किए महाश्रग तांडव जल में ।।(२०२)

भावार्थ: *(तीनों दशाओं) जाग्रत, स्वप्न अथवा सुषुप्ति समय में दिव्य **त्रिदशाध्यक्ष** (५४७) स्वामी हैं। भगवान् ने सागर में मत्स्य अवतार ले जल में तांडव किया था, इसलिए उन्हें **महाश्रग** (५४८) नाम से जाना जाता है।*

मरणेष करते संहार प्रलय । कृतान्तकृत करें वृद्धि पुन्य ।।
लिए अवतार स्वरूप वराह । तारा हिरण्डयक्ष महाविराह ।।(२०३)

भावार्थ: *प्रलय (काल) में **मरणेष** (५४९)मृत्यु प्रदान करते हैं। **कृतान्तकृत** (५५०) पुण्यों में वृद्धि करते हैं। हिरण्डयक्ष को तारने के लिए वराह रूप में अवतरित भगवान् **महाविराह** (५५१) हैं।*

गोविंद ब्रजवासी गोरक्षक । सुषेण सेनापति सुर रक्षक ।।
दिव्य स्वर्ण भुजबंध धारी । कनकांगदी कृष्ण मुरारी ।।(२०४)

भावार्थ: *गौ (माँ) के रक्षक ब्रजवासी प्रभु* ***गोविन्द*** *(५५२) हैं। देवताओं के रक्षक सेनापति* ***सुषेण*** *(५५३) (भगवान्) हैं। जिनके दिव्य स्वर्ण के भुजबंध है, उन कृष्ण मुरारी के स्वरुप को* ***कनकांगदी*** *(५५४) नाम से सम्बोधित किया गया है।*

हैं गुह्य ज्ञानी गुप्त विद्मन् । हैं गभीर परम धीर भगवन ।।
गहन कठिन करें हिय प्रविष्ट । गुप्त हरि रहते सदा अद्रष्ट ।।(२०५)

भावार्थ: *गुप्त ग्रंथों (गोपनीय उपनिषद आदि) के ज्ञाता* ***गुह्य*** *(५५५)हैं । परम शांत स्वभाव वाले भगवान्* ***गभीर*** *(५५६) हैं। हृदय में कठिनता से प्रवेश करते हैं (भगवत प्राप्ति के लिए साधना की आवश्यकता है), अतः* ***गहन*** *(५५७) हैं। सदैव अदृष्ट रहते हैं (सरलता से नहीं मिलते। उनसे मिलने के लिए गहन तप की आवश्यकता है), अतः* ***गुप्त*** *(५५८) हैं।*

है शोभित चक्र गदा शरीर । चक्रगदाधर बली और धीर ।।
रचियता विधि वेधा भगवन । स्वांग करें कर्म सदैव स्व-तन ।।(२०६)

भावार्थ: *शरीर पर चक्र और गदा से शोभायमान, शांत स्वभाव वाले बलशाली* ***चक्रगदाधर*** *(५५९) हैं। प्रकृति के नियमों के रचियता भगवान्* ***वेधा*** *(५६०) हैं। सदैव अपने शरीर से कार्यरत (प्रभु)* ***स्वांग*** *(५६१) हैं (कार्य करने में अपने ही शरीर का प्रयोग करते हैं, किसी पर आधारित नहीं हैं)।*

अजित अजेय हरि त्रिलोक । कृष्ण नियंता भू सुर लोक ।।
सत्य शील बल धीर चरित्र । हैं दृढ़ हरि दृढ़ सत सूत्र ।।(२०७)

भावार्थ: *तीनों लोकों में जिन्हे जीता न जा सके, वह प्रभु* ***अजित*** *(५६२) हैं। पृथ्वी, सुरलोक के जो शासक हैं, वह प्रभु* ***कृष्ण*** *(५६३) हैं। जो सदैव सत्य एवं धर्म सूत्र में बंधे हैं एवं सत्य, शील, बल और धीरता जिनके चरित्र हैं, उन प्रभु को* ***दृढ़*** *(५६४) नाम से जाना जाता है।*

प्रलय काल हर लेते चिंता । संकर्षण हरि दिव्य अनंता ।।
बिन प्रयास करें सब कृत्य । अच्युत तजें कभी धर्म न सत्य ।।(२०८)

भावार्थ: *प्रलय काल में हर व्यथा को जो हर लेते हैं (ताकि मरण आसान हो जाए), ऐसे दिव्य प्रभु को* ***संकर्षण*** *(५६५) कहा गया है। बिना परिश्रम के ही जो सब कार्य करने में सक्षम हैं, तथा कभी सत्य और धर्म का त्याग नहीं करते, ऐसे प्रभु को* ***अच्युत*** *(५६६) नाम से सम्बोद्धित किया गया है।*

हैं शीतल समान संध्य किरण । करें वरुण यज्ञ हवि ग्रहण ।।
वारुण वशिष्ठ रूप इज्य । वृक्ष स्वर्ग स्थित वृक्ष दिव्य ।।(२०९)

भावार्थ: *सांय कालीन (सूर्य की) किरणों के समान शीतलता धारण किये हुए यज्ञ हवि को स्वीकारने वाले प्रभु* ***वरुण*** *(५६७)हैं। गुरु वशिष्ठ के समान शिक्षक* ***वारुण*** *(५६८) हैं। स्वर्ग में स्थित (कल्पवृक्ष के समान) दिव्य वृक्ष (भगवान्)* ***वृक्ष*** *(५६९) हैं।*

करें वास पद्म सम हिय सुजन । पुष्कराक्ष प्रभु योग्य पूजन ।।
सृजन पोषण संहार कृत्य । करें संभव महामना दिव्य ।।(२१०)

भावार्थ: *सज्जन पुरुषों के कमल रूपी हृदय में वास करने वाले पूजन योग्य प्रभु* ***पुष्कराक्ष*** *(५७०) हैं। जिनके कारण (सृष्टि का) सृजन, पोषण एवं अंत कर्म होते हैं, ऐसे भगवान् को* ***महामना*** *(५७१) नाम से पुकारा गया है।*

हैं छै भग गुण श्री यश ज्ञान । ऐश्वर्य धर्म करें वेद बखान ।।
भग गुण धारी हैं भगवान । हरें भगहा भग जग अवसान ।।(२११)

भावार्थ: *छै भग गुण होते हैं, ऐसा वेदों में वर्णित है (छै भग गुण - ऐश्वर्य, धर्म, श्री, यश, ज्ञान और वैराग्य)। छै भग गुण धारी* ***भगवान्*** *(५७२) हैं। प्रलय काल में जो भगों का हरण करते हैं, वह प्रभु* ***भगहा*** *(५७३) हैं।*

रहें आनंदी सदैव पुष्पवत् । वनमाली हरि अति पुण्यवत ।।
करें सदैव कंठ में धारन । माला वैजयंती श्री भगवन ।।
करें धारण जो हल आयुध । हैं वह हरि श्री हलायुध ।।
लिए जन्म गर्भ अदिति वामन । कहें आदित्य उन्हें त्रिभुवन ।।(२१२)

भावार्थ: *सदैव प्रफुल्लित रहने वाले भगवान्* ***आनंदी*** *(५७४) हैं। कंठ में जिन भगवान् के वैजयंती माला सुशोभित है और अत्यंत पुण्यवत हैं, वह* ***वनमाली*** *(५७५) हैं। हल को जो अश्त्र रूप में धारण किये हैं, वह प्रभु* ***हलायुध*** *(५७६) हैं। (माँ) अदिति के गर्भ से जन्मे वामन प्रभु को* ***आदित्य*** *(५७७) नाम से त्रिलोक में जाना जाता है।*

है ज्योति सम रवि जिन भगवन । कहें ज्योतिरादित्य भूजन ।।
सहें शीत उष्ण समान रूप । हैं वह सहिष्णु दिव्य स्वरुप ।।
गति जिनकी है अतिद्रुतम् । कहें उन्हें प्रभु गतिसत्तम ।।(२१३)

भावार्थ: *सूर्य के समान तेज वाले प्रभु को प्राणी* ***ज्योतिरादित्य*** *(५७८) कहते हैं। शीत एवं उष्णता को जो समान रूप से सहते हैं, वह दिव्य स्वरुप* ***सहिष्णु*** *(५७९) हैं। परम गति से चलने वाले प्रभु* ***गतिसत्तम*** *(५८०) हैं।*

करें जो शार्ङ्ग धनुष धारन । हैं वह सुधन्वा हरि पावन ।।
परसु अस्त्र हेतु वध द्विषन । हैं प्रसिद्ध खंडपरसु भगवन ।।
हैं दारुण कठोर रिपु संत । दें धन संत द्रविणप्रद अनंत ।।(२१४)

भावार्थ: *शार्ङ्ग धनुष को धारण करने वाले पवित्र भगवान्* ***सुधन्वा*** *(५८१) हैं। परसु अस्त्र से जो शत्रुओं का वध करते हैं, वह प्रसिद्ध भगवान्* ***खंडपरसु*** *(५८२) हैं। संतों के शत्रुओं के लिए जो कठोर हैं, वह* ***दारुण*** *(५८३) हैं। संतों को धन देने वाले हरि* ***द्रविणप्रद*** *(५८४) हैं।*

गृह दिवस्प्रका धाम भगवन । सर्वद्दगव्यास व्यास वर्पन् ।।
वाचस्पति हैं वाक् निपुन । लिए जन्म अयोनिज स्व-मन्मन् ।।(२१५)

भावार्थ: *वैकुण्ठ में वास करने वाले प्रभु* ***दिवस्प्रका*** *(५८५) हैं। (वेद) व्यास के समान* ***सर्वद्दगव्यास*** *(५८६) हैं। वाणी में निपुण* ***वाचस्पति*** *(५८७) हैं। स्व-इच्छा से अवतरित होने वाले हरि* ***अयोनिज*** *(५८८) हैं।*

हैं उदात्त अनुदात्त स्वरित । तीन देवव्रत सामा कथित ।।
करें स्तुति संत इन सामा । कहें ग्रन्थ हरि त्रिसामा ।।
हैं ज्ञानी वेद साम भगवन । सामग करें वेद का गायन ।।
हैं अत्यंत कृपालु नारायन । दाता मोक्ष निर्वाण भगवन ।।(२१६)

भावार्थ: *देवव्रत नाम के तीनों सामाओं, उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित के द्वारा संतों द्वारा स्तुति किये जाते हैं, अतः* ***त्रिसामा*** *(५८९) हैं।* ***साम*** *(५९०) भगवान् वेद के ज्ञाता हैं।* ***सामग*** *(५९१) वेदों का गायन करते हैं। अत्यंत कृपालु नारायण मोक्षदाता हैं, इसलिए* ***निर्वाण*** *(५९२) हैं।*

औषध प्रभु करें निरोग । भेषज हरि हरहिं सब रोग ।।
हैं भिषक भव सागर तारक । सन्यासकृत गुरु के साधक ।।(२१७)

भावार्थ: *प्रभु (प्राणियों को) निरोग करते हैं अतः* ***औषध*** *(५९३) हैं।* ***भेषज*** *(५९४) नाम जपने से सभी रोगों का विनाश होता है। भवसागर को पार करने वाले भगवान्* ***भिषक*** *(५९५) हैं। साधक के गुरु हैं, अतः* ***सन्यासकृत*** *(५९६) हैं।*

दें शम गुरु समान शिक्षा । हैं हरि शांत अविषय निरिच्छा ।।
होते विलीन काल प्रलय जन । हैं वह निष्ठा पावन भगवन ।।
करें प्रकाश हो दूर तम । दें क्षेम प्रभु शांति शुभम ।।(२१८)

भावार्थ: *गुरु समान शिक्षा देते हैं, अतः* ***शम*** *(५९७) हैं। विषय सुखों से और इच्छाओं से अनाशक्त होने के कारण* ***शांत*** *(५९८) हैं। प्रलय काल में जिनमें प्राणी समाहित हो जाते हैं, वह पवित्र भगवान्* ***निष्ठा*** *(५९९) हैं। अंधकार को दूर कर प्रकाश करने वाले एवं क्षेम देने वाले प्रभु* ***शांति (****६००) हैं।*

दें परायण उत्कृष्ट अयन । हैं अंग शुभ शुभांग मोहन ।।
दाता शांति शांतिद इष्ट । हेतु सृजन जग जन्मे स्रष्ट ।।(२१९)

भावार्थ: *श्रेष्ठ पद (अयन) देने वाले* ***परायण*** *(६०१) हैं। जिनके अंग मोहित करने वाले हैं तथा मंगलकारी हैं, वह* ***शुभांग*** *(६०२) हैं। शांति देने वाले इष्ट* ***शांतिद*** *(६०३) हैं। सृष्टि का सृजन करने वाले प्रभु* ***स्रष्ट*** *(६०४) हैं।*

जन्मे भूलोक कुमुद भगवन । करें कुवलेशय सिंधु में शयन ।।
हैं गौहित गौ माँ हितकारक । गोपति गौ भूजन के रक्षक ।।(२२०)

भावार्थ: *कु अर्थात पृथ्वी पर अवतरित हुए, इसलिए प्रभु को* ***कुमुद*** *(६०५) कह कर सम्बोधित किया गया। सागर में शयन करते हैं, इस कारण* ***कुवलेशय*** *(६०६) हैं। गौ माँ के हितीय* ***गौहित*** *(६०७) हैं। गो (भूमि) और प्राणियों के रक्षक* ***गोपति*** *(६०८) हैं।*

रहते अदृश्य गोप्ता भगवन । देखें धर्म वृषभाक्ष नयन ।।
वृषप्रिय करें पालन धर्म । है अरुचि अनिवर्ती अधर्म ।।(२२१)

भावार्थ: *जिनका रूप अदृश्य रहता है (वह केवल भक्तों को साधना द्वारा ही दृश्य होते हैं), वह भगवान्* ***गोप्ता*** *(६०९) हैं। भगवान् के नेत्र केवल धर्म (वर्ष) ही देखते हैं, अतः वह* ***वृषभाक्ष*** *(६१०) हैं। धर्म का पालन करने वाले* ***वृषप्रिय*** *(६११) हैं। अधर्म में जिन्हे कोई रूचि नहीं है, वह* ***अनिवर्ती*** *(६१२) हैं।*

विषयहीन भगवत आत्मा । जपत सुख दें निवृत्तात्मा ।।
करें विश्व सूक्ष्म जब प्रलय । दें मोक्ष संक्षेप्ता भक्त अनन्य ।।(२२२)

भावार्थ: *विषयहीन भगवान्* ***निवृत्तात्मा*** *(६१३) के जपने से सुख की प्राप्ति होती है। प्रलय काल में विश्व को सूक्ष्म बनाकर* ***संक्षेप्ता*** *(६१४) अपने अनन्य भक्तों को मुक्ति देते हैं।*

रक्षक क्षेमकृत संत संपत्ति । हो पावन तन जब शिव चेतति ।।
श्रीवत्स चिन्ह है वक्ष स्थित । हैं श्रीवत्सवक्ष पूज्य नियंत ।।(२२३)

भावार्थ: *भक्तों की वस्तुओं के रक्षक* ***क्षेमकृत*** *(६१५) हैं।* ***शिव*** *(६१६) को उद्देश्य बनाना शरीर को पवित्र कर देता है (अतः विष्णु भगवान् के स्वरूप शिव को भजने से*

*तन पवित्र होता है)। दिव्य प्रभु के वक्ष पर श्रीवत्स चिन्ह स्थित है, अतः वह पूज्य भगवान् **श्रीवत्सवक्ष** (६१७) हैं।*

बसें लक्ष्मी हृदय हरि मध्य । श्रीवास भूजन आराध्य ।।
लक्ष्मीपति श्रीपति रघुवर । अति उत्तम हरि श्रीमंतावर ।।(२२४)

भावार्थ: *सबके आराध्य **श्रीवास** (६१८) के हृदय के मध्य में लक्ष्मी माँ का वास है। श्री (लक्ष्मी माँ) के स्वामी प्रभु **श्रीपति** (६१९) हैं। श्रेष्ठ प्रभु **श्रीमंतावर** (६२०) हैं।*

दें धन धान्य प्रभु श्रीदा । आराध्य श्री श्रीसा सदा ।।
करें निवास हिय साधु सिद्ध । श्रीनिवास ईश सभी ऋद्ध ।।(२२५)

भावार्थ: *धन धान्य देने वाले प्रभु **श्रीदा** (६२१) हैं। श्री (लक्ष्मी माँ) के सदैव आराध्य **श्रीसा** (६२२) हैं। संत सिद्धों के हृदय में बसने वाले सभी ऋद्धियों के स्वामी **श्रीनिवास** (६२३) हैं।*

श्रीनिधि संपत्ति के दाता । श्रीविभावन कर्म फल दाता ।।
श्रीधर स्थिति लक्ष्मी वक्षा । लिए जन्म भू हेतु भक्त रक्षा ।।(२२६)

भावार्थ: *धन धान्य के दाता **श्रीनिधि** (६२४) हैं। **श्रीविभावन** (६२५) कर्म फल देते हैं। लक्ष्मी जिनके वक्ष में विराजमान हैं और जो भक्तों की रक्षा के लिए पृथ्वी पर अवतरित होते हैं, उनको **श्रीधर** (६२६) नाम से सम्बोद्धित किया जाता है।*

करें श्रीकर हरि का स्मरन । हों भक्त धन धान्य सम्पन्न ।।
पाएं अति सुख जपें जब श्रेय । हैं श्रीमान श्री पति पूज्य ।।(२२७)

भावार्थ: ***श्रीकर*** *(६२७) के स्मरण से भक्त धन धान्य प्राप्त करते हैं। **श्रेय** (६२८) भगवान् के जपने से अत्यंत सुख की प्राप्ति होती है। **श्रीमान** (६२९) श्री (लक्ष्मी) के पूज्य पति हैं ।*

<u>लोकत्रयाश्रया</u> त्रिलोकपति । हों सुखी भक्त पा आश्रिति ।।
समान सरोज <u>स्वक्ष</u> के नैन । स्वरूप <u>स्वंग</u> मन छीने चैन ।।(२२८)

भावार्थ: *तीनों लोकों के स्वामी जिनका आश्रय भक्तों को सुख प्रदान करता है, वह* ***लोकत्रयाश्रया*** *(६३०) हैं। कमल के समान नयन वाले भगवान्* ***स्वक्ष*** *(६३१) हैं। (प्रभु का) मनोहर रूप जो मन का चैन छीन ले, वह* ***स्वंग*** *(६३२) है।*

हो आनंद सुमर <u>शतानंद</u> । हरि <u>नन्दि</u> स्वरुप परमानंद ।।
<u>ज्योतिर्गणेश्वर</u> नक्षत्रीश । संयमित मन <u>विजितात्मा</u> ईश ।।(२२९)

भावार्थ: *आनंद जिनके स्मरण से आनंद मिलता है, वह* ***शतानंद*** *(६३३) हैं। परमानंद के स्वरुप भगवान्* ***नन्दि*** *(६३४) हैं। नक्षत्रगणों के स्वामी होने के कारण उन्हें* ***ज्योतिर्गणेश्वर*** *(६३५) नाम से पुकारा जाता है। जिन्होंने मन (आत्मा) को जीत लिया, वह ईश्वर* ***विजितात्मा*** *(६३६) हैं।*

असंभव माप सकें विधेयात्मा । सत्कीर्ति सत विश्रुत आत्मा ।।
देख सकें आंवल कर स्व-नयन । नहीं करें संसय सुर भूजन ।।
है अति सूक्ष्म जिनका तन । हैं वह छिन्नसंशय भगवन ।।(२३०)

भावार्थ: *जिनका (स्वरुप) अंकन असंभव है, वह प्रभु* ***विधेयात्मा*** *(६३७) हैं। जिनकी आत्मा की सुप्रसिद्धि है, वह* ***सत्कीर्ति*** *(६३८) हैं। प्रभु हाथ पर रखे हुए आंवले को भी देख सकते हैं, इसमें किसी भी देवता और प्राणी को संशय नहीं है तथा जिनका शरीर अति सूक्ष्म है (सूक्ष्म दृष्टि धारक हैं), वह* ***छिन्नसंशय*** *(६३९) भगवान् हैं।*

<u>उदीर्ण</u> सब भांति श्रेष्ठ । <u>सर्वतश्चक्षु</u> सर्वभूत प्रेष्ठ ।।
कहें वेद हरि <u>अनीश</u> स्वपति । हैं <u>शाश्वतस्थिर</u> विकार रहित ।।(२३१)

भावार्थ: *उत्कृष्ट प्रभु* ***उदीर्ण*** *(६४०) हैं। सर्व प्रिय भगवान्* ***सर्वतश्चक्षु*** *(६४१) हैं। जिन्हें वेद स्वपति (जिनका कोई स्वामी नहीं) कहते हैं, वह हरि* ***अनीश*** *(६४२) हैं। विकारहीन प्रभु* ***शाश्वतस्थिर*** *(६४३) हैं।*

किए जब प्रभु सागर तट शयन । पूर्ववत विजय लंका गमन ।।
दिए नाम उन्हें <u>भूशय</u> भूजन । लिए <u>भूषण</u> बहु अवतार भुवन ।।
हुई सुशोभित भू उपासन । हैं शासक जग <u>भूति</u> भगवन ।।(२३२)

भावार्थ: *लंका विजय को प्रस्थान से पूर्ववत प्रभु (श्री राम) ने सागर तट पर शयन किया, तब उन्हें प्राणियों ने* ***भूशय*** *(६४४) नाम दिया। अनेक बार पृथ्वी पर* ***भूषण*** *(६४५) ने अवतार ले अपनी उपस्थिति से पृथ्वी को सुशोभित किया। विश्व के शासक प्रभु* ***भूति*** *(६४६) हैं।*

हैं शोकविगत हरि <u>विशोक</u> । <u>शोकनाशन</u> हरें सब शोक ।।
<u>अर्चिष्मान</u> सम रवि प्रकाश । हैं <u>अर्चित</u> पूज्य थल आकाश ।।(२३३)

भावार्थ: *शोकहीन होने के कारण भगवान्* ***विशोक*** *(६४७) कहलाये। (भक्तों के) समस्त शोकों का हरण करते हैं, इसलिए* ***शोकनाशन*** *(६४८) नाम से बुलाया जाता है। सूर्य समान प्रकाशित प्रभु* ***अर्चिष्मान*** *(६४९) हैं। पृथ्वी और आकाश (सुरलोक) में पूज्य* ***अर्चित*** *(६५०) हैं।*

है जैसे कुम्भ में जल निहित । है जग <u>कुम्भ</u> अंतः परिभावित ।।
विकारहीन हरि <u>विशुद्धात्मा</u> । <u>विशोधन</u> करें शुद्ध आत्मा ।।(२३४)

भावार्थ: *जिस प्रकार कुम्भ में जल रहता है, उसी प्रकार प्रभु के अन्तः में जग रहता है, इस कारण उन्हें* ***कुम्भ*** *(६५१) नाम से सम्बोद्धित किया जाता है। विकारहीन होने के कारण उन्हें* ***विशुद्धात्मा*** *(६५२) नाम से जाना जाता है। जो आत्मा पवित्र करते हैं, वह* ***विशोधन*** *(६५३) हैं।*

<u>अनिरुद्ध</u> व्यूह भंजन ज्ञाता । <u>अप्रतिरथ</u> प्रतिपक्ष सराहता ।।
है भव्य कान्ति हरि समाहित । लिए जन्म <u>प्रद्युम्न</u> हेतु जग हित ।।(२३५)

भावार्थ: *प्रभु व्यूह भंजन के ज्ञाता हैं, उन्हें* ***अनिरुद्ध*** *(६५४) हैं। जिन प्रभु की प्रतिपक्ष भी सराहना करता हैं, वह* ***अप्रतिरथ*** *(६५५)हैं। भव्य कांति के साथ जिन भगवान् ने जगत हित के लिए जन्म लिया, उन्हें* ***प्रद्युम्न*** *(६५६) नाम से जाना गया।*

असीमित बल के हरि स्वामी । अमितविक्रम वीर अनुगामी ।।
किए कालनेमिनिहा प्रहार । किया कालनेमि असुर संहार ।।(२३६)

भावार्थ: *शूरवीर जिनका अनुसरण करतें हैं और जो असीमित बल के स्वामी हैं, वह भगवान्* ***अमितविक्रम*** *(६५७) हैं।* ***कालनेमिनिहा*** *(६५८) प्रभु के प्रहार से कालनेमि असुर का वध हुआ।*

बलशाली वीर जन्मे रघुकुल । शौरि हुए अवतरित शूर कुल ।।
शूरजनेश्वर हैं वीरेश्वर । त्रिलोकात्मा त्रिलोकेश्वर ।।(२३७)

भावार्थ: *रघुकुल में जन्मे (श्री राम) बलशाली* ***वीर*** *(६५९) हैं। शूर कुल (सूर्यवंश) में अवतरित होने के कारण* ***शौरि*** *(६६०) कहलाये। शूर वीरों के स्वामी भगवान्* ***शूरजनेश्वर*** *(६६१) हैं। तीनों लोकों के ईश्वर* ***त्रिलोकात्मा*** *(६६२) हैं।*

जिनकी ज्योति सम रवि किरन । हैं वह श्री केशव भगवन ।।
किए वध केसी अश्व निरूपन । प्रसिद्ध नाम केशिहा भुवन ।।(२३८)

भावार्थ: *(सूर्य की किरणों को केश कहते हैं) जिनकी सूर्य की किरणों के समान प्रभा है, वह प्रभु* ***केशव*** *(६६३) हैं। अश्व रूप धारी केसी का वध करने वाले* ***केशिहा*** *(६६४) नाम से जग में प्रसिद्ध हैं।*

करें फलित सब संत कामना । दें कामदेव हृदय सांत्वना ।।
करें पूर्ण हरि इच्छा भूजन । हितकारी कामपाल भगवन ।।(२३९)

भावार्थ: *संतों की कामनाओं को फलित कर प्रभु* ***कामदेव*** *(६६५) उन्हें शान्ति प्रदान करते हैं। प्राणियों की कामना को पूर्ण करने वाले हितकारी भगवान* ***कामपाल*** *(६६६) हैं।*

पूर्ण काम अतः हरि कामी । कान्त दिव्य देह के स्वामी ।।
कृतागम धर्म ग्रंथ सम्मत । रुप अनिर्देश्यवपु अवर्णित ।।(२४०)

भावार्थ: *पूर्ण काम हैं अतः प्रभु* ***कामी*** *(६६७) हैं। दिव्य तन के स्वामी होने से* ***कान्त*** *(६६८) हैं। धर्म ग्रंथों के ईश्वर* ***कृतागम*** *(६६९) हैं। जिनके रूप को वर्णित नहीं किया जा सकता, वह भगवान्* ***अनिर्देश्यवपु*** *(६७०) हैं।*

हैं सर्वज्ञ करें सर्वत्र गमन । समाहित <u>विष्णु</u> मही गगन ।।
युक्त गति व्याप्ति कांति जनन । दें नाम ग्रन्थ श्री <u>वी</u> भगवन ।।
विभूत करें नियंत्रित भुवन । नाम <u>वीर</u> प्रसिद्ध त्रिभुवन ।।(२४१)

भावार्थ: *सर्वत्र गमन करने वाले एवं सर्वव्यापी प्रभु* ***विष्णु*** *(६७१) धरती और गगन में समाहित हैं। गति, व्याप्ति, जनन, कांति धातुपाठ से युक्त प्रभु को ग्रंथों ने* ***वी*** *(६७२) नाम दिया है। पृथ्वी को नियंत्रित करने वाले बलशाली* ***वीर*** *(६७३) तीनों लोकों में प्रसिद्ध हैं।*

हैं हरि <u>अनंत</u> अविषयी पावन । हैं अग्नि पति <u>धनञ्जय</u> भगवन ।।
पूर्ण वेद ब्रह्म योग ज्ञान । <u>ब्रह्मण्य</u> यशस्वी बुद्धिमान ।।(२४२)

भावार्थ: *विषयहीन पवित्र प्रभु* ***अनंत*** *(६७४) हैं। अग्नि के स्वामी भगवान्* ***धनञ्जय*** *(६७५) हैं। वेद, ब्रह्म और योग के ज्ञाता यशस्वी बुद्धिमान* ***ब्रह्मण्य*** *(६७६) हैं।*

हों फलित तप हरि आशिषा । <u>ब्रह्मकृत</u> साधक की आशा ।।
रचें धर रूप <u>ब्रह्मा</u> भुवन । दें ज्ञान सत परम <u>ब्रह्म</u> भगवन ।।(२४३)

भावार्थ: ***ब्रह्मकृत*** *(६७७) प्रभु के आशीर्वाद से तप फलित होते हैं, अतः वह साधकों की आशा हैं। विश्व की रचना प्रभु* ***ब्रह्मा*** *(६७८) रूप से करते हैं। हरि* ***ब्रह्म*** *(६७९) परम सत्य ज्ञान देते हैं।*

<u>ब्रह्मविवर्धन</u> शिक्षक ज्ञानी । <u>ब्रह्मवित्त</u> ग्रंथ विज्ञानी ।।
<u>ब्राह्मण</u> ब्रह्म भेद के ज्ञाता । ब्रह्मेश <u>ब्रह्मी</u> विख्याता ।।(२४४)

भावार्थ: *प्रभु ज्ञानी शिक्षक हैं, अतः* ***ब्रह्मविवर्धन*** *(६८०) हैं। समस्त ग्रंथों का ज्ञान जिनमें समाहित है, वह* ***ब्रह्मवित्त*** *(६८१) हैं। ब्रह्म भेद को जानने वाले* ***ब्राह्मण*** *(६८२) हैं। ब्रह्म के ईश्वर* ***ब्रह्मी*** *(६८३) विख्यात हैं।*

स्वतः ज्ञान सब वेद <u>ब्रह्मज्ञ</u> । <u>ब्राह्मणप्रिय</u> को प्रिय यज्ञ ।।
लघु बामन रूप पर पद महन । लिए अवतार <u>महाक्रम</u> भगवन ।।(२४५)

भावार्थ: *सब वेदों का जिन्हें स्वतः ज्ञान है, वह* ***ब्रह्मज्ञ*** *(६८४) है। यज्ञ के प्रिय* ***ब्राह्मणप्रिय*** *(६८५) हैं। लघु बामन रूप परन्तु अत्यंत विशाल पग में अवतरित प्रभु* ***महाक्रम*** *(६८६) हैं।*

करें सृजन पोषण संहार । हरि <u>महाकर्मा</u> जग आधार ।।
तपे सूर्य जिनके अति तेज । दें प्रकाश शशि <u>महातेज</u> ।।(२४६)

भावार्थ: *जग सृजन, पालन एवं संहार कर्ता, संसार का सहारा प्रभु* ***महाकर्मा*** *(६८७) हैं। सूर्य जिनके तेज से ओजित होता है तथा जो चन्द्रमा को जो प्रकाश देते हैं, वह भगवान्* ***महातेज*** *(६८८) हैं।*

वासुक सर्प के हैं जो ईश । हैं हरि महोरग भुजंगीश ।।
दें फल यज्ञ अश्वमेध समान । महाक्रतु हैं सुयज्ञ महान ।।(२४७)

भावार्थ: *सर्प वासुक के स्वामी हैं, अतः प्रभु* ***महोरग*** *(६८९) भुजंगीश हैं। अश्वमेध समान यज्ञों के फल देने वाले* ***महाक्रतु*** *(६९०) भगवान् (स्वयं) महान यज्ञ हैं।*

हरि <u>महायज्व</u> संचालक यज्ञ । प्रभु <u>महायज्ञ</u> स्वयं जप यज्ञ ।।
हैं कर्ता यज्ञ हरि <u>महाहवि</u> । दें मोक्ष कर स्वीकार हवि ।।(२४८)

भावार्थ: *यज्ञ को संचालित करने वाले प्रभु* ***महायज्व*** *(६९१) हैं। यज्ञों में जप यज्ञ भगवान्* ***महायज्ञ*** *(६९२) हैं। यज्ञ कर्ता तथा यज्ञ हवि को स्वीकार कर मोक्ष देने वाले प्रभु* ***महाहवि*** *(६९३) हैं।*

करें स्तव का सुर जन पूजन। होते प्रसन्न स्तवप्रिय भजन।।
हैं स्तोत्र काव्य विधि पूजन। हैं स्तुति विधि हरि अर्चन।।(२४९)

भावार्थ: *जिनकी देव और भूजन पूजा करते हैं वह **स्तव्य** (६९४) हैं। **स्तवप्रिय** (६९५) भजन से प्रसन्न होते हैं। काव्य (रूप में) पूजा विधि **स्तोत्र** (६९६) हैं। भगवान् के अर्चना की पद्धिति **स्तुति** (६९७) हैं।*

हैं सर्व रूप हरि स्तोता। धरें भक्त रूप स्वयं स्तुता।।
हैं पंचायुध युक्त भगवन। रणप्रिय हैं संहारक दुर्जन।।(२५०)

भावार्थ: *सर्व रूप होने के कारण प्रभु **स्तोता** (६९८) हैं। स्वयं भक्त रूप धारण करने वाले **स्तुता** (६९९) हैं (भक्त रूप धारण कर संसार को भगवद भक्ति का महात्मय समझाते हैं)। पांच आयुध धारी **रणप्रिय** (७००) प्रभु असुरों का संहार करते हैं।*

हैं हीन-विकार पूर्ण अक्षर। हों नष्ट पाप पुण्य सुमर।।
है सत्य प्रभु की कीर्ति। पुण्यकीर्ति पुण्य अनुभूति।।(२५१)

भावार्थ: *प्रभु में कोई अभाव नहीं है (सब गुणों से युक्त एवं विकारों से विहीन हैं), अतः **पूर्ण** (७०१) हैं। **पुण्य** (७०२) नाम के स्मरण से समस्त पापों का नाश होता है। हरि की कीर्ति सत्य है, पवित्रता की अनुभूति **पुण्यकीर्ति** (७०३) हैं।*

रहित रोग अनामय भगवन। मनोजव मन सम द्रुति पवन।।
तीर्थकर दें धर्म उपदेशन। वीर्य वसु वसुरेता उत्पन्न।।(२५२)

भावार्थ: *समस्त व्याधियों से रहित प्रभु **अनामय** (७०४) हैं। जिनके मन की गति आंधी के समान (अति तीव्र) है, वह **मनोजव** (७०५) हैं। धर्म ज्ञान देने वाले **तीर्थकर** (७०६) हैं। वसु (पवित्र स्वरुप) के वीर्य से उत्पन्न (वीर्य धारता) **वसुरेता** (७०७) हैं।*

कुबेर रूप धन वितरण कर्ता। हैं वसुप्रद संतों के भर्ता।।
दें सम मोक्ष श्रेष्ठ फल दिव्य। हैं वसुप्रदा विज्ञान इज्य।।(२५३)

भावार्थ: *कुबेर रूप में जो धन का वितरण करते हैं और संतों का पोषण करते हैं, वह प्रभु* ***वसुप्रद*** *(७०८) हैं। समस्त विद्याओं (विज्ञान) के शिक्षक और मोक्ष के समान श्रेष्ठ फल देने वाले* ***वसुप्रदा*** *(७०९) हैं।*

वासुदेव हैं वसुदेव सुत । हेतु जन्म भू दुर्जन मुक्त ।।
बसें हिय नर नारि नियंत । हैं वसु भगवन अमर अनंत ।।(२५४)

भावार्थ: *वसुदेव (जी) के पुत्र* ***वासुदेव*** *(७१०) हैं, जो पृथ्वी को दुष्टों से मुक्त करने के लिए अवतरित हुए। सभी जनों के हृदय में बसने वाले अमर अजर अनंत भगवान्* ***वसु*** *(७११) हैं।*

प्रभु हैं निर्णायक निष्पक्ष । बसें वसुमना हिय हर पक्ष ।।
करें स्वीकार ब्रह्म हवि यज्ञ । दें सद्गति सुगति हों प्रज्ञ ।।(२५५)

भावार्थ: *हर पक्ष (पक्ष एवं प्रतिपक्ष) के हृदय में बसने वाले निष्पक्ष न्यायाधीश* ***वसुमना*** *(७१२) हैं। यज्ञ में आहुति स्वीकार करने वाले ब्रह्म* ***हवि*** *(७१३) हैं। जिनसे सुगति और ज्ञान की प्राप्त होती है, वह* ***सद्गति*** *(७१४) हैं।*

है सत्कृति कार्य जग सृजन । हेतु जन्म दें भक्त निर्मोचन ।।
हैं अद्वैत रहित जाति वर्न । है सत्ता नाम प्रभु विलक्षन ।।(२५६)

भावार्थ: सत्कृति *(७१५) प्रभु का अवतरण विश्व उत्पत्ति एवं भक्तों को मोक्ष देने के लिए हुआ है। जो जातीय भेदभाव से रहित अद्वैत प्रभु हैं, उनको* ***सत्ता*** *(७१६) नाम के विलक्षण नाम से सम्बोद्धित किया जाता है।*

हैं विहीन प्रपंच सत असत । सद्भूति चिदानंद नियंत ।।
हैं जो लक्ष्य सन्त सतपुरुष । हेतु सत्परायण दें सत दर्श ।।(२५७)

भावार्थ: *सत्य, असत्य, प्रपंच आदि से रहित आनंददायक प्रभु* ***सद्भूति*** *(७१७) हैं। सन्त के लक्ष्य, सत्य-पथ-दर्शा भगवान्* ***सत्परायण*** *(७१८) हैं।*

<u>शूरसेन</u> नायक सुर सेना । करें प्रकाश जग अंत रैना ।।
<u>यदुश्रेष्ठ</u> यदुवंश अग्रणी । <u>सन्निवास</u> का हिय सतगुणी ।।(२५८)

भावार्थ: *देवताओं की सेना के सेनापति जो अंधकार मिटा कर जग को प्रकाशित करते हैं, वह प्रभु* ***शूरसेन*** *(७१९) हैं। यदुवंशियों में प्रथम होने के कारण* ***यदुश्रेष्ठ*** *(७१) हैं। सद्गुणों को हृदय में धारण करने वाले भगवान्* ***सन्निवास*** *(७२०) हैं।*

माँ यमुना के हैं सम्बन्धी । <u>सुयामुन</u> का परिवेश सुगंधी ।।
बसें <u>भूतावास</u> हिय सुजन । करें <u>वासुदेव</u> माया हरन ।।(२५९)

भावार्थ: *माता यमुना के सम्बन्धी (ग्रंथों में देवकी, वसुदेव, नन्द, यशोदा, बलभद्र, सुभद्रा को यमुना माँ का सम्बन्धी बताया जाता हैं) जिनका परिवेश सुगन्धित है, उनको* ***सुयामुन*** *(७२१) नाम से जाना जाता है। जीवों के हृदय में बसने वाले (जीवों के अन्तः करणी) भगवान्* ***भूतावास*** *(७२२) हैं। माया का उन्मूलन करने वाले हरि* ***वासुदेव*** *(७२३) हैं।*

<u>सर्वासुनलय</u> दें आश्रय जन । <u>अनल</u> का तेज समान द्युवन् ।।
संहारें सभी असुर दुष्ट । हैं <u>दर्पहा</u> संत रक्षक इष्ट ।।(२६०)

भावार्थ: *प्राणियों के आश्रय दाता* ***सर्वासुनलय*** *(७२४) हैं। सूर्य के समान जिनका तेज है, वह* ***अनल*** *(७२५) हैं। दुष्टों का संहार कर जो संतों की रक्षा करते हैं, वह* ***दर्पहा*** *(७२६) हैं।*

पाएं संत मान <u>दर्पद</u> कृपा । हो आनंद <u>दृप्त</u> अनुकम्पा ।।
दूभर धारण हिय हरि रूप । <u>दुर्धर</u> हरि न सम अनुरूप ।।(२६१)

भावार्थ: *जिनकी कृपा से संतों का सम्मान होता है, वह* ***दर्पद*** *(७२७) है। जिनकी अनुकम्पा से आनंद की प्राप्ति होती है, उन्हें* ***दृप्त*** *(७२८) नाम से सम्बोधित किया जाता है। ऐसे प्रभु जिनके स्वरुप को हृदय में धारण करना कठिन है (साधना की आवश्यकता है), जिनके समान कोई और नहीं है, ऐसे प्रभु को* ***दुर्धर*** *(७२९) नाम से जाना जाता है।*

<u>अपराजित</u> अजित भगवंत । <u>विश्वमूर्ति</u> सर्वभूत अनंत ।।
करें शयन शय्या शेष भगवन । सम पर्वत है <u>महामूर्ति</u> तन ।।(२६२)

भावार्थ: *अजित (जिन्हें जीता नहीं जा सकता) प्रभु **अपराजित** (७३०) हैं। सर्वव्यापी भगवान् **विश्वमूर्ति** (७३१) हैं। शेषनाग की शय्या पर शयन करने वाले प्रभु जिनका शरीर पर्वत के समान (अति विशाल) है, वह **महामूर्ति** (७३२) हैं।*

<u>दीप्तमूर्ति</u> ऊर्जित आकार । <u>अमूर्तिमान</u> हैं निराकार ।।
लिए भू हरि अनेक अवतार । <u>अनेकमूर्ति</u> करे जग पुकार ।।(२६३)

भावार्थ: *ओजस्वी रूप वाले प्रभु **दीप्तमूर्ति** (७३३) हैं। जिनके आकार को मापा नहीं जा सकता (निराकार) हैं, वह भगवान् **अमूर्तिमान** (७३४) हैं। पृथ्वी पर अनेक बार उन्होंने अवतार लिया, अतः उन्हें **अनेकमूर्ति** (७३५) नाम से संसार ने पुकारा।*

अनेक रूप अतैव अव्यक्ता । <u>अव्यक्त</u> हरि सन्त अधिवक्ता ।।
अगणित हैं प्रभु के रूप । <u>शतमूर्ति</u> सुन्दर स्वरूप ।।(२६४)

भावार्थ: *अनेक रूपधारी, संतों के अधिवक्ता (पक्षधर) प्रभु जिन को व्यक्त करना कठिन है, वह **अव्यक्ता** (७३६) हैं। सुन्दर स्वरुप वाले प्रभु के अगणित रूप हैं, इसलिए उन्हें **शतमूर्ति** (७३७) कहा जाता है।*

सहस्त्र मुख हैं अतः <u>शतानन</u> । अनेक रूप पर हैं <u>एक</u> आनन ।।
अनेक रूप धरे कारण माया । हैं <u>नैक</u> नेक ग्रंथन तब गाया ।।(२६५)

भावार्थ: *सहस्त्र मुख होने के कारण **शतानन** (७३८) हैं। अनेक रूप (सहस्त्र मुख) होने पर भी वह एक मुखी हैं, अतः **एक** (७३९) हैं। माया के कारण भगवान् ने अनेक रूप धारण किये, इस अनेकता के कारण ग्रन्थ उन्हें **नैक** (७४०) नाम से सम्बोधित करते हैं।*

दें फल <u>सवः</u> हवि समान अमृत । <u>कः</u> ब्रह्म स्वरुप हैं अर्चित ।।
<u>किम</u> हैं पुरुषार्थ निरूपन । <u>यत</u> निर्देश से सृष्टि सृजन ।।(२६६)

भावार्थ: *यज्ञ हवि को अमृत में फलित करने वाले प्रभु **सवः** (७४१) हैं। ब्रह्म स्वरूप में जिनकी स्तुति होती है, वह भगवान् **कः** (७४२) हैं। (प्रभु के) पुरुषार्थ रूप **किम** (७४३) हैं। भगवान् **यत** (७४४) के निर्देश से सृष्टि की रचना होती है।*

करें जग विस्तार तत नियंत । पदमनुत्तमम हैं श्रेष्ठ अनंत ।।
लोकबंधु ईश्वर सब लोक । लोकनाथ शासक त्रिलोक ।।(२६७)

भावार्थ: *जगत का विस्तार करने वाले स्वामी **तत** (७४५) हैं। श्रेष्ठ प्रभु **पदमनुत्तमम** (७४६) हैं। सब लोकों के स्वामी **लोकबंधु** (७४७) हैं। तीनों लोकों पर शासन करने वाले प्रभु **लोकनाथ** (७४८) हैं।*

हैं माधव शिक्षक मधु वंश । भक्तवत्सल हैं भक्त अनुषंग ।।
हरि की काया वर्ण कंचन । कहे जग सुवर्णवर्ण भगवन ।।(२६८)

भावार्थ: *मधु वंस (यादव वंस) के शिक्षक **माधव** (७४९) हैं। भक्तों से जिनका गहन सम्बन्ध है (अतः भक्तों को प्रेम करते हैं), वह **भक्तवत्सल** (७५०) हैं। स्वर्ण के समान (उज्जवल) जिनकी काया है, ऐसे प्रभु को संसार **सुवर्णवर्ण** (७५१) कहता है।*

हैं अंग सुवर्ण अतः हेमांग । सुन्दर पावन तन हरि वरांग ।।
भुज बंध सुशोभित है चंदन । सुगन्धित है चंदनांगदी तन ।।(२६९)

भावार्थ: *कंचन समान अंग हैं, अतः **हेमांग** (७५२) हैं। सुन्दर पवित्र शरीर वाले प्रभु **वरांग** (७५३) हैं। चन्दन से विभूषित भुज बंध एवं सुगन्धित शरीर वाले **चंदनांगदी** (७५४) हैं।*

किए वध असुर वीरहा भगवंत । हैं विषम विलक्षण सत नियंत ।।
हैं विषय रहित हरि शून्य । दें वर अमोघ घृताशी पुन्य ।।(२७०)

भावार्थ: *असुरों का वध करने वाले अनंत **वीरहा** (७५५) हैं। सत और विलक्षण होने के कारण प्रभु को **विषम** (७५६) कह कर पुकारा गया। विषयों में अरुचि के कारण प्रभु **शून्य** (७५७) हैं। पुण्य **घृताशी** (७५८) का वर अमोघ है।*

हैं श्रेष्ठ चिर स्थायी <u>अचल</u> । है गति सम वायु प्रभु <u>चल</u> ।।
हैं दर्प रहित <u>अमानी</u> भगवन । करें मान <u>मानद</u> सुर भूजन ।।(२७१)

भावार्थ: *सदैव स्थिर रहने वाले श्रेष्ठ* ***अचल*** *(७५९) हैं। वायु वेग सम जिनकी गति है, वह भगवान्* ***चल*** *(७६०) हैं। जिन्हें अभिमान नहीं है, ऐसे प्रभु* ***अमानी*** *(७६१) हैं। सभी देवता और प्राणी जिनका सम्मान करते हैं वह* ***मानद*** *(७६२) हैं।*

करे जग प्रभु <u>मान्या</u> पूजन । <u>लोकस्वामी</u> पति त्रिभुवन ।।
<u>त्रिलोकध्रका</u> धारें वसुधा । अतिशय ज्ञानी प्रभु <u>सुमेधा</u> ।।(२७२)

भावार्थ: *जग से पूजित प्रभु* ***मान्या*** *(७६३) हैं। तीनों लोकों के स्वामी* ***लोकस्वामी*** *(७६४) हैं। पृथ्वी को धारण करने वाले* ***त्रिलोकध्रका*** *(७६५) है। अत्यंत ज्ञानी प्रभु* ***सुमेधा*** *(७६६) हैं।*

यज्ञ आहुति दें जब यजमान । होते प्रकट <u>मेधजा</u> भगवान ।।
अनुवासिन् जीव जंतु भुवन । करें कृतार्थ <u>धन्य</u> भगवन ।।
अमोघ <u>सत्यमेधा</u> स्वस्त्ययन । करें धारण <u>धराधर</u> भुवन ।।(२७३)

भावार्थ: *यजमान जब यज्ञ आहुति देते हैं तब प्रभु* ***मेधजा*** *(७६७) प्रकट होते हैं। भूमि में वास करने वाले जीव जंतुओं को* ***धन्य*** *(७६८) प्रभु कृतार्थ करते हैं।* ***सत्यमेधा*** *(७६९) का आशीर्वाद अमोघ है। पृथ्वी को धारण करने वाले* ***धराधर*** *(७७०) हैं।*

सूर्य सम हैं जो तेजोवत् । करें <u>तेजोवृष</u> कर्म पुण्यवत ।।
अति प्रभाशाली जिनका तन । हैं वह श्री <u>द्युतिधर</u> भगवन ।।(२७४)

भावार्थ: *सूर्य समान तेज वाले, शुभ कर्म करने वाले* ***तेजोवृष*** *(७७१) हैं। जिनका शरीर अत्यंत प्रभाशाली है, उन प्रभु को* ***द्युतिधर*** *(७७२) नाम से पुकारते हैं।*

प्रभु <u>सर्वशस्त्रभृतांवर</u> । हैं शस्त्र सुशोभित शूरवर ।।
करें स्वीकार पुष्प भगवन । दें शांति <u>प्रग्रह</u> सब भूजन ।।(२७५)

भावार्थ: शस्त्र सुशोभित अत्यंत शूरवीर प्रभु **सर्वशस्त्रभृतांवर** (७७३) है। (भक्तों द्वारा दिए गए) पुष्पों को स्वीकार कर सब प्राणियों को शांति देने वाले **प्रग्रह** (७७४) हैं।

करते वश में संत और सुर । करते वध हरि <u>निग्रह</u> असुर ।।
हो <u>व्यग्र</u> हरि का जन्म न अंत । रूप वृषभ <u>नैकश्रन्ग</u> नियंत ।।(२७६)

भावार्थ: *प्रभु **निग्रह** (७७५) संतों और देवताओं को अपने वश में करते हैं, असुरों का वध करते हैं। प्रभु **व्यग्र** (७७६) का न जन्म होता है और न मृत्यु (अमर अजर हैं)। वृषभ रूप (चार सींग वाले रूप) में भगवान् **नैकश्रन्ग** (७७७) हैं।*

हैं गद भाई कृष्ण भगवन । हैं वह संत रुप अनुज महन ।।
हैं आयु में कृष्ण अग्रज । अतः कहें उन्हें जग <u>गदाग्रज</u> ।।
प्रसिद्ध जग हरि हैं चतुर्वर्पन् । अव्याकृत विराट तुरीयन ।।
सूत्रात्म करें ग्रन्थ विवरन । अतः हैं <u>चतुर्मूर्ति</u> भगवन ।।(२७७)

भावार्थ: *कृष्ण भगवान के भाई गद हैं। वह (प्रभु के) संत स्वरूप महात्मा अनुज हैं। आयु में अधिक होने के कारण कृष्ण को जग **गदाग्रज** (७७८) कहता है। भगवान् की चार मूर्तियां विश्व में प्रसिद्ध हैं, अव्याकृत, विराट, सूत्रात्मा एवं तुरीय, ऐसा ग्रन्थ वर्णन करते हैं, अतः वह हरि **चतुर्मूर्ति** (७७९) हैं।*

हैं चार भुजा धारी नियंत । <u>चतुर्बाहु</u> सुमिरैं सब संत ।।
हैं चार व्यूह पति भगवन । छंद वेद महापुरुष और तन ।।
पाएं विजय इन्द्रिय भूजन । करें <u>चतुर्व्यूह</u> का पूजन ।।(२७८)

भावार्थ: *सभी संतों द्वारा सुमरित चार भुजा धारी प्रभु को **चतुर्बाहु** (७८०) कहा गया है। भगवान् चार व्यूहों के स्वामी हैं - छंद, वेद, तन और महापुरुष। **चतुर्व्यूह** (७८१) भगवान् के पूजन से प्राणियों को इन्द्रियों पर विजय प्राप्त होती है।*

करें ग्रन्थ वर्णन चार वर्ण । करें <u>चतुर्गति</u> वृद्धि इन वर्ण ।।
चित्त बुद्धि अवलेप और मन । रहित <u>चतुरात्मा</u> इन अवगुन ।।(२७९)

भावार्थ: *ग्रंथों में चार वर्णों का उल्लेख किया गया है (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और कर्मी)। इन वर्णों की वृद्धि* ***चतुर्गति*** *(७८२) करते हैं (इन वर्णों का विकास करते हैं)। मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त,* ***चतुरात्मा*** *(७८३) इन अवगुणों से रहित हैं।*

है ग्रन्थ और वेद वर्णित । भाव चार प्रकार विद्यति ।।
अर्थ धर्म काम और मोक्षा । होते प्रगट <u>चतुर्भाव</u> इच्छा ।।
अथर्व यजुर साम ऋगवेद । हैं <u>चतुर्वेदवित</u> स्वयंभू वेद ।।(२८०)

भावार्थ: *शास्त्रों में चार भावों का उल्लेख है - अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष, यह चारों भाव प्रभु की इच्छा से ही प्रगट होते हैं, अतः भगवान्* ***चतुर्भाव*** *(७८४) हैं। चार वेद हैं- अथर्व, यजुर, साम और ऋगवेद। प्रभु स्वयं ही वेद हैं, अतः* ***चतुर्वेदवित*** *(७८५) हैं।*

व्यापक जगत एक ही ईश्वर । हैं वही <u>एकपात</u> देवेश्वर ।।
हैं ज्ञानी विश्व चक्र भगवन । करें <u>समावर्त</u> माया हरन ।।(२८१)

भावार्थ: *देवताओं के स्वामी* ***एकपात*** *(७८६) एक ही ईश्वर हैं। संसार चक्र के ज्ञानी भगवान्* ***समावर्त*** *(७८७) (भक्तों की) माया का हरण कर लेते हैं।*

सर्वभूत सर्वव्यापक आत्मा । विषयहीन <u>अनिवृतात्मा</u> ।।
हैं अमर अजर हरि <u>दुर्जया</u> । भय <u>दुरतिक्रम</u> न करें अवज्ञा ।।(२८२)

भावार्थ: *सर्वभूत, सर्वव्यापक, विषयहीन आत्मा* ***अनिवृतात्मा*** *(७८८) हैं। भगवान् अमर, अजर एवं अजेय है, अतः* ***दुर्जया*** *(७८९) है। जिनके भय से (देवता भी) कोई अवज्ञा का साहस नहीं कर सकता, ऐसे प्रभु को* ***दुरतिक्रम*** *(७९०) नाम से सम्बोधित किया गया है।*

घोर तप से हों हरि दर्शन । <u>दुर्लभ</u> नाम विख्यात भुवन ।।
<u>दुर्गम</u> हरि सब दुःख हर्ता । दें दर्शन <u>दुर्ग</u> कठिनता ।।(२८३)

भावार्थः *घोर तप से (दुर्लभता से) प्रभु के दर्शन होते हैं, अतः विश्व उन्हें* ***दुर्लभ*** *(७९१) नाम से पुकारता है। सब दुःखों को हरने वाले भगवान्* ***दुर्गम*** *(७९२) हैं। प्रभु का दर्शन अत्यंत कठिन है (घोर तप से ही भगवान की प्राप्ति होती है), अतः उन्हें* ***दुर्ग*** *(७९३) कह कर सम्बोद्धित किया जाता है।*

बसते हिय अति दुष्कर योगी । दुरावास हैं असाध्य भोगी ।।
दुरारिहा करें वध असुर । हरि विरुद्ध सभी आडम्बर ।।(२८४)

भावार्थः *जो योगियों के हृदय में भी कठिनता से बसते हैं (योगियों को भी उन्हें प्राप्त करने के लिए घोर तप करना पड़ता है) तथा भोगियों के लिए असाध्य हैं, वह प्रभु* ***दुरावास*** *(७९४) हैं। आडम्बरों के विरुद्ध, एवं असुरों का संहार करने वाले भगवान्* ***दुरारिहा*** *(७९५) हैं।*

सुन्दर अति भगवंत स्वरूप । हैं शुभांग कामदेव अनुरूप ।।
लोकसारन्गा सार विश्व के । सुतन्तु नियंत तंतु इस जग के ।।(२८५)

भावार्थः *भगवान् का स्वरुप कामदेव के समान सुन्दर है, अतः वह* ***शुभांग*** *(७९६) हैं। विश्व के सार होने के कारण प्रभु को* ***लोकसारन्गा*** *(७९७) कहा गया है। इस जगत के हरि तंतु हैं (आधार हैं), अतः* ***सुतन्तु*** *(७९८) हैं।*

हैं तन्तुवर्धना जग पालक । हैं इन्द्रकर्मा धर्म रक्षक ।।
करें भव्य कार्य महाकर्मा । धर्म कर्म करें कृतकर्मा ।।(२८६)

भावार्थः *जगत के पालनहार हैं, अतः* ***तन्तुवर्धना*** *(७९९) हैं। धर्म के रक्षक हैं, अतः* ***इन्द्रकर्मा*** *(८००) हैं। महान कार्यों के कर्ता* ***महाकर्मा*** *(८०१) हैं। धर्मरूप कर्म करते हैं, इसलिए उन्हें* ***कृतकर्मा*** *(८०२) कहा गया है।*

हैं रचयिता प्रभु चतुर्वेद । समाहित कृतागम सब वेद ।।
लें जन्म प्रभु सदैव स्व-इच्छा । कारण जन्म उद्भव सत रक्षा ।।(२८७)

भावार्थः *भगवान् ही चारों वेद के रचयिता हैं, अतः वेद उन्हीं में समाहित होने के कारण उन्हें* ***कृतागम*** *(८०३) नाम से जाना गया है। सत्य की रक्षा के लिए प्रभु स्वयं की इच्छा से ही अवतरित होते हैं, इसलिए उन्हें* ***ऊद्भव*** *(८०४) नाम से सम्बोद्धित किया गया है।*

सुन्दर सम नहीं कोई रूप । हैं सुन्द हरि शोभन स्वरुप ।।
है रत्न जड़ित नाभि नियंत । रत्ननाभ हैं कृपालु अनंत ।।(२८८)

भावार्थः *प्रभु के सुंदरता की तुलना नहीं की जा सकती, अतः वह* ***सुन्दर*** *(८०५) हैं। शोभन रूप वाले भगवान्* ***सुन्द*** *(८०६) हैं। जिनकी नाभि रत्न जड़ित है, ऐसे कृपालु भगवान् को* ***रत्ननाभ*** *(८०७) नाम से जाना गया है।*

मंजुल नैन नाम सुलोचन । अर्क सभी के संकट मोचन ।।
हैं अन्नपूर्णा हरि वाजसन । लिए रूप मत्स्य श्रंगी भगवन ।।(२८९)

भावार्थः *सुन्दर नेत्र वाले प्रभु* ***सुलोचन*** *(८०८) हैं। सभी के संकट हरने वाले भगवान्* ***अर्क*** *(८०९) हैं। अन्नपूर्णा प्रभु* ***वाजसन*** *(८१०) हैं। मत्स्य रूप में अवतार लेने वाले भगवान्* ***श्रंगी*** *(८११) हैं।*

जीतें रिपु हरि जयंत सदा । सर्वविज्जयी विजयी सर्वदा ।।
समान कंचन नख से शिख अंग । हैं सुवर्णबिन्दु अति शुभंग ।।(२९०)

भावार्थः *शत्रुओं को सदैव जीतते हैं (अर्थात शत्रुओं को जीतने के हेतु हैं), अतः* ***जयंत*** *(८१२) हैं। प्रभु की विजय सदैव होती है अतः* ***सर्वविज्जयी*** *(८१३) हैं। नख से शिख तक सम्पूर्ण अंग अति शुभ स्वर्ण निर्मित हैं, इसलिए* ***सुवर्णबिन्दु*** *(८१४) हैं।*

हैं रहित राग द्वेष भगवन । करें दूर अक्षोभ्य असूयन ।।
सुर असुर भूजन के ईश्वर । नाम सर्ववागीश्वरेश्वर ।।(२९१)

भावार्थः *राग द्वेष से रहित तथा ईर्षा (भाव) दूर करने वाले* ***अक्षोभ्य*** *(८१५) हैं। सुर, असुर, भूजन के स्वामी* ***सर्ववागीश्वरेश्वर*** *(८१६) हैं।*

है महान सम सरोवर हृदय । दें निर्वाण <u>महाह्रद</u> दिव्य ।।
है कठिन समझना विस्मापन । <u>महागर्त</u> महारथी भगवन ।।(२९२)

भावार्थ: *निर्वाण देने वाले दिव्य प्रभु का हृदय सरोवर के समान वृहद है, अतः वह* ***महाह्रद*** *(८१७) हैं। महारथी प्रभु* ***महागर्त*** *(८१८) की माया समझना दुस्तर है।*

नहीं है सम्बन्ध किसी काल । भूत वर्तमान भविष्य काल ।।
करें नाश तम जो प्रभु भूजन । कहें उन्हें <u>महाभूत</u> भगवन ।।
बसें हरि माँ श्री के हृदय । हैं <u>महानिधि</u> दिव्य पूज्य ।।(२९३)

भावार्थ: *तीनों काल (भूत वर्तमान भविष्य) से असंबंधित), प्राणियों का अंधकार दूर करने वाले प्रभु को* ***महाभूत*** *(८१९) नाम से जाना जाता है। माँ श्री (लक्ष्मी) के हृदय में बसने वाले पूज्य दिव्य भगवान् को* ***महानिधि*** *(८२०) पुकारा गया।*

मन मोहक किए भू भार मुक्त । करें <u>कुमुद</u> संत अनुमोदित ।।
किए वध हिरण्डयाक्ष अघकर । हैं सम पुष्प सुन्दर <u>कुंदर</u> ।।(२९४)

भावार्थ: *मन को मोहने वाले भगवान् ने संतों को प्रसन्न करने एवं पृथ्वी को भार मुक्त (असंतों से) करने के लिए* ***कुमुद*** *(८२१) रूप में जन्म लिया। (वराह अवतार में) पापी हिरण्डयाक्ष को विदीर्ण करने वाले प्रभु का* ***कुंदर*** *(८२२) स्वरुप (कुंद) पुष्प के समान सुन्दर है।*

दिए दान कश्यप ऋषि भुवन । दें मंगल आयु <u>कुन्द</u> भगवन ।।
जब वर्षा तब हो भू शीतल । करें <u>प्रजन्य</u> संत हिय शीतल ।।(२९५)

भावार्थ: *कश्यप ऋषि को पृथ्वी दान देने वाले प्रभु जो मंगल और आयु देने वाले हैं वह प्रभु* ***कुंद*** *(८२३) हैं। जिस प्रकार वर्षा से भू शीतल होती है, उसी प्रकार* ***पर्जन्य*** *(८२४) संतों के हृदय को शीतलता देते हैं (शांति प्रदान करते हैं)।*

है प्रभु दिव्य नाम <u>पावन</u> । सहज मिलें <u>अनिल</u> भगवन ।।
मिली सुधा जब सिंधु मन्थन । करें <u>अमृताश</u> अमृत वितरन ।।(२९६)

भावार्थ: *प्रभु दिव्य हैं, अतः* ***पावन*** *(८२५) हैं। (संतों को) सहजता से मिलते हैं, अतः* ***अनिल*** *(८२६) हैं। समुन्द्र मंथन में मिले अमृत को (देवों में) वितरण करने वाले प्रभु* ***अमृताश*** *(८२७) हैं।*

हैं अमर अजर सुन्दर भगवन । हरें अमृतवपु विपत्ति जन ।।
हैं सर्वज्ञ सर्ववित नारायन । सर्वतोमुख के सर्वत्र आनन् ।।(२९७)

भावार्थ: *प्राणियों की विपदाओं का हरण करने वाले प्रभु अजर, अमर एवं सुन्दर हैं, अतः वह* ***अमृतवपु*** *(८२८) हैं। प्रभु सर्ववित (सब कुछ जानने वाले) हैं, इसलिए* ***सर्वज्ञ*** *(८२९) हैं। भगवान् के मुख सब ओर (सर्वव्यापी) हैं, अतः* ***सर्वतोमुख*** *(८३०) हैं।*

मिलें सुलभ भक्त निष्ठावान् । हैं अभोक्त सुव्रत भगवान् ।।
करें कार्य सिद्ध स्व-क्षमता । जीतें वैरी सहज शत्रुजिता ।।(२९८)

भावार्थ: *निष्ठावान भक्त को (प्रभु)* ***सुलभ*** *(८३१) मिलते हैं। अभोक्त हैं, इसलिए भगवान्* ***सुव्रत*** *(८३२) हैं। सर्व कार्य अपनी ही क्षमता से करते हैं (अर्थात किसी पर भी निर्भर नहीं हैं), अतः* ***सिद्ध*** *(८३३) हैं। शत्रुओं को सहजता से ही जीत लेते हैं, इसलिए* ***शत्रुजिता*** *(८३४) हैं।*

कांपें रिपु सुन नाम कृष्ना । दें दुःख असुर शत्रुतापना ।।
हरते माया भक्त स्व-इच्छा । लिए जन्म न्यग्रोध संत रक्षा ।।(२९९)

भावार्थ: *जिनका कृष्ण नाम सुनते ही शत्रु कांपने लगते हैं और जो असुरों को पीड़ा देने वाले है (अर्थात उनका संहार करने वाले हैं), उन प्रभु को* ***शत्रुतापना*** *(८३५) नाम से सम्बोधित किया गया है। जो संतों की रक्षा के लिए अवतरित हुए हैं तथा अपनी इच्छा से भक्तों की माया को हर लेते हैं, वह भगवान्* ***न्यग्रोध*** *(८३६) हैं।*

अन्नपूर्णा रूप दें जीवन । उदुम्बर हैं श्रेष्ठ भगवन ।।
हैं अविनासी साकार प्रत्यक्ष । अश्वत्थ हैं समान वृहद वृक्ष ।।(३००)

भावार्थ: *श्रेष्ठ भगवान् जो अन्नपूर्णा रूप में जीवन दान (अन्न दान) देते हैं, वह प्रभु **उदुम्बर** (८३७) हैं। प्रत्यक्ष रूप में साकार एक बड़े वृक्ष के सामान अविनासी प्रभु **अश्वत्थ** (८३८) हैं।*

किए असुर चाणूर वध भगवन । कहे जग <u>चाणूरांधृनिषूदन</u> ।।
ओज समान सहस्त्र सूर्य । नाम <u>सहस्रार्चि</u> हरि दिव्य ।।(३०१)

भावार्थ: *जिन्होंने चाणूर असुर का वध किया, उन्हें जग **चाणूरांधृनिषूदन** (८३९) कहता है। जिन दिव्य प्रभु का ओज सहस्त्र सूर्यों के समान है, वह **सहस्रार्चि** (८४०) हैं।*

काली कराली सुलोहिता । मनोज सुधुम्र विश्वरुचिता ।।
स्फुलिंगनी हैं यह सप्त जिह्वय । हिय संत करें रमण <u>सप्तजिव्ह</u> ।।(३०२)

भावार्थ: *काली, कराली, सुलोहिता, मनोज, सुधुम्र, विश्वरुचिता एवं स्फुलिंगनी, यह (शास्त्र वर्णित) सात जिह्वय हैं। इन (सात जिह्वय के स्वामी) संतों के हृदय में रमण करने वाले **सप्तजिव्ह** (८४१) हैं।*

सप्त दीप्ति और सप्त समिधा । हैं मंत्र वर्ण वाचित <u>सप्तैधा</u> ।।
सप्त अभिधान हैं हरि वाहन । श्रुति कहे हरि <u>सप्तवाहन</u> ।।(३०३)

भावार्थ: *मंत्र वर्ण (ग्रन्थ) के अनुसार भगवान् की सप्त दीप्ति (शक्ति, ज्ञान, दया, सौंदर्य, प्रेम, शांति और आनंद) एवं सप्त समिधा (विभिन्न देवताओं के यज्ञ हवन में प्रयोग होने वाली सप्त समिधा को भगवान् की सप्त समिधा कहा जाता है। सूर्य की समिधा: मदार की लकड़ी, चन्द्रमा की समिधा: पलाश की लकड़ी, मंगल की समिधा: खैर की लकड़ी, बुध की समिधा: चिड़चिडा की लकड़ी, बृहस्पति की समिधा: पीपल की लकड़ी, शुक्र की समिधा: गूलर की लकड़ी, शनि की समिधा: शमी की लकड़ी) हैं, अतः उन्हें **सप्तैधा** (८४२) कहकर पुकारा जाता है। भगवान् के वाहन की सात उपाधियाँ (गरुड़, विष्णु वाहन, पक्षीराज, गरुडा:, विशालकाय:, सूर्यपुत्र:, अमृत:) हैं, इसलिए श्रुति उन्हें **सप्तवाहन** (८४३) कहकर उच्चारित करती है।*

हैं आकार-रहित जगाधार । <u>अमूर्ति</u> करें दमन प्रतिकार ।।
हैं निष्पाप <u>अनघ</u> परमेश्वर । प्रपंचहीन <u>अचिन्त्य</u> ईश्वर ।।(३०४)

भावार्थः *आकार रहित (निराकार) प्रभु जो प्रतिकार (की भावना) का दमन करते हैं, उन्हें* ***अमूर्ति*** *(८४४) नाम से बुलाया गया है। निष्पाप प्रभु* ***अनघ*** *(८४५) हैं। प्रपंचहीन होने के कारण उन्हें* ***अचिन्त्य*** *(८४६) नाम दिया गया है।*

हों भीर असुर सुन <u>भयकृदा</u> । <u>भयनाशन</u> दूर करें आपदा ।।
अति सूक्ष्म <u>अणु</u> परमात्मा । ब्रह्म रुप है <u>बृहत</u> आत्मा ।।(३०५)

भावार्थः ***भयकृदा*** *(८४७) नाम सुनते ही असुर भयभीत हो जाते हैं।* ***भयनाशन*** *(८४८) (भक्तों के) कष्टों को दूर करते हैं। परमात्मा का आकार अति सूक्ष्म है, अतः वह* ***अणु*** *(८४९) हैं। ब्रह्म स्वरुप होने के कारण ईश्वर को* ***बृहत*** *(८५०) कहा गया है।*

करें दूर क्रश भौतिकता । दें स्थूल हरि असीम दिव्यता ।।
सत रज तम त्रिगुण नियंत्रक । हैं गुणभृत विश्व के शासक ।।(३०६)

भावार्थः *सांसारिकता को दूर करने वाले (अतः निर्वाण की और ले जाने वाले) प्रभु* ***क्रश*** *(८५१) हैं। सर्वात्मिक दिव्यत्ता को देने वाले भगवान्* ***स्थूल*** *(८५२) हैं। सत, रज और तम त्रिगुणों के अधिष्ठाता विश्व के शासक* ***गुणभृत*** *(८५३) हैं।*

हैं <u>निर्गुण</u> द्वेषहीन भगवंत । <u>महान</u> सर्वगत परम नियंत ।।
है नहीं आधार <u>अधृत</u> जनन । रहें <u>सुधृत</u> सदैव प्रसन्न ।।(३०७)

भावार्थः *द्वेषहीन होने के कारण प्रभु को* ***निर्गुण*** *(८५४) नाम से सम्बोद्धित किया जाता है। सर्वगत पवित्र भगवान्* ***महान*** *(८५५) हैं। जिनके जन्म का कोई आधार नहीं है (अतः स्वेक्षा से जन्म लेते हैं), वह हरि* ***अधृत*** *(८५६) हैं। भगवान्* ***सुधृत*** *(८५७) सदैव प्रसन्न रहते हैं हैं।*

वेद रचयिता <u>स्वास्य</u> भगवन । <u>प्राग्वंश</u> आदि जन्म निरूपन ।।
लिए जन्म हरि स्वैच्छा भूतल । <u>वंशवर्धन</u> करें पोषित थल ।।(३०८)

भावार्थः *वेद को रचने वाले प्रभु* ***स्वास्य*** *(८५८) हैं। भगवान् आदि जन्म के स्वरुप हैं (उनके जन्म का समय कोई नहीं जानता), अतः उन्हें* ***प्राग्वंश*** *(८५९) कह कर पुकारा गया। स्वेक्षा से पृथ्वी पर अवतार लेने वाले भगवान् भूतल जीवों को पोषित करते हैं, इसलिए उन्हें* ***वंशवर्धन*** *(८६०) नाम से सम्बोधित किया गया है।*

भू भार धरें रूप शेषनाग । जपत भारभृत जागें सुभाग ।।
गावें ग्रंथ गुण भगवान । कथित हरि हैं अति बुद्धिमान ।।(३०९)

भावार्थः *शेषनाग रूप में पृथ्वी का भार धारण करने वाले* ***भारभृत*** *(८६१) का नाम जपने से सौभाग्य की प्राप्ति होती है। जिन प्रभु की ग्रन्थ प्रशंसा करते हैं और जो अति बुद्धिमान हैं , उन भगवान् को* ***कथित*** *(८६२) नाम से बुलाया जाता है।*

है वेद ग्रन्थ योग का ज्ञान । योगी ऋषि कपिल समान ।।
स्थिर समाधी शांत चित्त । हैं योगीश दृढ़ प्रत्येक सत्त ।।(३१०)

भावार्थः *ऋषि कपिल के समान वेद, ग्रन्थ, योग आदि के ज्ञाता प्रभु* ***योगी*** *(८६३) हैं। जिनका मन सदैव शांत और समाधी में स्थित रहता है और हर परस्थिति में दृढ़ रहते हैं, उन प्रभु को* ***योगीश*** *(८६४) कह कर सम्बोद्धित किया गया है।*

करें पूर्ण कामना अनंता । करें सर्वकामद नाश चिंता ।।
नर नारी भटकें भव सागर । आश्रम दें विश्रांति निरंतर ।।(३११)

भावार्थः *जो चिंताओं का नाश करते हैं और कामनाएं पूर्ण करते हैं, वह* ***सर्वकामद*** *(८६५) हैं। इस भवसागर में भटके हुए नर नारियों को जो शांति प्रदान करते हैं, वह* ***आश्रम*** *(८६६) हैं।*

श्रमण करें असंत बिभीषक । हों लीन क्षाम प्रलय जीवक ।।
दें शीतलता सम वृक्ष भगवन । सुपर्ण पूर्ण करें सब मन्मन् ।।(३१२)

भावार्थ: श्रमण *(८६७) दुष्टों को भयभीत करते हैं। प्रलय में सब जीव* ***क्षाम*** *(८६८) में लीन हो जाते हैं। वृक्ष की छाया के समान शीतलता प्रदान करते हुए* ***सुपर्ण*** *(८६९) (संसार वृक्ष रूप परमात्मा के सुन्दर पत्ते) (भक्तों की) सब इच्छाएं पूर्ण करते हैं।*

नियंत करें प्रवाहित वायु । दें हरि <u>वायुवाहन</u> आयु ।।
धनु सोहित <u>धनुर्धर</u> शरीर । लिए जन्म राम रूप हरि धीर ।।(३१३)

भावार्थ: *वायु को प्रवाहित कर प्रभु* ***वायुवाहन*** *(८७०) (जीवों को) आयु प्रदान करते हैं। राम रूप में अवतरित धैर्यवान प्रभु के शरीर पर धनुष शोभायमान है, इसलिए उन्हें* ***धनुर्धर*** *(८७१) कह कर सम्बोद्धित किया गया है।*

दशरथ नन्दन धनुर्विज्ञानी । <u>धनुर्वेद</u> प्रभु पूजें ज्ञानी ।।
प्रभु <u>दण्ड</u> दें दंड दुर्जन । करें <u>दमयिता</u> व्यग्रता दमन ।।(३१४)

भावार्थ: *दशरथ के पुत्र (श्री राम) जिनकी ज्ञानी पूजा करते हैं, वह धनुर्विज्ञान में निपुण हैं, अतः* ***धनुर्वेद*** *(८७२) हैं। असुरों को दण्डित करने वाले भगवान्* ***दण्ड*** *(८७३) हैं।* ***दमयिता*** *(८७४) व्यग्रता का दमन करते हैं।*

हैं न्यायाधीश <u>दम</u> भगवन । दें फल पापी हरि इस वर्पन् ।।
अजय प्रभु <u>अपराजित</u> नाम । सक्षम <u>सर्वसह</u> सम्पूर्ण काम ।।(३१५)

भावार्थ: *दुष्टों को न्यायाधीश के रूप में जो दण्डित करते हैं, वह प्रभु* ***दम*** *(८७५) हैं। भगवान् को कोई पराजित नहीं कर सकता, वह अजेय हैं, अतः* ***अपराजित*** *(८७६) नाम से जाने जाते हैं। सब कार्यों में सक्षम भगवान्* ***सर्वसह*** *(८७७) हैं।*

हैं हरि <u>नियंत</u> विश्व शासक । हैं वह <u>नियम</u> सूत्र संचालक ।।
अजर अमर अमिट हैं भगवंत । <u>यम</u> अनश्वर रहित आदि अंत ।।(३१६)

भावार्थ: *भगवान् विश्व के शासक हैं, अतः* ***नियंत*** *(८७८) हैं। (प्रकृति के) नियमों के सूत्र संचालित करते हैं, अतः* ***नियम*** *(८७९) हैं। अजर, अमर, अमिट, अनश्वर प्रभु* ***यम*** *(८८०) हैं, जिनका कोई आदि और अंत नहीं है।*

हैं सतधर्म समृद्ध <u>सत्यवान</u> । हैं <u>सात्विक</u> सत प्रिय भगवान ।।
हैं <u>सत्य</u> सर्वोत्तम शिक्षक । <u>सत्यधर्मपरायण</u> धर्म पालक ।।(३१७)

भावार्थ: *समृद्ध सत्यधर्मी भगवान्* ***सत्यवान*** *(८८१) हैं। सत्य ही जिनको प्रिय है, वह हरि* ***सात्विक*** *(८८२) हैं। सत्य के सर्वोत्तम शिक्षक प्रभु* ***सत्य*** *(८८३) हैं। धर्म का पालन करने वाले* ***सत्यधर्मपरायण*** *(८८४) हैं।*

लक्ष्य मोक्ष जिन काल प्रलय । हरि <u>अभिप्राय</u> उन संत पूज्य ।।
करें पूर्ण प्रभु अभिलाषा । हरि <u>प्रियार</u> भक्त की आशा ।।(३१८)

भावार्थ: *अंत समय में मोक्ष को लक्ष्य बनाने वाले संतों के पूज्य प्रभु* ***अभिप्राय*** *(८८५) हैं। भक्तों की आशा* ***प्रियार*** *(८८६) भगवान् उनकी इच्छाओं को पूर्ण करते हैं।*

करें अर्चन पूजन नमस्कार । हरि <u>अर्ह</u> समर्पित संसार ।।
करें नर भजन अर्चन पूजन । दें <u>प्रियकृत</u> फल शुभ भूजन ।।(३१९)

भावार्थ: *भगवान्* ***अर्ह*** *(८८७) को संसार समर्पित है अतः उनका पूजन, भजन, अर्चन करें। जिनकी स्तुति, भजन एवं जप करने से प्राणियों को शुभ फल की प्राप्ति होती है, वह प्रभु* ***प्रियकृत*** *(८८८) हैं।*

लिए जन्म हरि हेतु स्नेह सुजन । <u>प्रीतिवर्धन</u> हैं प्रसिद्ध भुवन ।।
हरि हिय है समान आकाश । <u>विहायसगति</u> संत की आस ।।(३२०)

भावार्थ: *संतों से प्रेम के कारण प्रभु अवतरित होते हैं इस कारण विश्व उन्हें* ***प्रीतिवर्धन*** *(८८९) कह कर पुकारता है। सत्पुरुषों की आशा भगवान्* ***विहायसगति*** *(८९०) का हृदय अत्यंत विशाल है। (अर्थात वह संतों के अवगुण नहीं देखते)।*

हैं नारायण ज्ञान स्वरूप । हैं हरि <u>ज्योति</u> रवि अनुरूप ।।
<u>सुरुचि</u> हैं सुभग रूचि प्रज्ञ । <u>हुतभुक</u> भोगें आहुति यज्ञ ।।(३२१)

भावार्थ: *सूर्य के समान परम ज्ञानी ज्योतिस्वरूप प्रभु **ज्योति** (८९१) हैं। सुन्दर रूचि (दीप्ति) वाले अति बुद्धिमान हरि **सुरुचि** (८९२) हैं। यज्ञ की आहुति स्वीकार करने वाले भगवान् **हुतभुक** (८९३) हैं। (यज्ञ आहुति स्वीकार कर मनोवांछित फल देते हैं)।*

सब नर सुर प्रिय विभु भगवन । रवि करें रस सम सूर्य ग्रहन ।।
सर्वत्र शोभित हरि विरोचन । देते सूर्य श्री दिव्य जनन ।।(३२२)

भावार्थ: *देवताओं के प्रिय सर्वव्यापी प्रभु **विभु** (८९४) हैं। आदित्य के समान रस ग्रहण करने वाले प्रभु को **रवि** (८९५) कह कर बुलाया गया है। सर्वत्र शोभायमान भगवान् **विरोचन** (८९६) हैं। शोभित श्री (लक्ष्मी/ धन धान्य) को जन्म देने वाले **सूर्य** (८९७) हैं।*

दें हरि सवित जन्म भूजन । नैन सम सूर्य रविलोचन ।।
नित्य सर्वगत अनन्त प्रिय । करें हुतभुग भोग यज्ञ हव्य ।।(३२३)

भावार्थ: *भू जीवों को उत्पन्न करने वाले प्रभु **सवित** (८९८) हैं। सूर्य के समान नेत्र वाले भगवान् **रविलोचन** (८९९) हैं। प्रिय, पावन तथा सर्वव्यापी **अनंत** (९००) हैं। यज्ञ हवि को भोगने (स्वीकार करने) वाले **हुतभुग** (९०१) हैं।*

करें भोक्ता त्रिलोक पालन । करें सुखद शोक मुक्त जन ।।
हेतु रक्षा संत जन्मे कई बार । नैकज करें दुष्टों पर वार ।।(३२४)

भावार्थ: *तीनों लोकों का पालन करने वाले **भोक्ता** (९०२) नाम से जाने जाते हैं। संतों को शोक मुक्त करने वाले **सुखद** (९०३) हैं। संतों की रक्षा के लिए बार बार पृथ्वी पर जन्म लेने वाले हरि **नैकज** (९०४) हैं।*

हैं आदि रूप अग्रज भगवान । हैं शांत अनिर्विन्द्य विचक्षन ।।
क्षमाशील सदामश्री इष्ट । आश्रित जग हरि लोकधिष्ठ ।।(३२५)

भावार्थः *भगवान् आदि रूप हैं, इसलिए **अग्रज** (१०५) हैं। शांत रहते हैं, इसलिए बुद्धिमान **अनिर्विन्द्य** (१०६) नाम से जाने जाते हैं। क्षमाशील प्रभु **सदामश्री** (१०७) हैं। विश्व जिन पर आधारित (आश्रयी)है, वह प्रभु **लोकधिष्ठ** (१०८) हैं।*

करें विचित्र कर्म <u>अद्भुत</u> । है काल विकल्प <u>सनात</u> अनंत ।।
है वय अधिक श्री नाभिजन्म । हैं अनादि हरि <u>सनातनतम</u> ।।(३२६)

भावार्थः *प्रभु की कार्य करने की प्रणाली विचित्र है (भगवान् के स्वरुप, शक्ति, व्यापार और कार्य अद्भुत हैं), अतः वह **अद्भुत** (१०९) हैं। काल प्रभु का ही विकल्प है, इसलिए वह **सनात** (११०) (चिरकाल वाची निपात) हैं। जिनका न कोई आदि है न अंत, और ब्रह्मा से भी अधिक आयु के हैं, वह हरि **सनातनतम** (१११) (अत्यंत प्राचीन) हैं।*

हैं सम बड़वानल <u>कपिल</u> ईश । हैं <u>कपि</u> श्रेष्ठ समान तपीश ।।
हो लीन जग हरि प्रलय काल । <u>अप्ययः</u> करें नाश त्रिकाल ।।(३२७)

भावार्थः *(बड़वानल का कपिल वर्ण होता है) बड़वानल रूप होने के कारण प्रभु को **कपिल** (११२) कहा गया है। सूर्य (तपीश) के समान श्रेष्ठ है, अतः **कपि** (११३) हैं। (श्रुति में वराह को कपि कहा गया है क्योंकि भगवान् ने वराह रूप में अवतार लिया था, इसलिए वह कपि कहलाये)। प्रलय काल में त्रिलोक नष्ट होकर प्रभु में समा जाता है, अतः भगवान् **अप्ययः** (११४) हैं।*

हैं हरि सुख मंगलदाता । <u>स्वस्तिद</u> प्रभु आनंददाता ।।
जब जपें अनंत पाएं आनंद । हैं <u>स्वस्तिकृत</u> अवतार सुनंद ।।(३२८)

भावार्थः *सुख, मंगल और आनंद प्रदान करने वाले प्रभु **स्वस्तिद** (११५) हैं। जिनके भजने से आनंद की अनुभूति होती है, ऐसे सुहाने (सुनन्द) अवतार को **स्वस्तिकृत** (११६) नाम से पुकारा गया है।*

हो अति आनन्द जिनके जपन । हैं वह श्री <u>स्वस्ति</u> भगवन ।।
हैं रक्षक संत मंगल दायक । <u>स्वस्तिभुक</u> हैं अमृत दायक ।।(३२९)

भावार्थ: *प्रभु* ***स्वस्ति*** *(११७) के जपने से अति आनंद मिलता है। अमृत वितरित करने वाले, संतो की रक्षा कर उन्हें मंगल प्रदान करने वाले प्रभु को* ***स्वस्तिभुक*** *(११८) पुकारा जाता है।*

करे स्मरण नाम हो कल्यान । हैं वह <u>स्वस्तिदक्षिण</u> भगवान् ।।
कर्म रोग कोप हैं त्रिरौद्र । रहित त्रिरौद्र हैं <u>अरौद्र</u> ।।(३३०)

भावार्थ: *जिनके नाम के स्मरण से कल्याण होता है, उन प्रभु को* ***स्वस्तिदक्षिण*** *(११९) नाम से जग जानता है। कर्म, रोग और कोप, ये तीन रौद्र हैं, इन रौद्रों से रहित* ***अरौद्र*** *(१२०) हैं।*

किए धारण भू शेष अवतार । हैं हरि <u>कुंडली</u> भू आधार ।।
है कर सुदर्शन हेतु जन रक्षा । करें <u>चक्री</u> वध असुर स्व-इच्छा ।।(३३१)

भावार्थ: *शेष रूप अवतार में पृथ्वी धारण करने के कारण प्रभु मही के आधार बने, अतः उन्हें* ***कुंडली*** *(१२१) नाम से पुकारा गया। लोक रक्षा के लिए सुदर्शन चक्र धारी भगवान् अपनी इच्छा से दुष्टों का वध करते हैं, वह* ***चक्री*** *(१२२) नाम से जाने गए।*

हैं शूरवीर विलक्षण भगवंत । करें वध <u>विक्रमी</u> रिपु तुरंत ।।
<u>ऊर्जितशासन</u> विधि वेदन । हों सुखी संत करें अनुसरन ।।(३३२)

भावार्थ: *अति विलक्षण शूरवीर प्रभु जो शत्रुओं का वध अल्प समय में कर देते हैं,* ***विक्रमी*** *(१२३) नाम से जाने जाते हैं। (प्रकृति के) नियमों के ज्ञानी हैं, जिनका अनुसरण कर साधु सुख को प्राप्त होते हैं, उन्हें भगवान्* ***ऊर्जितशासन*** *(१२४) के नाम से पुकारा जाता है।*

असंभव करें हरि गुण वर्णन । हैं <u>शब्दातिग</u> शुभ भगवन ।।
गाएं चरित्र वेद और ग्रंथा । हैं <u>शब्दसह</u> प्रभु धर्म संस्था ।।(३३३)

भावार्थ: *प्रभु के गुणों का वर्णन करना असंभव हैं, ऐसे शुभ भगवान्* ***शब्दातिग*** *(९२५) हैं। समस्त वेद और ग्रन्थ जिनका चित्रण करते हैं, धर्म का पाठ पढ़ाने वाले प्रभु को* ***शब्दसह*** *(९२६) नाम से सम्बोद्धित किया जाता है।*

हरि शीतल समान चन्द्रमा । बसें <u>शिशिर</u> सन्त आत्मा ।।
करें नाश तम करें प्रकाश । <u>शर्वरीकर</u> सम रवि आकाश ।।(३३४)

भावार्थ: *चंद्र के समान शीतलता देने वाले* ***शिशिर*** *(९२७) प्रभु संतों की आत्मा में बसते हैं। आकाश स्थित सूर्य के समान अंधकार दूर कर प्रकाश करने वाले भगवान्* ***शर्वरीकर*** *(९२८) हैं।*

कोप रहित हितकर भगवंत । <u>अक्रूर</u> विषय रहित नियंत ।।
पावन कर्म तन मन वानी । <u>पेशल</u> सुमर तरें सब ज्ञानी ।।(३३५)

भावार्थ: *क्रोध एवं विषयों (अवगुणों) से रहित हित करने वाले प्रभु* ***अक्रूर*** *(९२९) हैं। जो तन, मन वाणी और कर्म से पवित्र हैं एवं जिनका नाम स्मरण से ज्ञानी (भवसागर) तर जाते हैं, उनको* ***पेशल*** *(९३०) नाम से जाना जाता है।*

हैं <u>दक्ष</u> हरि सर्व कर्म निपुण । <u>दक्षिण</u> करें नियंत्रित सब गुण ।।
हैं क्षमाशील भगवन हितकर । करें धारण भू <u>क्षमिनामवर</u> ।।(३३६)

भावार्थ: *सर्व कर्म निपुण प्रभु* ***दक्ष*** *(९३१) हैं। (जीवों के) सब गुण का कारण भगवान्* ***दक्षिण*** *(९३२) हैं। मही को धारण करने वाले हितकर एवं क्षमाशील* ***क्षमिनामवर*** *(९३३) हैं।*

ज्ञानी वेद परम पावन भगवन । <u>विद्वित्तं</u> बसते हृदय सुजन ।।
हैं निडर भगवान <u>वीतभय</u> । सुमर नाम हरि हो नाश भय ।।(३३७)

भावार्थ: *संतों के हृदय में वास करने वाले वेदों के ज्ञाता परम पवित्र प्रभु* ***विद्वित्तं*** *(९३४) हैं। निडर भगवान् जो स्मरण करने वालों के लिए भयनाशना (भय को नाश करने वाले) हैं, वह हरि* ***वीतभय*** *(९३५) हैं।*

है पावन परम प्रभु चरित्र । पुण्यश्रवणकीर्तन संत मित्र ।।
तारें भवसागर सम नाविक । उत्तारण अलंकृत सम राविक ।।(३३८)

भावार्थः *संतों के मित्र, परम पवित्र चरित्र वाले प्रभु **पुण्यश्रवणकीर्तन** (९३६) हैं। नाविक समान (भव) सागर पार कराने वाले सूर्य की किरणों की तरह अलंकृत भगवान् **उत्तारण** (९३७) हैं।*

करें अंत दुष्कृतिहा दैत्य । पुण्य सुमर हो हृदय नित्य ।।
करें नाश अनर्थ सूचक स्वप्न । दुःस्वप्ननाशन हैं सम सुमन ।।(३३९)

भावार्थः *दुष्टों का वध करने वाले प्रभु **दुष्कृतिहा** (९३८) नाम से जाने जाते हैं। जिनके स्मरण से हृदय पवित्र हो जाता है, वह भगवान् **पुण्य** (९३९) हैं। अनर्थ सूचक स्वप्नों को जो नष्ट कर देते हैं (अतः दुःस्वप्नों का प्रभाव नष्ट कर देते हैं), वह पुष्प समान **दुःस्वप्ननाशन** (९४०) हैं।*

दें मुक्ति हरि करें पाप हरन । हैं वीरहा भव सागर तारन ।।
युक्त सगुण रक्षण संत रक्षक । हैं संत प्रभु भूजन पालक ।।(३४०)

भावार्थः *भवसागर को खेवने वाले (पार लगाने वाले) एवं पाप हरने वाले मुक्ति दाता प्रभु को **वीरहा** (९४१) नाम से पुकारा जाता है। सत्य गुण समाहित संतों की रक्षा करने वाले भगवान् **रक्षण** (९४२) हैं। प्राणियों के पालक हरि **संत** (९४३) हैं।*

जीवन प्राण रूप जगदीश । पर्यवस्थित सर्ववित ईश ।।
लिए जन्म धर अनेक रूप भुवन । अनन्तरूप हरि भक्त तारन ।।(३४१)

भावार्थः *प्रभु प्राण रूप हैं (प्राणियों को जीवन देते हैं), अतः **जीवन** (९४४) हैं। सर्वव्यापी हैं, इसलिए **पर्यवस्थित** (९४५) हैं। भक्तों को (भव सागर) तारने के लिए अनेक रूप धारण कर पृथ्वी पर अवतार लिया, इस कारण प्रभु को **अनन्तरूप** (९४६) कहा गया।*

हैं पराशक्ति दिव्य नियंत । <u>अनंतश्री</u> के भण्डार अनंत ।।
हैं <u>जितमन्यु</u> अक्रोध भगवन । दें अभय दान <u>भयापह</u> जन ।।(३४२)

भावार्थ: *अपरिमित शक्ति वाले दिव्य प्रभु जिनका भण्डार अनंत (कभी न समाप्त होने वाला है) है, वह **अनंतश्री** (१४७) हैं। क्रोध (मन्यु) से रहित हैं (क्रोध को जीत लिया है), इस कारण उन्हें **जितमन्यु** (१४८) नाम से सम्बोद्धित किया जाता है। जीवों को अभय दान देने वाले भगवान् **भयापह** (१४९) हैं।*

देते फल जन कर्मानुसार । <u>चतुरश्र</u> सम पञ्च न्यायकार ।।
है अपरम्पार चरित्र भगवन । रहें लीन <u>गभीरात्मा</u> चिंतन ।।(३४३)

भावार्थ: *पंचों के समान न्यायाधीश प्राणियों को उनके उनके कर्मानुसार फल देते हैं, अतः **चतुरश्र** (१५०) हैं। हरि चरित्र अपरम्पार है और वह चिंतन (साधना) में लीन रहते हैं, अतः **गभीरात्मा** (१५१) हैं।*

<u>विदिश</u> दिशाओं के स्वामी । हैं देव <u>व्यादिश</u> अनुगामी ।।
न्याय करते कर्म अनुकूल । हैं <u>दिश</u> वेद ग्रंथन के मूल ।।(३४४)

भावार्थ: *(सर्व) दिशाओं के स्वामी **विदिश** (१५२) हैं। देव जिनका अनुसरण करते हैं, वह प्रभु **व्यादिश** (१५३) हैं। वेद ग्रंथों के मूल **दिश** (१५४) भगवान् कर्मों के अनुसार न्याय करते हैं।*

है असंभव जानें आदि अनंत । हैं <u>अनादि</u> प्रसिद्ध भू भगवन ।।
जग आधार <u>भूर्भवः</u> ईश्वर । <u>लक्ष्मी</u> धन धान्य महीश्वर ।।(३४५)

भावार्थ: *प्रभु का आदि और अनंत का जानना असंभव है, अतः वह भगवान् **अनादि** (१५५) नाम से पृथ्वी पर प्रसिद्ध हैं। समस्त जगत (जीवों) के आधार (भू) भगवान् **भूर्भवः** (१५६) हैं। पृथ्वी एवं धन धान्य के स्वामी होने के कारण, उन्हें **लक्ष्मी** (१५७) नाम से जाना जाता है।*

सुमरन से हो हिय शुभ कम्पन । हरि <u>सुवीर</u> हैं विश्वनंदन ।।
ईश भुजबंध करें कल्यान । <u>रुचिरांगद</u> पावन भगवान् ।।(३४६)

भावार्थ: *जिनके स्मरण से हृदय में शुभ कम्पन होती है, ऐसे विश्व के स्वामी **सुवीर** (९५८) नाम से विख्यात हैं। भगवान् के भुजबंध अति कल्याणकारी हैं, अतः पवित्र भगवान् **रुचिरांगद** (९५९) हैं।*

करें उद्गम जीव हरि <u>जनन</u> । हैं <u>जनजन्मादि</u> हेतु जन्म जन ।।
हैं वरण्डक वज्र से युक्त । भीम करें रिपु जीवन मुक्त ।।(३४७)

भावार्थ: *जीवों में जीव (प्राण) उद्गम (स्रोत) करने वाले प्रभु **जनन** (९६०) हैं। जीवों के जन्म का कारण भगवान् **जनजन्मादि** (९६१) हैं। शत्रुओं का जीवन मुक्त करने वाले भय रूप वज्र से सुशोभित हरि **भीम** (९६२) हैं।*

दे हरि नाम भय दुष्कर्मा । <u>भीमपराक्रम</u> हरि सुकर्मा ।।
हैं पंचभूत भूपति भगवन । <u>आधारनिलय</u> आधार भुवन ।।(३४८)

भावार्थ: *दुष्कर्मियों को भयभीत और सुकर्म करने वाले प्रभु **भीमपराक्रम** (९६३) हैं। पृथ्वी और पंच भूतों के स्वामी जो संसार का आधार हैं, वह भगवान् **आधारनिलय** (९६४) हैं।*

करें काल प्रलय धयन जन । दें प्रभु <u>अधात</u> निर्मोचन ।।
हैं पुष्प पुंज समान अनन्त । करें <u>पुष्पहास</u> नमन सब संत ।।(३४९)

भावार्थ: *प्रलय में जीवों का धयन (पान) कर उन्हें मोक्ष देने वाले प्रभु **अधात** (९६५) हैं। खिले हुए पुष्प के समान सौजन्यता प्रदान करने वाले भगवान् **पुष्पहास** (९६६) हैं जिन्हें सभी संत नमन करते हैं।*

है प्रकर्ष दिव्य भगवद्स्वरूप । <u>प्रजागर</u> प्रबुद्ध प्रारूप ।।
हैं हरि <u>ऊर्ध्वग</u> स्वशासक । हैं सत पालक <u>सत्पथाचारक</u> ।।(३५०)

भावार्थः *बुद्धिमान नियमित प्रभु का स्वरुप अत्यंत आकर्षक है, अतः वह* ***प्रजागर*** *(९६७) हैं। स्वशासक (जिनका कोई शासक नहीं) भगवान्* ***ऊध्र्वग*** *(९६८) हैं। सत्य का पालन करने वाले (सत्य पथ पर चलने वाले) हरि* ***सत्पथाचारक*** *(९६९) हैं।*

समर्थ दें जीवन बाद मरन । दिए प्राणद परीक्षित जीवन ।।
ओंकार नाम प्रणव आत्मा । करें पुण्यकर्म पण परमात्मा ।।(३५१)

भावार्थः *मृतक जीवों को जीवन देने में समर्थ, जिन्होंने परीक्षित को जीवन दान दिया (भगवान कृष्ण ने माँ उत्तरा के गर्भ में अश्वथामा के वज्र से रक्षा की), ऐसे प्रभु को* ***प्राणद*** *(९७०) कहकर सम्बोद्धित किया गया है। प्रभु के वाचक ओंकार का नाम* ***प्रणव*** *(९७१) है। पुन्यकर्मी प्रभु* ***पण*** *(९७२) हैं।*

निर्मल ज्ञानी परमार्थी । प्रमाण सुवित हैं वेदार्थी ।।
आश्रयदाता परम पुरुष । हैं प्राणनिलय अन्तः अरुष ।।(३५२)

भावार्थः *पवित्र, ज्ञानी, परमार्थी, वेदों के ज्ञाता एवं सुबुद्धि भगवान् को* ***प्रमाण*** *(९७३) कह कर सम्बोद्धित किया गया है। श्रेष्ठ पुरुषों के आश्रयदाता प्रभु जिनका अन्तः करण अति स्पष्ट है, वह प्रभु* ***प्राणनिलय*** *(९७४) हैं।*

अन्नपूर्णा पोषण कर्ता । प्राणभृत निर्वाहन कर्ता ।।
है समीर जीवन आधार । दें प्राणजीवन उपहार ।।(३५३)

भावार्थः *जीविका चलाने वाले* ***अन्नपूर्णा*** *(९७५) हैं। जीवों को जीविका देने वाले (निर्वाहन करने वाले) प्रभु को* ***प्राणभृत*** *(९७६) कहा गया है। वायु जीवन का आधार है, इसको (जीवों के लिए) उपहार स्वरुप देने वाले प्रभु* ***प्राणजीवन*** *(९७७) हैं।*

हैं हरि सत्यरूप ब्रह्म शिक्षक । तत्व तथ्य हैं सत परमार्थक ।।
जल नभ थल अग्नि वात तत्व । हैं तत्ववित्त ज्ञाता पंच तत्व ।।(३५४)

भावार्थ: *ब्रह्म की शिक्षा देने वाले* ***तत्व*** *(७९८) भगवान् तथ्य, सत्य और परमार्थ के स्वरुप हैं। जल, नभ, थल, अग्नि एवं वायु, ये पंच तत्व हैं, इनके ज्ञाता प्रभु* ***तत्ववित्त*** *(९७९) हैं।*

एक रूप प्रभु एक आत्मा । <u>एकात्मा</u> पूज्य परमात्मा ।।
हैं नियंत्रक जन्म और अंत । <u>जन्ममृत्युजरातिग</u> नियंत ।।(३५५)

भावार्थ: *परम पूज्य प्रभु का एक ही रूप और एक ही आत्मा है, अतः वह* ***एकात्मा*** *(९८०) हैं। जन्म और मृत्यु को नियंत्रित करने वाले भगवान् को* ***जन्ममृत्युजरातिग*** *(९८१) नाम से पुकारा गया है।*

भू भुव स्व चतुर्वेद के मूल । हरें भूर्भुवःस्वस्तरु शूल ।।
निर्मोचक भव सागर तारक । तार हरि हैं शान्ति दायक ।।(३५६)

भावार्थ: *चारों वेदों के सार, भू, भुव एवं स्व (ये तीन शब्द), और दुःखों को दूर करने वाले* ***भूर्भुवःस्वस्तरु*** *(९८२) हैं। भव सागर पार कर मोक्ष एवं शान्ति देने वाले भगवान्* ***तार*** *(९८३) हैं।*

दें <u>सविता</u> जन्म भू आत्मा । <u>प्रपितामह</u> पूर्वज ब्रह्मा ।।
हैं <u>यज्ञ</u> समर्पित हवि यज्ञ । हैं <u>यज्ञपति</u> यज्ञ पालक प्रज्ञ ।।(३५७)

भावार्थ: *भू जीवों को उत्पन्न करने वाले* ***सविता*** *(९८४) हैं। ब्रहदेव के (भी) पूर्वज* ***प्रपितामह*** *(९८५) हैं। (उनकी आयु कोई नहीं जानता, अति पुरातन हैं)।* ***यज्ञ*** *(९८६) (अग्नि को) यज्ञ को समर्पित हवि हैं। बुद्धिमान यज्ञ पालक प्रभु* ***यज्ञपति*** *(९८७) हैं।*

दें फल शुभ यज्ञ <u>यज्वा</u> शुभांग । हैं अंग यज्ञ हवि आदि <u>यज्ञांग</u> ।।
दें वरदान हों पूर्ण मन्मन् । करें कल्याण हरि <u>यज्ञवाहन</u> ।।(३५८)

भावार्थ: *यज्ञ का शुभ फल देने वाले सुन्दर अंग वाले* ***यज्वा*** *(९८८) हैं। यज्ञ के अंग हवि आदि* ***यज्ञांग*** *(९८९) हैं।* ***यज्ञवाहन*** *(९९०) प्रभु कल्याण करते हैं और वरदान देकर कामनाओं को पूर्ण करते हैं।*

हैं यज्ञ रक्षक हरि <u>यज्ञभृत</u> । स्वीकारें हवि यज्ञ <u>यज्ञकृत</u> ।।
लें यज्ञ हव्य <u>यज्ञभुक</u> आहुति । <u>यज्ञसाधन</u> हैं पथ हरि प्राप्ति ।।(३५९)

*भावार्थ: यज्ञ की रक्षा करते हैं, अतः **यज्ञभृत** (९९१) नाम से जाने जाते हैं। यज्ञ अग्नि आहुति को अंगीकार करने वाले भगवान् **यज्ञकृत** (९९२) हैं। यज्ञ आहुति स्वीकार करने वाले प्रभु को **यज्ञभुक** (९९३) नाम से भी जाना जाता है। प्रभु की प्राप्ति के पथ (यज्ञ) को **यज्ञसाधन** (९९४) नाम से सम्बोद्धित किया जाता है।*

यज्ञ अंतहरि शुभ फल दाता । हरि <u>यज्ञान्तकृत</u> मुक्ति दाता ।।
<u>यज्ञगुह्य</u> गुप्त ज्ञान के ज्ञाता । <u>अन्न</u> प्रभु हैं जीवन दाता ।।(३६०)

भावार्थ: *यज्ञ के समापन पर जो शुभ फल देकर मुक्ति प्रदान करते हैं, वह प्रभु **यज्ञान्तकृत** (९९५) हैं। गुप्त ज्ञान (ब्रह्म ज्ञान) के गुरु **यज्ञगुह्य** (९९६) हैं। जीवों के आधार भगवान् को **अन्न** (९९७) नाम से जग ने पुकारा है।*

भोगें अन्न अन्नाद हरि दिव्य । वेद ज्ञानी आत्मयोनि अव्यय ।।
लेते जन्म स्वयंजात स्व- मन्मन् । करें लीन प्रलय वैखान जन ।।(३६१)

भावार्थ: *अन्न का भोग करने वाले दिव्य प्रभु **अन्नाद** (९९८) हैं। वेद ज्ञानी भगवान् **आत्मयोनि** (९९९) हैं। स्व-इच्छा से जन्म लेने वाले **स्वयंजात** (१०००) हैं। प्रलय में प्राणियों को (स्वयं में) लीन करने वाले **वैखान** (१००१) हैं।*

शांतिदूत ईश त्रिलोक । <u>सामगायन</u> हरि वेद गायक ।।
सुत देवकी देवकीनंदन । रचें विश्व <u>स्त्रष्टा</u> भगवन ।।(३६२)

भावार्थ: *त्रिलोक स्वामी शांतिदूत प्रभु वेदों का गान करते हैं, अतः **सामगायन** (१००२) हैं। देवकी के पुत्र देवकीनंदन विश्व के रचने वाले प्रभु **स्त्रष्टा** (१००३) हैं।*

भूपति <u>क्षितीश</u> राम भगवन । करें नाश अघ पापनाशन ।।
करें पाञ्चजन्य शंख धारन । हैं शङ्खभृत प्रसिद्ध भुवन ।।(३६३)

भावार्थ: *पृथ्वी के स्वामी राम **क्षितीश** (१००४) हैं। प्रभु **पापनाशन** (१००५) पापों का अंत करते हैं। पाञ्चजन्य शंख धारी भगवान् को जग **शङ्खभृत** (१००६) पुकारता है।*

<u>नन्दकी</u> नन्दक कृप धारी । मोक्ष दाता <u>चक्री</u> अघहारी ।।
हैं नाम कोटि कोटि भगवन । कुछ और कहें ग्रन्थ सनातन ।।
हैं <u>शार्ङ्गधन्वा</u> धनुषधारी । हैं <u>गदाधर</u> कौमोदकधारी ।।(३६४)

भावार्थ: *नन्दक नाम की तलवार को धारण करने वाले भगवान् **नन्दकी** (१००७) हैं। पाप हरण कर मोक्ष देने वाले **चक्री** (१००८) हैं (सुदर्शन चक्रधारी होने के कारण भी उन्हें चक्री सम्बोधित किया जाता है)।*

इनके अतिरिक्त भी भगवान के करोड़ों नाम हैं जिनका सनातन ग्रंथों में वर्णित है|

*धनुष (शार्ङ्ग) धारी होने के कारण उन्हें **शार्ङ्गधन्वा** (क) कहा जाता है। कौमोदकी नामक गदा को धारण करने वाले हरि **गदाधर** (ख) हैं।*

धारी रथाङ्ग चक्र सदा । <u>रथाङ्गपानी</u> हरें आपदा ।।
अक्षोभ्य अभयी रिपु अस्त्र । <u>सर्वप्रहरणायुध</u> शस्त्रेश ।।(३६५)

भावार्थ: *रथाङ्ग चक्र को सदैव धारण करने वाले प्रभु **रथाङ्गपानी** (ग) (भक्तों के) समस्त कष्ट दूर करते हैं। शत्रुओं के शस्त्रों से जो अभयी हैं (शत्रुओं के शस्त्रों से जिन्हें डर नहीं लगता), वह भगवान् **अक्षोभ्य** (घ) हैं। (सब प्रकार के) शस्त्रों के स्वामी प्रभु **सर्वप्रहरणायुध** (ङ) हैं।*

श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् में उल्लेखित भगवान् विष्णु के सहस्त्र नामों की व्याख्या समाप्त हुई।

।।फल श्रुति।।

जपहिं विष्णुसहस्त्रनाम हिय
लक्ष्य उच्च उपांशु मानसरूप ।
इहलोक सुख परलोक मोक्ष
हो ययाति नहुष सम सुरूप ।।
भवसागर मुक्त परमगति पा
जीवन बने सुमंगल सतरूप ।
हो उदित ब्रह्म बोध शुभ कर्म
क्षत्रिय बनें अर्जुन अनुरूप ।।(क)

भावार्थ: *उच्च, उपांशु, मानसरूप (तीन प्रकार के जप) को लक्ष्य बनाकर जब भगवान् विष्णुसहस्त्रनाम का जप किया जाता है तो ययाति, नहुष (इत्यादि महापुरुषों) के समान इस लोक (इस जीवन) में सुख और परलोक (मरणोपरांत) में मोक्ष की प्राप्ति होती है। सत्यरूप होकर (नर नारियों का) जीवन मंगलमय होता है और भवसागर से मुक्त होकर जीव परमगति को प्राप्त होता है। ब्राह्मणों के शुभ कर्म उदित होते हैं और उन्हें ब्रह्म का बोध होता है। क्षत्रियों को अर्जुन जैसा क्षत्रित्व प्राप्त होता है (भगवान् कृष्ण स्वयं सारथी रूप में मिलते हैं)।*

धन बढ़े वैश्य हो कुबेर सम
हो परम सुखी हिय अति हर्षत ।
होए वृद्धि ज्ञान बनें धर्मार्थी
हों मनोरथ पूर्ण इच्छा धर्मस्त ।।
पाएं फल समान पुत्रेष्ठि यज्ञ
वर पाएं तस संतति सकृत ।
हो पावन चित्त भजे जब प्रभु
बनें यशी समाज प्रतिष्ठित ।।(ख)

भावार्थ: *वैश्य को कुबेर समान धन मिलता है और कर्मीओं को परम सुख की प्राप्ति होने से उनका हृदय हर्षित होता है। धर्मार्थीओं को धर्म ज्ञान की वृद्धि होती है और गृहस्थों की इच्छित कामनाएं पूर्ण होती हैं। संतान प्राप्ति इच्छुक युगलों को*

पुत्रेष्ठियज्ञ यज्ञ समान फल मिलता है, और तुरंत संतति प्राप्त होती है। भगवान् वासुदेव (श्रीविष्णुसहस्त्रनाम) के जप से हृदय को शान्ति मिलती है, यश के साथ कुल में प्रधानता (उच्च पद) की प्राप्ति होती है।

हों भयहीन ओजस्वी निरोगी
पाएं गुण बल योग और तप ।
अघविहीन लीन सनातन ब्रह्म
हों शुद्ध चित्त मुक्त सब संतप ।।
कहें सब ग्रन्थ बन भक्त नियंत
वृत्त जन्म मरण तब नहीं तपत ।
पाएं शुद्ध आत्मा सुख समृद्धि
धन यश धीर क्षमा नीरवत ।।(ग)

भावार्थ: *इसका (विष्णुसहस्त्रनाम) जप करने से जीव को भय से मुक्ति मिलती है, वह ओजस्वी एवं निरोगी होता है। बल, योग (साधना), तप (सामर्थ्य) और सगुणों की वृद्धि होती है। पाप से रहित होकर उन्हें पापों से मुक्ति मिलती है। मन पवित्र होकर सनातन ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करता है। ग्रन्थ ऐसा कहते हैं कि इसके जप से भगवान् रोग एवं जन्म मरण के कष्ट को दूर कर आत्मा को सुख, समृद्धि, तथा धन, यश, धैर्यता, और क्षमा (दुष्कर्मों से) की प्राप्ति कराते हैं।*

हो क्रोधजित दोषमुक्त बुद्धि
धर्म ज्ञान सम साधक पावत ।
पाठ सों विष्णु सहस्त्रनाम
सुर असुर नर गन्धर्व वंशवत ।।
हों सदाचारी धर्म अनुसरणी
प्रभु कृपा सों हो जीवन उच्चत ।
तर्क वितर्क योग ज्ञान कर्म
सब गुण हैं परमेश्वर नियंत्रित ।।(घ)

भावार्थ: *इसका (विष्णुसहस्त्रनाम) जप करने से क्रोध का विनाश होता है (जीव क्रोध को जीत लेता है), बुद्धि दोषमुक्त होती है तथा साधकों के समान धर्म ज्ञान की प्राप्ति*

होती है। विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करने से सभी सुर, असुर, प्राणी, गन्धर्व, आदि सभी योनिओं के वंशधर, धर्म में मन को स्थिर करने वाले तथा धर्म का आचरण करने वाले होते हैं, तथा तथा प्रभु की कृपा से ही जीवन उच्चतम पद को प्राप्त होता है। तर्क, वितर्क, योग, कर्म, ज्ञान आदि सभी गुण उन्हीं से नियंत्रित होते हैं (उन्हीं की कृपा से प्राप्त होते हैं)।

हैं एक मात्र हरि महत्वपूर्ण
हैं अक्षय व्यापी प्रभु अजन्म ।
भजहिं विष्णु सहस्त्रनाम जब
पूर्ण हों कामना इहि जन्म ।।
ना हो भाव पराभव भक्तजन
भजें सदा जो विश्वेश्वर अनंत ।
हैं अजन्मा पुण्डरीकाक्ष ईश
जप मन हिय धारण नियंत ।। (ण)

भावार्थः *एकमात्र प्रभु ही महत्वस्वरूप हैं। वह सर्व भूतात्मा, अजन्मा और अक्षय हैं। इसका (विष्णुसहस्त्रनाम) जप करने से इस जन्म में इक्षित सुख की प्राप्ति होती है। विश्व के स्वामी अनंत का भजन करने से कभी पराभव (तिरस्कार) का भाव नहीं होता। हे मन हृदय में ऐसे अजन्मा पुण्डरीकाक्ष को हृदय में धारण कर भज।*

महर्षि भगवान् श्री वेद व्यास जी द्वारा मूल संस्कृत ग्रन्थ
श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् का हिंदी काव्य सम्पूर्ण

हरिः ॐ तत्सत ! हरिः ॐ तत्सत ! हरिः ॐ तत्सत !

अथ श्री विष्णुसूक्तम्

करूँ मैं पराक्रम वर्णन । विष्णु अति पूजनीय भगवन ।।
किए वह सृजन यह त्रिभुवन । माध्यम त्रिपद गति संपन्न ।। (१)

भावार्थ: मैं भगवान् विष्णु, जो अति पूजनीय हैं, उनके पराक्रम का वर्णन करता हूँ। उन्होंने गति संपन्न तीन पग के माध्यम से त्रिलोकों की रचना की।

किए सृजित मेलस्थान भगवन । करें वास जहां आत्मा पावन ।।
हैं वह चर अचर व्यापक भुवन । प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष हैं निःसीमन् ।। (२)

भावार्थ: भगवान् विष्णु ने विशाल मेलस्थान का निर्माण किया, जहां पवित्र आत्माओं का वास है। वह विश्व में व्यापक चर एवं अचर हैं। वही प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष स्वरुप में अनंत हैं।

हैं उन्हीं से सत रज तम गुन । वही सृजक यह विशेष त्रिगुन ।।
इस धूल धूसरित समस्त भुवन । हैं सर्वव्यापक विष्णु भगवन ।। (३)

भावार्थ: उन्हीं से सत, रज एवं तम गुण हैं। वही इन त्रिगुणों के सृजक हैं। इस धुल धूसरित (दूषित) समस्त विश्व में भगवान् विष्णु सर्व-व्यापक हैं।

देख न सकें उन्हें लौकिन नयन । दुर्लभ दर्शन ऐहिक भूजन ।।
योग ध्यान से संभव दर्शन । कहे यही सब ग्रन्थ सनातन ।। (४)

भावार्थ: उन्हें सांसारिक नेत्रों से नहीं देखा जा सकता। लौकिक मनुष्यों को उनके दर्शन दुर्लभ हैं। वह योग एवं ध्यान से ही दृष्टिगोचर होते हैं, ऐसा सब सनातन ग्रन्थ कहते हैं।

करें निवास अंदर सब भूजन । जो सृजित हेतु विष्णु भगवन ।।
करें प्रदान वही जीवन । हैं वही आधार इस त्रिभुवन ।। (५)

भावार्थ: भगवान् विष्णु द्वारा निर्मित इस संसार में ही सभी जीव के अंदर निवास करते हैं। वही जीवन प्रदान करने वाले इस त्रिलोक के आधार हैं।

हैं मानित सुर असुर भूजन । हैं मध्य मृग सिंह निरूपन ।।
हों भीत जैसे मृग केशिन् । सम हों भीरु हरि से दुर्जन ।। (६)

भावार्थ: वह (भगवान् विष्णु) सभी नर, सुर एवं असुरों के पूज्य हैं। वह हिरणों के मध्य सिंह स्वरुप हैं। जिस प्रकार हिरन सिंह से भयभीत रहता है, उसी प्रकार दुष्ट लोग हरि से भयभीत रहते हैं।

हैं वह धर्मीयों के भगवन । करें न्याय सत असत कर्म जन ।।
हैं सच्चिदानंद नारायन । करें अभय प्रिय संत भक्तगन ।। (७)

भावार्थ: वही धर्मावलम्बीयों (पुरुषों एवं नारियों) के ईश्वर है। वही प्राणियों के अच्छे और बुरे कर्मों का न्याय करने वाले हैं। वही परम आनंद देने वाले प्रभु हैं जो अपने प्रिय संत एवं भक्तों को निर्भय कर देते हैं।

कहें महर्षि दीर्घतमस महन । सुनो प्रभामंडल भगवन ।।
करो उन्हें सदा सतत नमन । किए विस्तार जो त्रिपद भुवन ।। (८)

भावार्थ: महात्मा महर्षि दीर्घतमस कहते हैं, 'प्रभु के महात्म्य को सुनो। अपने तीन पगों से जिन्होंने जग का विस्तार किया, उन्हें नमन करो।'

हैं अविनाशी हरि नारायन । करें धारण शीश त्रिभुवन ।।
सब धरा पाताल और गगन । करें पालन हरि निर्देशन ।। (९)

भावार्थ: अविनाशी प्रभु श्री विष्णु तीनों भुवनों (पृथ्वी, आकाश एवं पाताल) को अपने शीश पर धारण करते हैं। समस्त पृथ्वी, आकाश एवं पाताल को प्रभु निर्देशित करते हैं (अर्थात उनकी कृपा से ही इनका निर्वाह होता है)।

जो करे ध्यान हरि नारायन । हो आंनदित सुभग इस भुवन ।।
हो ओजस्वित समान द्युवन् । फैले यश समस्त दिशा देशन ।। (१०)

भावार्थ: भगवान् विष्णु के ध्यान से आनंद एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है। (जो भगवान् विष्णु की स्तुति करता है) सूर्य समान ओजस्वित होकर वह हर देश और दिशा में कीर्तिमान होता है।

पाऊँ हरि निवास है मन्मन् । हो मुक्ति इस चक्र जन्म मरन ।।
ले सकूं मधुसरोवर शरन । करूँ दर्शन सदा नारायन ।। (११)

भावार्थ: जन्म मृत्यु के चक्र से छुटकारा पाकर मैं विष्णु लोक में निवास करूँ, ऐसी इच्छा है। (प्रभु धाम में) मधुसरोवर के निकट आश्रय पा भगवान् विष्णु के सदा दर्शन करूँ।

कर सदैव ध्यान श्री भगवन । सम वर्णित वेद हो जीवन ।।
पाएं तब नर नारि निर्मोचन । सुख शान्ति आनंद उनके मन ।। (१२)

भावार्थ: प्रभु का ध्यान करते हुए वेदों में वर्णित विधि के अनुसार जीवन बिताओ। तब हृदय में सुख, शान्ति एवं आनंद प्राप्त होगा और प्राणी मोक्ष की प्राप्ति करेंगे।

समझो हरि भ्राता भूजन । नहीं शुभ चिंतक अन्य देवन ।।
पाएं अमृत उनके संकल्पन । हो मुक्ति आवागमन भुवन ।। (१३)

भावार्थ: भगवान् विष्णु ही प्राणियों के भ्राता हैं। उनके समान हितकारी अन्य देवता नहीं है। उनके संकल्प से अमृत की प्राप्ति हो जाती है जिससे संसार में आवागमन से मुक्ति मिल जाती है।

हे शास्त्रवेता प्रमत जन । चाहो यदि पाएं सुख पावन ।।
करो स्तुति विष्णु भगवन । हैं वही आधार लोक व्योमन् ।। (१४)

भावार्थ: हे शास्त्रों के ज्ञाता बुद्धिमान पुरुषों, यदि आप परमानंद प्राप्त करना चाहते हैं तो हरि विष्णु की स्तुति करो, क्योंकि वही स्वर्गलोक के आधार हैं।

जैसे गौ माता श्रृंग किरन । करे प्रकाशित पथ त्रिभुवन ।।
सलक्षण उत्कृष्ट हरि वर्पन् । करे प्रकाशित जन जीवन ।। (१५)

भावार्थ: जिस प्रकार गौ माँ के सींग समस्त लोकों के मार्ग को प्रकाशित करते हैं उसी प्रकार भगवान् का उत्कृष्ट रूप प्राणियों के जीवन को प्रकाशित करता है।

हैं विष्णु देव वासी गगन । है यह शब्द विष-धातु निष्पन्न ।।
दें ज्ञान प्राज्ञ संत और महन । अर्थ इसका सर्वज्ञ भगवन ।। (१६)

भावार्थ: भगवान् विष्णु एक आकाश वासी देव हैं। यह शब्द विष-धातु से उत्पन्न है जिसका अर्थ ज्ञानी संत और महात्मा 'सर्वज्ञ प्रभु' बताते हैं।

तन अधिष्ठाता हैं नारायन । वाहन हैं गरुड़ खगेश्वरन ।।
है वर्णित पुराण बामन । विक्रम और उरुक्रम नामन ।। (१७)

भावार्थ: भगवान् विष्णु ही शरीर के स्वामी हैं। उनका वाहन खगों के स्वामी गरुड़ हैं। बामन पुराण में उन्हें विक्रम एवं उरुक्रम नाम दिया है।

है वास मधुसरोवर भगवन । करें सब देव वहां विचरन ।।
लिए जब अवतार रूप बामन । त्रिपद से नापे त्रिभुवन ।।
प्रथम पद था लोक भुवन । द्वितीय पद था लोक गगन ।। (१८)
है स्थित तृतीय पग भगवन । द्युलोकस्थ सूर्यमण्डल गगन ।।
हैं सूर्य प्रतिरूप नारायन । दें वही ऊर्जा त्रिभुवन ।। (१९)

भावार्थ: भगवान् का वास मधुसरोवर है। वहां सभी देवता विचरण करते रहते हैं। जब प्रभु ने बामन रूप से अवतार लिया तब तीनों लोकों को तीन पग से नाप लिया। प्रभु का प्रथम पग पृथ्वी लोक पर था, द्वितीय पग अंतरिक्ष लोक में था। उनका तृतीय पग

सूर्य के द्युलोकस्थ सूर्यमण्डल में स्थित था। सूर्य देव भगवान् विष्णु के ही प्रतिरूप हैं। वही (सूर्य रूप में) तीनों लोकों को ऊर्जा प्रदान करते हैं।

हैं मित्र इंद्रदेव के भगवन। करें रक्षा वह मरुत मरुद्गन ।।
हैं हेतु गर्भाधान भूजन। परोपकारी शरणागत जन ।। (२०)

भावार्थ: भगवान् इंद्रदेव के मित्र हैं। मरुत एवं मरुद्गण उनसे रक्षित हैं। प्राणियों के गर्भाधान के वही कारण हैं। शरणागतों की रक्षा करने वाले वह (अति) परोपकारी हैं।

हैं आधार चर अचर जीवन। हैं वह प्रिय ब्राह्मणगन ।।
हुए उत्पन्न कमल उनके तन। निकलीं गंगा उनके ही चरन ।। (२१)

भावार्थ: ब्राह्मणों के प्रिय चर एवं अचर जीवों के वह (विष्णु भगवान्) आधार हैं। उनके तन से कमल उत्पन्न हुए हैं। उन्हीं के चरणों से गंगा (माँ) निकली हैं।

हैं स्वेच्छाचारी श्री भगवन। करें वह पूर्ण सबके मन्मन् ।।
नमो नमो नियंत नारायन। हरो सब क्लेश आए शरन ।। (२२)

भावार्थ: अपनी इच्छा से भ्रमण करने वाले (प्रभु) सबकी मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं। हे प्रभु हम आपको नमन करते हैं। हम आपकी शरण में आ गए हैं, हमारे सभी कष्टों को दूर कीजिए।

गाएं विष्णु सूक्त हम भूजन। यह षट्मन्त्र करे शुभ सब जन ।।
करें वर्षा आनंद की भगवन। जो गाए यह महात्म्य नारायन ।। (२३)

भावार्थ: हम विष्णु सूक्त के छै सूक्तों (के हिंदी काव्यानुवाद) का गायन करते हैं जो सभी प्राणियों के लिए शुभ हैं। जो भी विष्णु भगवान् की इस महिमा का गायन करेंगे उनके जीवन में भगवान् आनंद की वर्षा करेंगे।

अथ श्री मित्रावरुणसूक्तम्

देखूं शाश्वत मण्डल द्युवन् । घिरा हुआ सब ओर जह्नन् ।।
मध्य जहां सहस्त्रों किरन । है स्थित एकदेव श्रेष्ठ वर्पन् ।।(२४)

भावार्थ: मैं सब ओर से जल से घिरे हुए अविनाशी सूर्यमण्डल को देखता हूँ, जहां सहस्त्रों किरणों के मध्य एकदेव श्रेष्ठ मूर्ति रूप में स्थापित है।

देखूं मित्र वरुण भगवन । हैं स्थित दोनों मण्डल द्युवन् ।।
हैं दोनों सूर्यदेव वर्पन् । घटक द्वादस इनके निरूपन ।। (२५)

भावार्थ: मैं भगवान मित्र एवं वरुण दोनों को सूर्य मंडल में स्थित देखता हूँ। यह दोनों सूर्यदेव के द्वादस रूपों के ही भाग हैं।

गाएं इनके महिमा मंडन । हरि मित्र और वरुण महन ।।
यही हेतु वर्षा इस भुवन । कारण प्रकाश सूर्य किरन ।।(२६)

भावार्थ: हम महान भगवान् मित्र एवं वरुण के ऐश्वर्य का गान करते हैं जिनके कारण ही पृथ्वी पर वर्षा होती है एवं सूर्य की किरणें प्रकाशित होती हैं।

करें स्तुति हम मित्र भगवन । रंक बने नृप जिनके पूजन ।।
दें विजय वरुण आशीर्वचन ।पाएं यश भक्त समस्त भुवन ।।(२७)

भावार्थ: हम भगवान् मित्र की स्तुति करते हैं जिनकी भक्ति से रंक भी राजा बन जाते हैं। वरुण के आशीर्वाद से विजय मिलाती है और भक्त समस्त संसार में यश प्राप्ति करते हैं।

करें यही धरा शीश धारन ।दोनों मित्र व् वरुण भगवन ।।
करें वह माता गौ पालन । हेतु औषधि जनि और वर्धन ।।(२८)

भावार्थ: यही दोनों देव मित्र एवं वरुण पृथ्वी को धारण करते हैं। यही गौ माँ का पालन करते हैं। यही औषिधियाँ की उत्पत्ति और वर्धन के हेतु हैं।

होता सुपथ रथ संचालन । दें निर्देश तुरग जब भगवन ।।
हैं यह यज्ञ घृत स्वामिन । पाएं फल पुण्य करें अर्पन ।।(२९)

भावार्थ: (मित्र एवं वरुण) जब यह अश्वों को निर्देश देते हैं तो रथ सुमार्ग पर संचालित होता है। यह यज्ञ में घृत के स्वामी हैं, जिसके अर्पण से पुण्य फलों की प्राप्ति होती है।

दें यह जब जलदेव निर्देशन । हो प्रवाहित जल तब तटिन ।।
है यह आधार जन जीवन । संभव सुख कृपा इन भगवन ।।(३०)

भावार्थ: यह जब जलदेव को निर्देशित करते हैं तब जल नदियों में बहता है। (जल) यही सभी प्राणियों के जीवन का आधार है। इन्हीं देवताओं की कृपा से सुख प्राप्त होता है।

करें रक्षा मित्र वरुण भगवन । जैसे करें यजुमंत्र सुकर्मन ।।
हैं यही हेतु उत्पन्न अन्न । होता जिससे जीवन पालन ।।(३१)

भावार्थ: मित्र एवं वरुण देव उसी प्रकार (अपने भक्तों की) रक्षा करते हैं जैसे यज्ञ करने वाले की यजु मन्त्र रक्षा करते हैं। यही अन्न की उत्पत्ति के कारण हैं जिससे जीवन का पोषण होता है।

मित्र और वरुण द्वि भगवन । करें रक्षा मध्य यज्ञ भक्तन ।
करें यही यज्ञीय का पालन । करें यह यज्ञ स्तंभ को धारन ।।(३२)

भावार्थ: मित्र एवं वरुण, दो देव, यज्ञ के मध्य में (यज्ञीय की) रक्षा करते हैं। यजमान (यज्ञीय) के यही पालनहार हैं जो यज्ञ के स्तम्भों को धारण करते हैं (यज्ञ के फल इन्हीं के कारणों से प्राप्त होते हैं)।

हैं यह रहित दंभ और उष्मन् । है अति उदार हृदय भगवन ।।
सहस्त्रों यज्ञशाला चरन । करें धारण बिन कोई यत्न ।।(३३)

भावार्थ: (मित्र एवं वरुण) यह क्रोध और दम्भ से रहित हृदय से अति उदार प्रभु हैं। सहस्त्रों यज्ञशाला के स्तम्भों को बिना किसी यत्न के धारण किए रहते हैं।

रथ मित्र एवं वरुण भगवन । जड़ित मणि हैं निर्मित स्वर्न ।
आंतरिक सजावट इनके चरन । सुशोभित रत्न और कंचन ।।(३४)

भावार्थ: मित्र एवं वरुण (देवों) के रथ मणि जड़ित स्वर्ण से निर्मित हैं। इनके रथों के स्तम्भ एवं आंतरिक सजावट भी स्वर्ण एवं मणियों से सुशोभित की गई है।

प्रभासित सम विद्युत् गगन । करें भ्रमण वह त्रिभुवन ।।
करें वह सर्वत्र सोम वितरन । सुर नर पूजित स्थान पावन ।।(३५)

भावार्थ: आकाश में बिजली की तरह चमकते हुए (यह रथ) वह तीनों लोकों का भ्रमण करते है। देव एवं प्राणियों से पूजित सब पवित्र स्थानों में अमृत वितरण करते हैं (अमृत वर्षा करते हैं)।

काल पूर्व उदय द्युवन् । करें यह यज्ञ स्थली भ्रमन ।
दें अखंडनीय भू दर्शन ।कहे श्रुति अदिति प्रवर्तन ।।(३६)

भावार्थ: सूर्य उदय से पूर्व (उषा काल में) यह यज्ञ स्थलों का भ्रमण करते हैं। वहां अखंडनीय पृथ्वी पर अपने दर्शन देते हैं जिसे श्रुति अदिति भ्रमण कहती है।

करते भ्रमण भू दें वह दर्शन । सभी प्रजाति निवासी भुवन ।।
कहें प्राज्ञ इसे दिति दर्शन । है अति शुभ सुर असुर भूजन ।।
रथ उनका सम मृग निरूपन । करे उज्जवलित सम रवि किरन ।।(३७)

भावार्थ: (दोनों देव) समस्त भू मंडल पर निवासी प्रजातियों को दर्शन देते हैं, जिसे बुद्धिमान दिति दर्शन कहते हैं। यह सुर, असुर एवं प्राणियों के लिए अति शुभ है। हिरण के रूप समान आपका रथ सूर्य की किरण के समान चमकता है।

हे दानशील कर्ता जग पालन । मित्र और वरुण प्रभु महन ।।
त्राहि त्राहि आए हम शरन । दो हमें ऐश्वर्य और धन ।।(३८)

भावार्थ: हे जगत का पालन करने वाले दानशील महान मित्र एवं वरुण देव, हम आपके शरणागत हैं। हमारी रक्षा कीजिए, रक्षा कीजिए। हमें धन-धान्य एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति कराइए।

दो वर पाएं विजय द्वेषन ।हो रहित कष्ट सुखी जीवन ।।
हो सर्वानंद हमें इस भुवन । मृत्यु बाद पाएं निर्मोचन ।।(३९)

भावार्थ: (हे मित्र एवं वरुण देव) आप हमें वरदान दें कि हम अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करें। हमारा जीवन कष्टों से रहित सुखी हो। इस लोक में सर्व प्रकार शुभ मंगल हो और मृत्यु होने पर मोक्ष की प्राप्ति करें।

शब्द वरुण वृधातु उत्पन्न ।कर निरोध ढके जो मेघ गगन ।।
करे जो रात्रि को नियंत्रन । करते हुए स्वच्छंद नभ विचरन ।।(४०)

भावार्थ: वृधातु शब्द से उत्पन्न वरुण का अर्थ है जो निरोध कर मेघों को आकाश में ढक दें। रात्रि का नियंत्रण करने वाले (वरुण) देव आकाश में स्वतंत्र रूप से विचरण करते हैं।

करो रक्षा हमारी मित्र भगवन ।आप नियंत्रक दिन दें जीवन ।।
आप करें वर्षा नियंत्रन । हो फलित कृषि उपजे अन्न ।।(४१)

भावार्थ: दिन के नियंत्रक जीवन देने वाले मित्र देव हमारी रक्षा करो। आप वर्षा को नियंत्रित करते हैं जिससे कृषि फलित होती है और अन्न उत्पन्न होता है।

मित्र व् वरुण हैं रवि वर्पन् । इनकी कृपा सों रवि प्रसन्न ।।
हो निरोगी कंचन सम तन । जब पाएं इनके आशीर्वचन ।।(४२)

भावार्थ: मित्र एवं वरुण (दोनों ही देव) सूर्यदेव के ही स्वरुप हैं, इनकी कृपा से सूर्यदेव प्रश्न्ना होते हैं। (इन दोनों देवों के) इनके आशीर्वाद से शरीर निरोगी होकर स्वर्ण समान बनता है।

श्री नारायण आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे ॥

जो ध्यावै फल पावै, दुख बिनसे मन का ।
सुख संपत्ति घर आवै, कष्ट मिटे तन का ॥
ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे ॥

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं मैं जिसकी ॥
ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे ॥

तुम पूरन परमात्मा, तुम अंतरयामी ॥
पारब्रह्म परेमश्वर, तुम सबके स्वामी ॥
ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे ॥
तुम करुणा के सागर तुम पालनकर्ता ।

मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥
ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे ॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति ॥
ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे ॥

दीनबंधु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे ।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥
ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे ॥

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ॥
ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे ॥

तन मन धन और संपत्ति, सब कुछ है तेरा ।
तेरा तुझ को अर्पण क्या लागे मेरा ॥
ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे ॥
जगदीश्वरजी की आरती जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावे ॥
ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे ॥

श्री राम कथा संस्थान उद्देश्य

- श्री राम कथा संस्थान भगवान् स्वामी श्री रामानंद जी महाराज (१४वीं शताब्दी) की शिक्षाओं पर आधारित एक सनातन वैष्णव धार्मिक संस्था है।
- श्री संस्थान का सिद्धांत धर्म, जाति, लिंग एवं नैतिक पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभाव रहित है। 'हरि को भजे सो हरि को होई' संस्थान का मूल मन्त्र है।
- श्री संस्थान का मानना है कि शुद्ध हृदय एवं निःस्वार्थ भाव से भक्ति ईश्वर को अति प्रिय है। सभी प्रभु-भक्त एक दूसरे के भाई बहन हैं।
- ब्रह्म मनोभाव: भगवान् श्री राम, माता सीता एवं उनके विविध अवतार ही सर्वोच्च ब्रह्म हैं। वह सर्व-व्याप्त एवं विश्व के सरंक्षक हैं।
- आत्मा मनोभाव: आत्मा का अस्तित्व सर्वोच्च ब्रह्म के परमानंद पर निर्भर है। आत्मा को सर्वोच्च ब्रह्म ही निर्देशित एवं प्रबुद्ध करते हैं। श्री राम, माता सीता एवं उनके अवतार ही जीवन का अंतिम उद्देश्य मोक्ष दिलाने में समर्थ हैं।
- माया मनोभाव: माया प्रकृति के तीन गुण (सत, रज और तमस) के प्रभाव से प्राकट्य होती है। माया को सर्वोच्च ब्रह्म ही नियंत्रित करने में समर्थ हैं। सर्वोच्च ब्रह्म पर ध्यान केंद्र करने से माया का विनाश होता है, और जन्म-मृत्यु के चक्र से छुटकारा मिल मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- श्री संस्थान इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निरंतर सनातन धार्मिक पत्रिकाएं, पुस्तकें, पुस्तिकाएं, काव्य ग्रन्थ आदि की रचनाएं एवं प्रकाशन करती है। साथ ही, समय समय पर श्री राम एवं अन्य धार्मिक कथाओं के संयोजन का भी प्रयास करती रहती है।

कवि: डॉ यतेंद्र शर्मा

एक हिन्दू सनातन परिवार में जन्मे डॉ यतेंद्र शर्मा की रूचि बचपन से ही सनातन धर्म ग्रंथों का पठन पाठन एवं श्रवण में रही है। संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा उन्होंने अपने पितामह श्री भगवान् दास जी एवं नरवर संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सालिग्राम अग्निहोत्री जी से प्राप्त की और पांच वर्ष की आयु में महर्षि पाणिनि रचित संस्कृत व्याकरण कौमुदी को कंठस्थ किया। उन्होंने तकनीकी विश्वविद्यालय ग्राज़ ऑस्ट्रिया से रसायन तकनीकी में पी.अच्.डी की उपाधि विशिष्टता के साथ प्राप्त की। सन १९८९ से डॉ यतेंद्र शर्मा अपने परिवार सहित पर्थ ऑस्ट्रेलिया में निवास कर रहें हैं तथा पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के खनन उद्योग में कार्य रत हैं।

सन २०१६ में उन्होंने अपने कुछ धार्मिक मित्रों के साथ एक धार्मिक संस्था 'श्री राम कथा संस्थान पर्थ' की स्थापना की। यह संस्था श्री भगवान् स्वामी रामानंद जी महाराज (१४वीं- १५वीं शताब्दी) की शिक्षाओं से प्रभावित है, तथा समय समय पर गोस्वामी तुलसी दास जी रचित श्री राम चरित मानस एवं अन्य धार्मिक कथाओं का प्रवचन, सनातन धर्म के महान संतों, ऋषियों, माताओं का चरित्र वर्णन एवं धार्मिक कथाओं के संकलन में अपना योगदान करने का प्रयास करती है।

यह 'श्री विष्णु स्तुति सहस्त्रनाम', श्री' विष्णुसूक्त' एवं 'श्री मित्रावरुणसूक्त' हिंदी काव्य (भावार्थ सहित) डॉ यतेंद्र शर्मा द्वारा जन कल्याण हेतु इन पावन ग्रंथों को प्रचलित करने का एक प्रयास है।

महर्षि भगवान् वेद व्यास ने मूल काव्य 'श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्' की रचना संस्कृत श्लोकों में जन कल्याण हेतु कलियुग में आपदाओं से मुक्ति पाने का एक सुगम मार्ग के रूप में की थी। इसके महात्मय एवं जपने से चमत्कारिक शक्तियों द्वारा जन कल्याण कोई नया विषय नहीं है। अनगनित ग्रन्थ एवं ऋषियों ने इसके महात्मय के बारे में वर्णन किया है। 'श्री विष्णु सूक्त' एवं 'श्री मित्रावरुण सूक्त' के मूल संस्कृत श्लोकों की रचना इसी उद्देश्य हेतु महर्षि दीर्घतमस ने की।

संस्कृत लिपिवद्ध होने से उच्चारण में जन साधारण को कठिनाईओं का सामना करना पड़ता है। इस हिंदी काव्य के द्वारा मूल संस्कृत के ग्रंथों का यथोचित भावार्थ रखते हुए हिंदी काव्य में रचने का प्रयास किया है। कविता रूप में पाठ करने से स्वर उच्चारण पर अति आनंद आता है तथा तरंगों द्वारा भगवान् के प्रति आकर्षण बढ़ता है। यह ग्रन्थ सबके लिए अत्यंत उपयोगी है। भगवान् से आप सब के लिए सुख शांति और समृद्धि की याचना के साथ यह काव्य प्रस्तुत है। इस ग्रन्थ का एक वर्ष में यदि एक बार भी पठन, पाठन, श्रवण कर लिया जाए तो कलियुग से छुटकारा मिला जाएगा और भगवान विष्णु का आशीर्वाद प्राप्त होगा।